श्री माता बगलामुखी साधना

संकलन कर्ता : स्वामी श्री ब्रह्मविद्यानन्दगिरिजी

Computerized by: Swami Brahmavidyananda

Shri Sadguru Mahrshi Malayala swami Ashram,

Plot no. 48, Kalavathi nagar (New sunil nagar),

M.I.D.C. Solapur, (MH). Pin: 413006.

https://archive.org/details/@swami_brahmavidyananda । Email: aumhreemaum@gmail.com

विषय सूचिका

॥सद्गुरु प्रार्थना॥

ॐ ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं, द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्।

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं, भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥

"अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

देवताया दर्शनं च करुणा वरुणालयं।

सर्व सिद्धि प्रदातारं श्री गुरुं प्रणमाम्यहम्॥

वराभय करं नित्यं श्वेत पद्म निवासिनम्।

महाभय निहन्तारं गुरुदेवं नमाम्यहम् "॥

गजाननं भूतगणादि सेवितं, कपित्थजम्बू फलचारु भक्षणम्।

उमासुतं शोकविनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम्॥

ध्यान —सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पितांशुकोल्लासिनीं,

हेमाभाङ्गरूचिं शशांङ्कमुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्।

हस्तैर्मुद्गर- पाश-वज्र-रसनां संबिभ्रतीं भूषणैः,

व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत् ॥

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्न वेद्यां,

सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।

पीताम्बराभरणमाल्य विभूषिताङ्गीं,

देवीं भजामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम् ॥ १ ॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी, वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥२ ॥

मूल मन्त्रः-**ॐ ह्लीं (ह्ल्रीं) बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं (ह्ल्रीं) ॐ स्वाहा।**

बगला गायत्री—**ॐ ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनबाणाय धीमहि तन्नः बगला प्रचोदयात्।**

पञ्चोपचार पूजा:-ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मिकायै श्री पीताम्बरायै नमः गन्धं लेपयामि

ॐ हं आकाश तत्त्वात्मिकायै श्री पीताम्बरायै नमः पुष्पैः पूजयामि

ॐ यं वायु तत्त्वात्मिकायै श्री पीताम्बरायै नमः धूपमाघ्रापयामि

ॐ रं वह्नि तत्त्वात्मिकायै श्री पीताम्बरायै नमः दीपं दर्शयामि

ॐ वं अमृत तत्त्वात्मिकायै श्री पीताम्बरायै नमः अमृत नैवेद्यं निवेदयामि

ॐ सं सर्व तत्त्वात्मिकायै श्री पीताम्बरायै नमः सर्वोपचार पूजां समर्पयामि

जय श्री माता बगलामुखी......!

भगवती बगला सुधा - समुद्र के मध्य में स्थित मणिमय मण्डप में रत्नवेदी पर रत्नमय सिहांसन पर विराजती हैं। पीतवर्णा होने के कारण ये पीत रंग के ही वस्त्र, आभूषण व माला धारण किये हुए हैं। इनके एक हाथ में शत्रु की जिह्वा और दूसरे हाथ में मुद्गर है। व्यष्टि रूप में शत्रुओं का नाश करने वाली और समष्टि रूप में परम ईश्वरकी संहार-इच्छा की अधिष्ठात्री शक्ति बगला हैं।

एक बार समुद्र में राक्षस ने बहुत बड़ा प्रलय मचाया, विष्णु उसका संहार नहीं कर सके तो उन्होने सौराष्ट्र देश में हरिद्रा सरोवर के समीप महात्रिपुरसुन्दरी की आराधना की तो श्रीविद्या ने ही **बगला** रूप में प्रकट होकर राक्षस का वध किया। **मंगलवार युक्त चतुर्दशी, मकरकुल नक्षत्रों से युक्त वीररात्रि** कही जाती है। इसी अर्धरात्रि में **श्रीबगला का आविर्भाव** हुआ था।

श्री प्रजापति ने बगला उपासना वैदिक रीति से की और वे सृष्टि की सृजन करने में सफल हुए। श्रीप्रजापति ने इस विद्या का उपदेश सनकादिक मुनियों को दिया। सनत्कुमार ने इसका उपदेश श्री नारदजी को और श्रीनारदजीने सांख्यायन परमहंस को दिया, जिन्होंने छत्तीस पटलों में "बगला- तन्त्र " ग्रन्थ की रचना की। “ स्वतन्त्र तन्त्र " के अनुसार भगवान विष्णु इस विद्या के उपासक हुए। फिर श्री परशुराम जी और आचार्य द्रोण इस विद्या के उपासक हुए।आचार्य द्रोण ने यह विद्या परशुराम जी से ग्रहण की थी।

श्रीबगलामहाविद्या उर्ध्वाम्नाय के अनुसार ही उपास्य है,जिसमें स्त्री(शक्ति)भोग्या नहीं, बल्कि पूज्या है।बगला महाविद्या “श्री कुल"से सम्बन्धित है और अवगत हो कि श्रीकुल की सभी महाविद्याओं की उपासना अत्यन्त सावधानीपूर्वक गुरु के मार्गदर्शन में शुचिता बनाते हुए, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक करनी चाहिए।फिर बगला शक्ति तो अत्यन्त तेजपूर्ण शक्ति है, जिनका उद्भव ही स्तम्भन हेतु हुआ। इस विद्या के प्रभाव से ही महर्षि च्यवन ने इन्द्र के वज्रको स्तम्भित कर दिया था। श्रीमद् गोविन्दपाद की समाधि में विघ्न डालने से

रोकने के लिए आचार्य श्री शंकर ने रेवा नदीका स्तम्भन इसी महाविद्या के प्रभाव से किया था। महामुनि श्री निम्बार्क ने किसी ब्राह्मण को इसी विद्या के प्रभाव से नीम के वृक्ष पर, सूर्यदेव का दर्शन कराया था।

श्री बगलामुखी को"ब्रह्मास्त्र विद्या"के नाम से भी जाना जाता है।शत्रुओं का दमन और विघ्नों का शमन करने में विश्व में इनके समकक्ष कोई अन्य देवता नहीं है।भगवती बगलामुखी को स्तम्भन की देवी कहा गया है।स्तम्भनकारिणी शक्ति नाम रूपसे व्यक्त एवं अव्यक्त सभी पदार्थों की स्थिति का आधार पृथ्वी के रूप में शक्ति ही है, और बगलामुखी उसी स्तम्भन शक्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं। इसी स्तम्भन शक्ति से ही सूर्यमण्डल स्थित है, सभी लोक इसी शक्ति के प्रभाव से ही स्तम्भित है।अतः साधकगण को चाहिए कि ऐसी महाविद्या की साधना सही रीति व विधि-विधानपूर्वक ही करें।

बगलामुखी देवी दशमहाविद्याओं में आठवीं महाविद्या के नाम से उल्लेखित है। वेदिक शब्द वल्गा कहा है जिसका अर्थ कृत्या संबंध है जो बाद में अपभ्रंश होकर बगला नाम से प्रचारित हो गया। बगलामुखी शत्रुसंहारक विशेष है अतः इसके दक्षिणाम्नायी पश्चिमाम्नायी मंत्र अधिक मिलते है। नैऋत्य व पश्चिमाम्नायी मंत्र प्रबल संहारक व शत्रु को पीड़ा कारक होते हैं। इसलिये इसका प्रयोग करते समय व्यक्ति घबराते हैं। वास्तव में इसके प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिये। ऐसी बात नहीं है कि यह विद्या शत्रुसंहारक ही है, ध्यान-योग में इससे विशेष सहायता मिलती हैं ऐसा मेरा अनुभव है। यह विद्या प्राणवायु व मन की चंचलता का स्तंभन कर उर्ध्वगति देती है इस विद्या के मंत्र के साथ ललितादि विद्याओं के कूट मंत्र मिलाकर भी साधना की जाती है। बगला मंत्रों को मैंने ललिता, लक्ष्मी व काली मंत्रों से संपुटित करके व पदभेद करके प्रयोग कराये हैं, सफल रहे हैं। इस विद्या के उर्ध्वआम्नाय व उभयाम्नाय मंत्र भी है जिनका ध्यानयोग से ही विशेष संबंध रहता है। त्रिपुर सुंदरी के कूट मंत्रों के मिलाने से यह विद्या बगलासुंदरी हो जाती है जो शत्रुनाश भी करती है, वैभव भी देती है।

त्रयीसिद्ध विद्याओं में आपका पहला स्थान है। आवश्यकता में शुचि अशुचि अवस्था

में भी इसके प्रयोग का सहारा लेना पड़े तो शुद्धमन से स्मरण करने पर भगवती आपकी सहायता करेगी ऐसा मेरा अनुभव है।

लक्ष्मीप्राप्ति व शत्रुनाश उभय कामना मंत्रों का प्रयोग भी सफलता से किया जा सकता है।

बगलामुखी उपासना पीलेवस्त्र पहनकर, पीले आसन पर बैठकर करें। गंधार्चन में केसर हल्दी का प्रयोग करें, स्वयं के पीला तिलक लगायें। दीपवर्तिका पीली बनायें। पीतपुष्प चढायें, पीला नैवेद्य चढावें। हल्दी से बनी हुई माला से जप करें। अभाव में रुद्राक्ष माला से जप करें। या सफेद चंदन की माला को पीली कर लेवें। तुलसी की माला पर जप नहीं करें।

शत्रु व राजकीय विवाद मुकदमेबाजी में विद्या शीघ्रसिद्धिप्रदा है। शत्रु के द्वारा कृत्या अभिचार किया गया हो, प्रेतादिक उपद्रव होतो उक्तविद्या का प्रयोग करना चाहिये। परन्तु मेरा यह अनुभव है कि यदि शत्रु का प्रयोग या प्रेतोपद्रव भारी होतो मंत्र क्रम में निम्न विघ्न बनते हैं।

१. जप नियम पूर्वक नहीं हो सकेगें।

२. मंत्र जाप में समय अधिक लगेगा, जिह्वा भारी होने लगेगी।

३. मंत्र में जहां 'जिह्वां कीलय' शब्द आता है उस समय स्वयं की जिह्वा पर संबोधन भाव आने लगेगा उससे स्वयं पर ही मंत्र का कुप्रभाव पड़ेगा।

४. 'बुद्धिं विनाशय' पर परिभाषा का अर्थ मन में स्वयं पर आने लगेगा।

॥सावधानियाँ॥

१. ऐसे समय तारा मंत्र पुटित बगलामुखी मंत्र प्रयोग में लेवें, अथवा कालरात्रि देवी का मंत्र व काली अथवा प्रत्यङ्गिरा भी पुटित करें। तथा कवच मंत्रों का स्मरण करें। सरस्वती विद्या का स्मरण करें अथवा गायत्री मंत्र साथ में करें।

२. बगलामुखी मंत्र में **"ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाश ह्लीं ॐ स्वाहा"।** इस मंत्र में आप अगर यजमान का कार्य कर रहें है तो सर्वदुष्टानां शब्द से आशय यजमान के शत्रु को मानते हुये आगे ध्यान पूर्वक आगे का मंत्र पढ़ें तो कार्य सफल होवे।

३. यही संपूर्ण मंत्र जप समय यदि यजमान की शक्ल को ध्यान में रखकर किया तो यजमान का अहित हो जायेगा। स्वयं के लिये भी अगर निष्काम जप कर रहें हो तो **सर्वदुष्टानां** की जगह काम क्रोध लोभादि शत्रु एवं विघ्नों का ध्यान करें तथा **वाचं मुखं..... जिह्वां कीलय** के समय देवी के बाँयें हाथ में शत्रु की जिह्वा है तथा बुद्धिं विनाशय के समय देवी शत्रु को पाशबद्ध कर मुद्गर से उसके मस्तिष्क पर प्रहार कर रही है ऐसी भावना करें।

४. बगलामुखी के अन्य उग्रप्रयोग वडवामुखी, उल्कामुखी, ज्वालामुखी, भानुमुखी, वृहद्भानुमुखी, जातवेदमुखी इत्यादि तंत्र ग्रंथों में वर्णित है। समय व परिस्थिति के अनुसार

प्रयोग करना चाहियें।

५.विशेष विषय गुरुमुख से ज्ञात करना चाहियें। बगला प्रयोग के साथ भैरव, पक्षिराज, धूमावती विद्या का ज्ञान व प्रयोग करना चाहियें।

अब हम साधकगण को इस महाविद्या के विषय में कुछ और आवश्यक जानकारी देना आवश्यक समझते हैं,जो साधक इस साधना को पूर्ण कर, सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें इन तथ्यों की जानकारी होना अति आवश्यक है।

(१) **कुल-** यद्यपि 'दशों महाविद्याओं' और अन्य 'सिद्ध विद्याओं' में साधना करते समय "कुल विचार" अथवा अन्य किसी 'चक्र' आदि को देखने की आवश्यकता नहीं होती है,तो भी बगलामुखी महाविद्या दशों महाविद्याओं में "अष्टम महाविद्या" तथा " श्रीकुल" में गिनी जाती हैं। आगे दर्शित तालिका से दशों महाविद्याओं के कुलका ज्ञान स्पष्ट होजाता है-
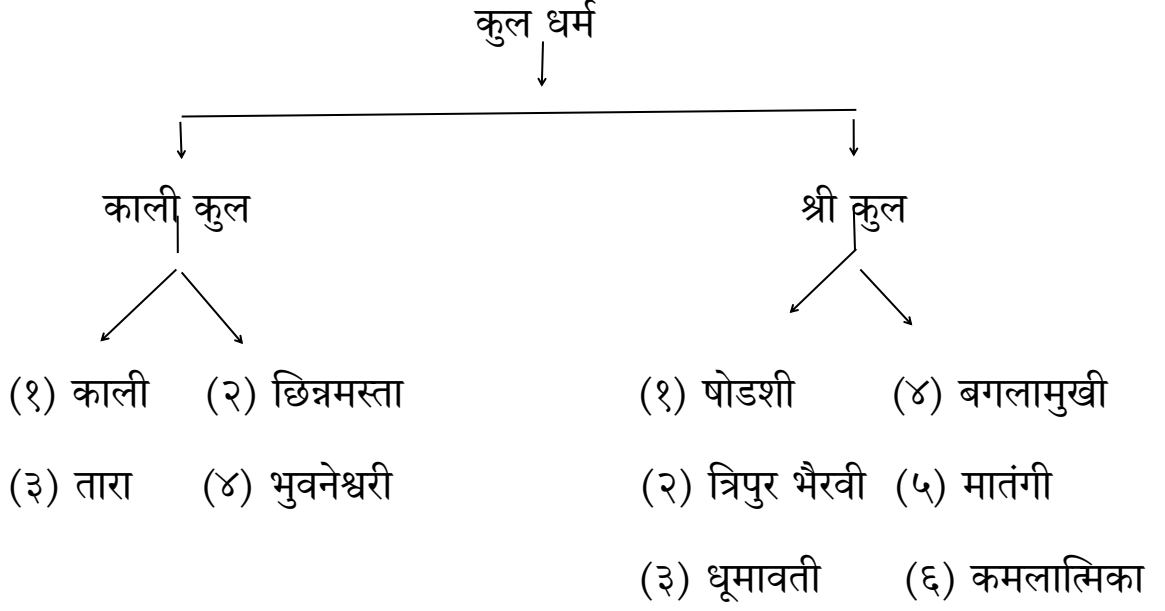
(२) **नाम** - बगलामुखी, पीताम्बरा, बगला, वल्गामुखी, वगलामुखी और ब्रह्मास्त्र विद्या।

(३)**कुल्लुका -** मन्त्र जाप से पूर्व उस मन्त्र की कुल्लुका का न्यास शिर में किया जाता है। इस विद्याकी कुल्लुका **'ॐ हूं क्ष्रौं'** हैं, जिसे दस बार जप करके शिर में न्यासित किया जाता है।

(४)**महासेतु** - साधनाकाल में जप से पूर्व 'महासेतु' का जप किया जाता है। ऐसा करने से लाभ यह होता है कि साधक प्रत्येक समय, प्रत्येक स्थिति में जप कर सकता है। इस महाविद्या का महासेतु **'स्त्रीं'** है। इसका जाप कंठ स्थित विशुद्धिचक्र में दस बार किया जाता हैं।

(५)**कवचसेतु -** इसे मन्त्रसेतु भी कहा जाता हैं। जप प्रारम्भ करने से पूर्व इसका जप एक हजार बार किया जाता हैं। ब्राह्मण व क्षत्रियों के लिए **'प्रणव'**, वैश्यों के लिए **'फट्'** तथा शूद्रों के लिए **'ह्रीं'** कवचसेतु है।

(६)**निर्वाण** - **"ह्रूं ह्रीं श्रीं"** से सम्पुटित मूल मन्त्र का जाप ही इसकी निर्वाण विद्या है।

इसकी दूसरी विधि यह है कि पहले प्रणव कर, अ, आ, आदि स्वर तथा क, ख, आदि

व्यंजन पढ़कर मूल मन्त्र पढ़ें और अन्त में **"ऐं"**लगाएं और फिर विलोम गति से पुनरावृत्ति करें।

(७)**बन्धन** - किसी विपरीत या आसुरी बाधा का प्रवेश रोकने के लिए इस मन्त्र का एक हजार बार जप किया जाता है। मन्त्र इस प्रकार हैं- **"ऐं ह्रीं ह्रीं ऐं"**।

(८) **मुद्रा-** इस विद्या में **'योनि'** मुद्रा का प्रदर्शन किया जाता है।

(९)**प्राणायाम**-साधना से पूर्व दो मूल मन्त्रों से रेचक, चार मूल मंत्रों से पूरक, दो मूल मन्त्रों का कुम्भक करना चाहिए। वैसे एक सिद्ध योगी द्वारा दो मूल मंत्रों से पूरक, आठ मन्त्रों से कुम्भक तथा चार मूल मन्त्रों से हेतु मुझे निर्देश दिया गया था, जिसका उत्तम परिणाम रहा है।

(१०)**दीपन-** दीपक जलाने से जैसे रोशनी हो जाती हैं, उसी प्रकार दीपन से मन्त्र प्रकाशवान हो जाता है। दीपन करने हेतु मूल मन्त्र को योनि बीज **'ईं'** से सम्पुटित कर सात बार जप करें।

(११)**जीवन अथवा प्राण योग-** बिना प्राण अथवा जीवन के मन्त्र निष्क्रिय होता है। अतः मूल मन्त्र के आदि और अन्त में माया बीज **"ह्रीं"** से सम्पुट लगाकर सात बार जप करें।

(१२)**मुख शोधन-** हमारी जिह्वा अशुद्ध रहती है, जिस कारण उससे जप करने पर लाभ के स्थान पर हानि ही होती है। अत: **"ऐं ह्रीं ऐं"** मन्त्र से दस बार जाप कर मुखशोधन करें।

(१३)**मध्य दृष्टि-** साधना के लिए मध्य दृष्टि आवश्यक हैं। अतः मूल मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के आगे पीछे **"यं"**बीज का अवगुण्ठन कर मूल मन्त्र का पाँच बार जप करना चाहिए।

(१४) **शापोद्धार** - मूल मन्त्र के जपने से पूर्व दस बार इस मन्त्र का जप करें-

"ॐ ह्रीं बगले ! रुद्र शापं विमोचय - २ ॐ ह्रीं स्वाहा ।"

(१५) **उत्कीलन** - मूल मन्त्र के आरम्भ में **"ॐ ह्रीं स्वाहा"** मन्त्र का दस बार जप करें।

(१६) **आचार-** इस विद्या के दोनों आचार हैं, वाम भी और दक्षिण भी।

(१७) **साधना में सिद्धि प्राप्त न होने पर उपाय-** कभी-कभी ऐसा देखने में आता हैं कि बार-बार साधना करने पर भी सफलता हाथ नहीं आती है। इसके लिए आप निम्नवर्णित उपाय करें-

१.कर्पूर, रोली, खस और चन्दन की स्याही से, अनार की कलम से भोजपत्र पर वायु बीज **"यं"** से मूलमन्त्र को अवगुण्ठित कर, उसका षोडशोपचार पूजन करें। निश्चय ही सफलता मिलेगी।

२.सरस्वती बीज **'ऐं'** से मूल मन्त्र को सम्पुटित कर एक हजार जप करें।

३.भोजपत्र पर गौदुग्ध से मूल मन्त्र लिखकर उसे दाहिनी भुजा पर बाँध लें। साथ ही मूल

मन्त्र को **"स्त्रीं"** से सम्पुटित कर उसका एक हजार जप करें।

(१८)**ध्यान**-शान्ति, पुष्टि, आकर्षण व वशीकरण कार्यों में अत्यन्त सुन्दर स्वरूपा षोडशा का ध्यान व चिन्तन करना चाहिए, जबकि मारण व उच्चाटन में शवारुढ़ा देवता का ध्यान करें।

(१९)**पंचामृत-**(१) दही, (२) दूध, (३) घी, (४) शहद, (५) शक्कर ।

(२०)**अष्टगन्ध-**(१) चन्दन, (२) अगर, (३) कपूर, (४) कुंकुम, (५) कचूर, (6) गोरोचन, (७) जटामांसी, (८) लालचन्दन।

(२१) प्रदक्षिणा- **श्लो॥यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर कृतानि च।**

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

इस मन्त्र का जप करते हुए एक परिक्रमा करनी चाहिए।

(२२) **दोष परिहार** - मन्त्र जप के समय यदि छींक, आलस्य, जम्हाई या अधोवायु हो तो सूर्य दर्शन अथवा प्राणायाम से उसका दोष परिहार हो जाता है।

(२३) **विशेष-** गन्ध, पुष्प, आभूषण- भगवती के सामने रखें। दीपक देवता के दायीं ओर व धूपबत्ती बायीं ओर

सर्व यन्त्र मन्त्र तन्त्रोतकीलन स्तोत्रम्

॥ अथ विघ्नविनाशक "शान्ति स्तोत्रम्" ॥

इस विघ्न विनाशक शान्ति स्तोत्र का पाठ तान्त्रिक प्रयोग के मध्य उपस्थित हो जाने वाले विघ्न आदि का नाश कर देता है। अत: जब भी अनुष्ठान करते समय किसी भी प्रकार का विघ्न आ पड़े तो इस विघ्न विनाशक शान्ति स्तोत्र के ग्यारह पाठ अवश्य करें। इस स्तोत्र का एक बार भी पढ़ा जाना अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होता है। प्रयोग के चलते समय किसी भी प्रकार की गड़बड़ी, भूल-चूक, भ्रम आदि के होते ही इस स्तोत्र का पाठ लाभप्रद प्रमाणित हुआ है। इसके जप करने मात्र से ही सभी विघ्न नाश होकर शान्ति हो जाती है।

स्तोत्रम्

नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा नश्यन्तु दूषका नराः। साधकानां शिवा:सन्तु आम्नायपरिपातिनाम् ॥1 ॥

जयन्ति मातरः सर्वा जयन्ति योगिनीगणाः। जयन्ति सिद्धडाकिन्यो जयन्ति गुरुपङ्क्तयः ॥2 ॥

जयन्ति साधकाः सर्वे विशुद्धाः साधकाश्च ये। समयाचारसम्पन्ना जयन्ति पूजका नराः ॥3 ॥

नन्दन्तु चाणिमासिद्धाः नन्दन्तु कुलपालकाः। इन्द्राद्या देवताः सर्वे तृप्यन्तु वास्तुदेवताः ॥4 ॥

चन्द्रसूर्यादयो देवास्तृप्यन्तु मम भक्तितः। नक्षत्राणि ग्रहा योगाः करणा राशयच ये॥ 5 ॥

सर्वे ते सुखिनो यान्तु सर्पा नश्यन्तु पक्षिणः। पशवस्तुरगाश्चैव पर्वताः कन्दरा गुहाः ॥6 ॥

ऋषयोब्राह्मणास्सर्वे शान्तिकुर्वन्तु सर्वदा। स्तुता मे विदिताःसन्तु सिद्धास्तिष्ठन्तु पूजकाः ॥7 ॥

ये ये पापधियस्सुदूषणरता मन्निन्दकाः पूजने।

वेदाचारविमर्दनेष्टहृदया भ्रष्टाच ये साधकाः ॥

दृष्ट्वा चक्रमपूर्वमन्दहृदया ये कोलिका दूषकाः ।

ते ते यान्तु विनाशमत्र समय श्री भैरवस्याज्ञया ॥8 ॥

द्वेष्टार: साधकानां च सदैवाम्नायदूषकाः ।डाकिनीनां मुखे यान्तु तृप्तास्तत्पिशितैः स्तुताः ॥9 ॥

ये वा शक्तिपरायणा: शिवपरा ये वैष्णवाः साधवः ।

सर्वस्मादखिले सुराधिपमजं सेव्यं सुरैः सन्ततम् ॥10 ॥

शक्तिं विष्णुधिया शिवं च सुधिया श्री कृष्णबुद्ध्या च ये ।

सेवन्ते त्रिपुरं त्वभेदमतयो गच्छन्तु मोक्षन्तु ते ॥11 ॥

शत्रवो नाशमायान्तु मम निन्दाकराश्च ये ।द्वेष्टार:साधकानां च ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥12 ॥

ततःपरं पठेत स्तोत्रमानन्दस्तोत्रमुत्तमम् ॥

॥ इति शान्ति स्तोत्रम् ॥

॥ सर्व यत्र-मत्र-तन्त्रोत्कीलन स्तोत्रम् ॥

जिन मन्त्रों की उत्कीलन विधि ज्ञात नहीं हो उन मन्त्रों को इस स्तोत्र के पठन से उत्कीलित किया जा सकता है।

॥ पार्वत्युवाच ॥

देवेश परमानन्द भक्तानामभयं प्रद ! आगमाः निगमाश्चैव, वीजं वीजोदयस्तथा ॥

समुदायेन वीजानां, मन्त्रो मन्त्रस्य संहिता। ऋषिच्छन्दादिकं भेदो वैदिकं यामलादिकम् ॥

धर्मोऽधर्मस्तथा ज्ञानं विज्ञानं च विकल्पन। निर्विकल्प विभागेन तथा षट्कर्म सिद्धये ॥

भुक्ति-मुक्ति-प्रकारश्च सर्वं प्राप्तं प्रसादतः। कीलनं सर्वमन्त्राणां शंसयद् हृदये वचः॥

इति श्रुत्वा शिवानाथः, पार्वत्यावचनं शुभं। उवाच परया प्रीत्या मन्त्रोत्कीलनकं शिवाम्॥

॥ शिव उवाच॥

वरानने! हि सर्वस्य व्यक्ताव्यक्तस्य वस्तुनः । साक्षी भूय त्वमेवासि जगतस्तु मनोस्तथा॥

त्वया पृष्टं वरारोहे! तद् वक्ष्याम्युत्कीलनं। उद्दीपनं हि मन्त्रस्य सर्वस्योत्कीलनं भवेत्॥

पुरा तव मया भद्रे! समाकर्षण वश्यजा। मन्त्राणां कीलिता सिद्धिः सर्वे ते सप्तकोटयः॥

तवानुग्रह प्रीतस्त्वात् सिद्धिस्तेषां फलप्रदा। येनोपायेन भवति तं स्तोत्रं कथयाम्यहम्॥

श्रृणु भद्रेऽत्र सततमावाभ्यामखिलं जगत्। तस्य सिद्धिर्भवेत्तिष्ठे माया येषां प्रभावकम्॥

अन्नं पानं हि सौभाग्यं दत्तं तुभ्यं मया शिवे !सञ्जीवनं च मन्त्राणां तथा दत्तुं पुनर्ध्रुवम्॥

यस्य स्मरण मात्रेण पाठेन जपतोऽपि वा।अकीला अखिला मन्त्राः सत्यं सत्यं न संशयः॥

विनियोगः–ॐअस्य श्री सर्व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्राणामुत्कीलन मन्त्र स्तोत्रस्य मूलप्रकृतिः ऋषिः, जगतीच्छन्दः, निरञ्जनो देवता, क्लीं बीजं, ह्रीं शक्तिः,ह्रः सौं कीलकं, सप्तकोटि मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र कीलकानां सञ्जीवन सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः–ॐ मूल प्रकृति ऋषये नमः शिरसि।ॐ जगतीच्छन्दसे नमः मुखे।ॐ निरञ्जन देवतायै नमः हृदि। ॐ क्लीं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ह्रः सौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।ॐ मंत्राणां सञ्जीवन सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

षडङ्ग न्यास	करन्यास	अङ्गन्यास
ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा

ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ ह्रः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यानम् :-

ॐ ब्रह्मस्वरूपममलं च निरञ्जनं तं, ज्योतिः प्रकाशमनिशं महतो महान्तम्।

कारुण्यरूपमति बोधकरं प्रसन्नं, दिव्यं स्मरामि सततं मनु जीवनाय॥

एवं ध्यात्वा स्मरेन्नित्यं,तस्य सिद्धिस्तु सर्वदा।

वाञ्छितं फलमाप्नोति,मन्त्र संजीवनं ध्रुवम्॥

मन्त्र :-ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्रादीनामुत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।(जपं कुर्यात्)

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं षट्पञ्चाक्षराणामुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा।ॐ जूं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्राणां सञ्जीवनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः, कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं, यं रं लं वं, शं षं सं हं ळं क्षं। मात्राऽक्षराणां सर्वं उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।

मंत्र के बाद ११ लिखा है अर्थात् उस बीज मंत्र की ११ बार आवृति करें।

ॐ सोऽहं हंसोऽहं ११, ॐ जूं सोहं हंसः ॐ ॐ ११, हं जूं हं सं गं ११,सोऽहं हंसो यं ११, लं ११,ॐ ११, यं ११,ॐ ह्रीं जूं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्र स्तोत्र कवचादीनां सञ्जीवय सञ्जीवय कुरु कुरु स्वाहा।ॐ सोऽहं हंसः ॐ सञ्जीवनं स्वाहा। ॐ ह्रीं मन्त्राक्षराणामुत्कीलय,उत्कीलनं

कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ॐ प्रणव रूपाय, अं आं परम रूपिणे। इं ईं शक्ति स्वरूपाय, उं ऊं तेजोमयाय च॥

ऋं ॠं रंजितदीप्ताय,लृं ॡं स्थूलस्वरूपिणे।एं ऐं वाचां विलासाय,ओंऔं अंअः शिवाय च॥

कं खं कमल नेत्राय, गं घं गरुड़ गामिने। ङं, चं श्री चन्द्रभालाय, छं जं जयकराय च॥

झं ञं टं ठं जयकर्त्रे,डं ढं णं तं पराय च। थं दं धं नं नमस्तस्मै, पं फं यन्त्रमयाय च॥

बं भं मं बलवीर्याय, यं रं लं यशसे नमः। वं शं षं बहुवादाय, सं हं ळं क्षं स्वरूपिणे॥

दिशामादित्य रूपाय, तेजसे रूपधारिणे। अनन्ताय अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः॥

मातृकायाः प्रकाशायै तुभ्यं तस्यै नमो नमः। प्राणेशायै क्षीणदायै सं सञ्जीव नमो नमः॥

निरञ्जनस्य देवस्य, नाम कर्म विधानतः। त्वया ध्यानं च शक्त्या च तेन सञ्जायते जगत्॥

स्तुताहमचिरं ध्यात्वा, मायाया ध्वंस हेतवे। सन्तुष्टा भार्गवायाहं यशस्वी जायते हि सः॥

ब्रह्माणं चेतयन्ती विविध सुर नरास्तर्पयन्ती प्रमोदाद्,

ध्यानेनोद्दीपयन्ती निगम जप मनुं षट्पदं प्रेरयन्ती।

सर्वान् देवान् जयन्ती दितिसुत दमनी साऽप्यहङ्कारमूर्ति-

स्तुभ्यं तस्मै च जाप्यं स्मर रचित मनुं मोचये शाप जालात्॥

इदं श्रीत्रिपुरा स्तोत्रं पठेद् भक्त्या तु यो नरः।

सर्वान् कामानवाप्नोति सर्व-शापाद् विमुच्यते॥

—: @@@@@@ :—

॥अथ श्री दिग्बंधन रक्षा स्तोत्रम्॥

ब्रह्मास्त्रां प्रवक्ष्यामि बगलां नारदसेविताम्। देवगन्धर्वयक्षादि सेवितंपादपङ्कजाम्॥

त्रैलोक्यस्तम्भिनी विद्या सर्वशत्रुवशङ्करी आकर्षणकरी उच्चाटनकरी विद्वेषणकरी जारण करी मारणकरी जृम्भणकरी स्तम्भनकरी ब्रह्मास्त्रेण सर्ववश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्लां द्राविणि द्राविणि भ्रामिणि एहि एहि सर्वभूतान् उच्चाटय उच्चाटय सर्वदुष्टान् निवारय निवारय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी: छिन्धि छिन्धि खड्गेन भिन्धि भिन्धि मुद्गरेण संमारय संमारय, दुष्टान् भक्षयभक्षय, ससैन्यं भूपतिं कीलय कीलय मुखस्तम्भनं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

आत्मा रक्षा ब्रह्म रक्षा विष्णु रक्षा रुद्र रक्षा इन्द्र रक्षा अग्नि रक्षा यम रक्षा नैर्ऋत रक्षा वरुण रक्षा वायु रक्षा कुवेर रक्षा ईशान रक्षा सर्व रक्षा भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी रक्षा अग्निवैताल रक्षा गण गन्धर्व रक्षा तस्मात् सर्वरक्षां कुरु कुरु, व्याघ्र गज सिंह रक्षा रणतस्कर रक्षा तस्मात् सर्वं बन्धयामि ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा ।

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बगलामुखि एहि एहि पूर्वदिशायां बन्धय बन्धय इन्द्रस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय इन्द्रशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्रीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पीताम्बरे एहि एहि अग्निदिशायां बन्धय बन्धय अग्निमुखं स्तम्भय स्तम्भय अग्निशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्रीं अग्निस्तम्भं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महिषमर्दिनि एहि एहि दक्षिणदिशायां बन्धय बन्धय यमस्य मुखं स्तम्भ-

य स्तम्भय यमशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं ह्ज्जृम्भणं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चण्डिके एहि एहि नैर्ऋत्यदिशायां बन्धय बन्धय नैर्ऋत्यमुखं स्तम्भय स्तम्भय नैर्ऋत्यशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं करालनयने एहि एहि पश्चिमदिशायां बन्धय बन्धय वरुणमुखं स्तम्भय स्तम्भय वरुणशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कालिके एहि एहि वायव्यदिशायां बन्धय बन्धय वायुमुखं स्तम्भय स्तम्भय वायुशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दरि एहि एहि उत्तरदिशायां बन्धय बन्धय कुबेरमुखं स्तम्भय स्तम्भय कुबेरशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं महाभैरवि एहि एहि ईशानदिशायां बन्धय बन्धय ईशानमुखं स्तम्भय स्तम्भय ईशानशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु करु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं गाङ्गेश्वरि एहि एहि ऊर्ध्वदिशायां बन्धय बन्धय ब्रह्माणं चतुर्मुखं स्तम्भय स्तम्भय ब्रह्मशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्य कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ललितादेवि एहि एहि अन्तरिक्षदिशायां बन्धय बन्धय विष्णुमुखं स्तम्भय स्तम्भय विष्णुशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखिं हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं चक्रधारिणि एहि एहि अधोदिशायां बन्धय बन्धय वासुकिमुखं स्तम्भय स्तम्भय वासुकिशस्त्रं निवारय निवारय सर्वसैन्यं कीलय कीलय पच पच मथ मथ मर्दय मर्दय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लां बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

दुष्टमन्त्रं दुष्टयन्त्रं दुष्टपुरुषं बन्धयामि शिखां बन्ध ललाटं बन्ध ध्रुवौ बन्ध नेत्रे बन्ध कर्णौ बन्ध नसौ बन्ध ओष्ठौ बन्ध अधरौ बन्ध जिह्वां बन्ध रसनां बन्ध बुद्धिं बन्ध कण्ठं बन्ध हृदयं बन्ध कुक्षिं बन्ध हस्तौ बन्ध नाभिं बन्ध लिङ्गं बन्ध गुह्यं बन्ध ऊरू बन्ध जानू बन्ध जङ्घे बन्ध गुल्फौ बन्ध पादौ बन्ध स्वर्ग मृत्यु पातालं बन्ध बन्ध रक्ष रक्ष ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि इन्द्राय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय श्वेतवर्णाय वज्र हस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् निरासय निरासय विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि अग्नये तेजोधिपतये छागवाहनाय रक्तवर्णाय शक्तिहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि यमाय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि वरुणाय जलाधिपतये मकरवाहनाय श्वेतवर्णाय पाश हस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि वायव्याय मृगवाहनाय धूम्रवर्णाय ध्वजाहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्रीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि ईशानाय भूताधिपतये वृषभवाहनाय कर्पूरवर्णाय त्रिशूल हस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि ब्रह्मणे ऊर्ध्वदिग्लोकपालाधिपतये हंसवाहनाय श्वेतव

र्णाय कमण्डलुहस्ताय सपरिवारय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगला मुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ऐं ॐ ह्लीं बगलामुखि वैष्णवीसहिताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय श्यामवर्णाय चक्रहस्ताय सपरिवाराय एहि एहि मम विघ्नान् विभञ्जय विभञ्जय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्लीं अमुकस्य मुखं भेदय भेदय ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगला मुखि हुं फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवति पुण्यपवित्रे स्वाहा।

ॐ ह्लीं बगलामुखि नित्यम् एहि एहि रविमण्डलमध्याद् अवतर अवतर सान्निध्यं कुरु कुरु। ॐ ऐं परमेश्वरीम् आवाहयामि नमः। मम सान्निध्यं कुरु कुरु। ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः बगले चतुर्भुजे मुद्गरशरसंयुक्ते दक्षिणे जिह्वा वज्रसंयुक्ते वामे श्रीमहाविद्ये पीतवस्त्रे पञ्चमहाप्रेताधिरूढे सिद्धविद्याधरवन्दिते ब्रह्मविष्णु रुद्रपूजिते आनन्दस्वरूपे विश्वसृष्टिस्वरूपे महाभैरवरूपधारिणि स्वर्गमृत्युपातालस्तम्भिमनि वाम मार्गाश्रिते श्रीबगले ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपनिर्मिते षोडशकलापरिपूरिते दानवरूप सहस्त्रादित्यशोभिते त्रिवर्णे एह्येहि मम हृदयं प्रवेशय प्रेवशय शत्रुमुखं स्तम्भय स्तम्भय अन्यभूतपिशाचान् खादय

खादय अरिसैन्यं विदारय विदारय परविद्यां परचक्रं छेदय छेदय वीरचक्रं धनुषां संभारय संभारय त्रिशूलेन छिन्धि छिन्धि पाशेन बन्धय बन्धय भूपतिं वश्यं कुरु कुरु संमोहय संमोहय विना जाप्येन सिद्धय सिद्धय विना मन्त्रेण सिद्धिं कुरु कुरु सकलदुष्टान् घातयघातय मम त्रैलोक्यं वश्यं कुरु कुरु सकलकुलराक्षसान् दह दह पच पच मथ मथ हन हन मर्दय मर्दय मारय मारय भक्षय भक्षय मां रक्षरक्ष विस्फोटकादीन् नाशयनाशय ॐ ह्लीं विषमज्वरं नाशय नाशय विषं निर्विषं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ क्लीं क्लीं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय विनाशय क्लीं क्लीं ह्लीं स्वाहा।

ॐ बगलामुखि स्वाहा। ॐ पीताम्बरे स्वाहा। ॐ त्रिपुरभैरवि स्वाहा। ॐ विजयायै

स्वाहा।ॐजयायै स्वाहा।ॐशारदायै स्वाहा।ॐ सुरेश्वर्यै स्वाहा।ॐ रुद्राण्यै स्वाहा।ॐ विन्ध्य वासिन्यै स्वाहा। ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा।ॐ भवान्यै स्वाहा।ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा।ॐमहामायायै स्वाहा।ॐकमललोचनायै स्वाहा।ॐतारायै स्वाहा।ॐयोगिन्यै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ शिवायै स्वाहा। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा। ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्लीं शिवतत्वव्यापिनि बगलामुखि स्वाहा। ॐ ह्लीं मायातत्वव्यापिनि बगलामुखि हृदयाय स्वाहा । ॐ ह्लीं विद्यातत्वव्यापिनि बगलामुखि शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा ।

ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः शिरो रक्षतु बगलामुखि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः भालं रक्षतु पीताम्बरे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः नेत्रे रक्षतु महाभैरवि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः कर्णौ रक्षतु विजये रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः नसौ रक्षतु जये रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः वदनं रक्षतु शारदे रक्ष रक्ष स्वाहा।ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः कण्ठं रक्षतु रुद्राणि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः स्कन्धौ रक्षतु विन्ध्यवासिनि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः बाहू रक्षतु त्रिपुरसुन्दरि रक्ष रक्ष स्वाहा।ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः करौ रक्षतु दुर्गे रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः हृदयं रक्षतु भवानी रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः

उदरं रक्षतु भुवनेश्वरि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः नाभिं रक्षतु महामाये रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः कटिं रक्षतु कमललोचने रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः उदरं रक्षतु तारे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः सर्वाङ्गं रक्षतु महातारे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः अग्रे रक्षतु योगिनि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः पृष्ठे रक्षतु कौमारि रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः दक्षिणपार्श्वे रक्षतु शिवे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः वामपार्श्वे रक्षतु इन्द्राणि रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये सर्वजनमुखस्तम्भनाय आगच्छ आगच्छ मम विघ्नान् नाशय नाशय दुष्टं खादय खादय दुष्टस्य मुखं स्तम्भय स्तम्भय अकालमृत्युं हन हन भो

गणाधिपते ॐ ह्लीं वश्यं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा सिद्धिर्भवति नान्यथा।भ्रूयुग्मं तु पठेन्नात्र कार्यं संख्याविचारणम्॥

यन्त्रिणां बगला राज्ञी सुराणां बगलामुखि। शूराणां बगलेश्वरी ज्ञानिनां मोक्षदायिनी॥

एतत् स्तोत्रं पठेन् नित्यं त्रिसन्ध्यं बगलामुखि। विना जाप्येन सिध्येत साधकस्य न संशयः॥

निशायां पायसतिलाज्यहोमं नित्यं तु कारयेत्। सिध्यन्ति सर्वकार्याणि देवी तुष्टा सदा भवेत्॥

मासमेकं पठेत् नित्यं त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्। सर्वसिद्धिमवाप्नोति, देव्या लोकं स गच्छति॥

॥इति श्रीबगलामुखिकल्पे वीरतन्त्रे बगलासिद्धिप्रयोगः सम्पूर्णम्॥

श्री बगलामुखी पूजन पद्धति

भगवती पीताम्बरा के 36 अक्षरी मन्त्र या विद्या को मन्त्रराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है, जो इस प्रकार

“ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। ” ह्लीं बीज के स्थान पर (ह्रीं) भी रखकर जप कर सकतें हैं।

सर्वप्रथम गुरुदेव का ध्यान करें-(अक्षत व पुष्प हाथ में लें)

"अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥

देवताया दर्शनं च करुणा वरुणालयं।

सर्व सिद्धि प्रदातारं श्री गुरुं प्रणमाम्यहम्॥

वराभय करं नित्यं श्वेत पद्म निवासिनम्।

महाभय निहन्तारं गुरुदेवं नमाम्यहम् "॥

तदुपरान्त अक्षत व पुष्प गुरुचरणों में अर्पित कर कार्य सिद्धि हेतु पूजन संकल्प लें

संकल्प :—(हाथ में अक्षत, पुष्प,द्रव्य व जल लेकर)

॥अथ संकल्प: ॥

तत्रादौ दक्षिणहस्ते कुशत्रययवगन्धपुष्पजलान्यादाय-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ तत्सद् ब्रह्म श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त मानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्द्ध एकपंचाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नोः द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वाय म्भुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेतद्वापरकलिसंज्ञानां चतुर्णांयुगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे तथा पञ्चाशत्कोटियोजन विस्तीर्णभूमण्डलान्त र्गत सप्तद्वीपमध्यवर्तिनि जम्बूद्वीपे तत्रापि नवखण्डानां मध्ये नवसहस्त्रयोजनविस्तीर्णे भरतख ण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतेवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे......प्रदेशे......क्षेत्रे(अथवा)

मेरोर्दक्षिणदिग्भागे अमुक ग्रामे(पत्तने) अमुक देवस्थाने(गृहे) देवब्राह्मणानां सद्गुरूणां च चरण सन्निधौ श्रीमन्नृपति विक्रमादित्यराज्यादमुकसंख्यापरिमिते प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्ये अमुक नामसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोऽमुकशर्माहमात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये अस्मिन्पुण्याहे जन्मराशिः सकाशा नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नाद्वर्षलग्नाद्गोचराद्वा ये केचिच्चतुर्थाष्टमद्वादशाद्यनिष्ट स्थानस्थिताः क्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा ग्रहेषु तृतीयैकादशशुभ स्थानस्थितवदुत्तमबल प्राप्त्यर्थं तथा दशान्तर्दशोपदशादिन दशाजनित पीडाऽल्पायुराधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकजनितक्लेशनिवृत्तिपूर्वकशरीरारोग्यार्थं परमैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थं श्रीभगवत्याःपी-ताम्बरायाःबगलामुखी देवतायाःप्रसाद सिद्धि द्वारा मम सर्वाभिष्ट सिद्ध्यर्थं (न्यायालये अस्मत्पक्ष विजयार्थं, नाना ग्रहोपग्रह प्रयोगं, नाना दुष्टरोग शान्त्यर्थे, शीघ्रमारोग्य लाभार्थे, सर्व दुष्ट बाधा कष्ट ग्रह उच्चाटनार्थे आदि)श्रीबगलामुखी शत्रुस्तम्भनमन्त्र पुरश्चरणं स्वयं ब्राह्मणद्वारा वा करिष्ये इति तदङ्गत्वेन गणपतिपूजनं च यथा शक्ति,यथाज्ञानेन,यथा-सम्भावितोपचारद्रव्यै यथालब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये।" ॥'इति संकल्प्य-गणेशपूजनं कृत्वा स्ववामे कर्मार्थजल पूरित कलशार्चनं कुर्यात्।(अमुक नाम के स्थान पर व्यक्ति अपना नाम ले।)

अब आप हाथ में लिये हुए पुष्प, अक्षत आदि भूमि पर छोड़े। फिर हाथ में पीतपुष्प लेकर बगलामुखी का ध्यान करें-

ध्यान :— सौवर्णासन-सस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,

हेमाभाङ्गरुचिं शशांङ्क मुकुटां सच्चम्पक-स्रग्युताम्,

हस्तैर्मुद्गर-पाशबद्ध - रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-

र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये॥

हाथ में लिये गये पुष्प माता को अर्पण करें-

आह्वान :—पीत पुष्पों से माँ का आह्वान करते हुए उनका स्वागत करें-

आगच्छ त्वं महादेवि! स्थाने चात्र स्थिरा भव।

यावत् पूजां करिष्यामि, तावत् त्वं सन्निधो भव॥

श्री पीताम्बरायै नमः। बगलामुखिदेवीमावाह्यामि।आवाहनार्थे पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पुष्पांजलि समर्पित करें।

आसन :— अनेक रत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।

इदं हेममयं दिव्यमासनम् प्रतिग्रह्यताम्॥

ह्रीं बगलायै नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

पाद्य :—केसर, गोरोचन व पीतपुष्प जल में मिलाकर चढ़ायें-

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।

पाद्यार्थं ते प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि॥

ह्रीं बगलायै नमः। पादयो पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य :—जल, जिसमें चन्दन, पीत पुष्प, अक्षत, पीली सरसों व तिल पड़े हों, भगवती को प्रदान करें-

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।

गृहाण त्वं महादेवि! प्रसन्ना भव सर्वदा॥

ह्रीं बगलायै नमः। अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन :—कर्पूर से सुवासित जल जिसमें जायफल, लौंग तथा कंकोल का चूर्ण मिला हो, भगवती को मन्त्र पढ़ने के उपरान्त आचमन हेतु प्रदान करें-

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।

तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥

ह्लीं बगलायै नमः । आचमनं समर्पयामि ।

स्नान :—गंगाजल में केसर व गोरोचन मिलायें व मन्त्र पढ़कर भगवती को प्रदान करें।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपाप हरं शुभम् ।

तदिदं कल्पितं देवि! स्नानार्थं प्रतिग्रह्यताम् ॥

ह्लीं बगलायै नमः । स्नानार्थं जलं समर्पयामि ।

पुनः आचमन करायें- स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि ।

दुग्ध स्नान :—गाय के दूध में केसर मिलाकर मन्त्र पढ़ने के उपरान्त भगवती को दूध से स्नान करायें।

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।

पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

ह्लीं बगलायै नमः । दुग्धस्नानं समर्पयामि ।

दधिस्नान :—गाय के दूध से बनी दही से मन्त्र पढ़ने के उपरान्त भगवती को स्नान करायें।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशीप्रभम् ।

दध्यानीतं महादेवि! स्नानार्थं प्रतिगह्यताम् ॥

ह्लीं बगलायै नमः । दधि स्नानं समर्पयामि ।

घृत स्नान :—गाय के दूध से बने घी से मन्त्र पढ़ने के उपरान्त भगवती को स्नान करायें।

नवनीतं समुत्पन्नं सर्व सन्तोषकारकम् ।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ह्लीं बगलायै नमः। घृत स्नानं समर्पयामि।

मधु स्नान :—शुद्ध शहद से माता को स्नान करायें।

पुष्परेणु समुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।

तेजः पुष्टि समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्लीं पीताम्बरायै नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शर्करा स्नान :—शक्कर से भगवती को स्नान करायें।

इक्षुसार समुद्भूतं शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।

मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्लीं पीताम्बरायै नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नान :—अन्य पात्र में पृथक रूप से निर्मित पञ्चामृत से स्नान करायें।

पयो, दधि, घृतं चैव मधुशर्कर संयुतम्।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्लीं पीताम्बरायै नमः। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

गन्धोदक स्नान :—भगवती को पीले चन्दन व अष्ट गन्ध से स्नान करायें।

मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरुमिश्रितम्।

सलिलं देव देवेशि ! शुद्धं स्नानाय गृह्यताम्॥

ह्लीं बगलायै नमः। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान :—माता रानी को शुद्ध जल से स्नान करायें।

शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गंगाजल समं स्मृतम्।

समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्रीं बगलायै नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान के उपरान्त पुनः आचमन करायें-

शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्र :—भगवती को वस्त्र व अन्तर्वस्त्र प्रदान करें।

पट्टयुग्मं मया दत्तं कञ्चुकेन समन्वितम्।

परिधेहि कृपां कृत्वा मातः श्री बगलामुखी॥

ह्रीं बगलायै नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

चन्दन :—चन्दन चढ़ायें।

श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठे चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्रीं बगलायै नमः। गन्धं समर्पयामि।

सौभाग्य सूत्र :—सौभाग्य-सूत्र चढ़ायें।

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम्।

कण्ठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा॥

ह्रीं बगलायै नमः। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि।

हरिद्रा :—हल्दी का चूर्ण अर्पित करें।

हरिद्रा रञ्जिते देवि ! सुख सौभाग्य दायिनी।

तस्मात् त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ह्लीं बगलायै नमः। हरिद्रां समर्पयामि।

कुंकुम :—रोली का अर्पण करें।

कुंकुमं कामदंदिव्यं कामिनी काम सम्भवम्।

कुंकुमेनार्चिता देवि। कुंकुमं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्लीं बगलायै नमः। कुंकुमं समर्पयामि।

सिन्दूर :—भगवती को सिन्दूर चढ़ायें।

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसंनिभम्।

अर्पितं ते मया भक्त्या प्रसीद परमेश्वरि॥

ह्लीं बगलायै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि।

कज्जल :—भगवती को काजल अर्पित करें।

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे ! शान्तिकारके।

कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण बगलामुखि !॥

ह्लीं बगलायै नमः। कज्जलं समर्पयामि।

बिल्वपत्र :—भगवती को बेल के वृक्ष के पत्ते अर्पित करें।

त्रिदलं, त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्र च त्रिधायुतम्।

त्रिजन्य पाप संहारम बिल्वपत्रं बगलार्पणम्॥

ह्लीं बगलायै नमः। बिल्वपत्रं समर्पयामि।

पुष्प :—मन्दार, चम्पा, कनेर आदि के पुष्प चढ़ायें।

मन्दार - परिजातादि-पाटलं, केतकानि च।

जाती-चम्पक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने !॥

ह्लीं बगलायै नमः । पुष्पं समर्पयामि।

धूप :—भगवती को धूपबत्ती दिखायें।

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यं गन्ध उत्तमः।

आघ्रेय पीताम्बरे! धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्लीं बगलायै नमः। धूपमाघ्रपयामि।

दीप :—भगवती को दीपक दिखायें।

साज्यं च वर्ति संयुक्तं बह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेशि ! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

ह्लीं बगलायै नमः। दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य व फल :—इस मंत्र से देवी को नैवेद्य व फल अर्पित करें।

अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम्।

नैवेद्यं च फलं देवि! भक्ति मे ह्यचलां कुरु॥

ह्लीं बगलामुख्यै नमः। नैवेद्यं फलं च निवेदयामि।

ताम्बूल :—भगवती को पान का बीड़ा अर्पित करें।

एला - लवङ्गं कस्तूरी कर्पूरैः पुष्पवासिताम्।

वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि बगलामुखी !॥

ह्रीं बगलायै नमः। मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

चामर :—भगवती को चामर चढ़ायें।

ॐ चामरं चमरीपुच्छं, हेमदण्ड समन्वितम्।

मयार्पितम् राजचिन्हं, चामरं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्रीं बगलायै नमः। चामरं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि :—माता रानी को पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण बगलामुखि॥

ह्रीं बगलायै नमः। पुष्पांजलिं समर्पयामि।

आरती :—कपूर से भगवती की आरती उतारें।

कदलीगर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।

आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मा वरदा भवः॥

ह्रीं बगलामुख्यै नमः। कर्पूरार्तिक्यं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा :—भगवती की एक प्रदक्षिणा करें।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥

मानस पुष्पाञ्जलि :—भगवती को मानस पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।

यह तन भी अर्पित किया तुम्हें,यह मन भी कहाँ रहा मेरा॥

यह माया आनी जानी हैं।यह जीवन जोगी का फेरा॥

सब रिश्ते नाते झूठे ये।सब मोह माया का बन्धन है।

अब जाऊँ कहाँ? माँ तू ही बता।मैंने डाल दिया तेरे दर, डेरा॥

मेरा कुछ भी रहा नहीं, अपना ।यही "पुष्प" हार स्वीकार करो, मेरा॥

श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं माते प्रतिगृह्यताम्॥

ह्रीं बगलायै नमः। मन्त्रपुष्पांजलि समर्पयामि।

क्षमा याचना :— **देव्यपराध क्षमापण स्तोत्रम्**

न मत्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो,न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।

न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

अर्थात् :- हे माँ ! मैं न मंत्र जनता हूँ न यंत्र,अहो ! मुझे स्तुति का भी ज्ञान नहीं है। न आवाहन का पता है न ध्यान का। स्तोत्र और कथाओ का भी ज्ञान नहीं है। न तो मैं तुम्हारी मुद्राएँ जनता हूँ और न मुझे व्याकुल होकर विलाप ही करना आता है – परन्तु एक बात जनता हूँ की तुम्हारा अनुसरण करना-तुम्हारी शरण में आना सब क्लेशो को सब बिपत्तियों को हरने वाला है ॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया, विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयो र्या च्युतिरभूत्।

तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥२॥

अर्थात् : – हे माँ ! सबका उद्धार करनेवाली कल्याणमयी माता ! मैं पूजा की विधि नहीं जनता। मेरे पास धन का भी अभाव है।मैं स्वभाव से भी आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक-ठीक पूजा का संपादन भी नहीं हो सकता। इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में जो त्रुटी हो गई है उसे क्षमा कर देना- क्योंकि पुत्र का कुपुत्र होना तो संभव है किन्तु माता कभी कुमाता नहीं हो सकती ॥२ ॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।

मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३ ॥

अर्थात् :- माँ ! इस पृथ्वी पर तुम्हारे सीधे सादे-पुत्र तो बहुत से हैं किन्तु उन सब में ही अत्यंत चपल तुम्हारा बालक हूँ। मेरे जैसे चंचल कोई बिरला ही होगा। शिवे ! मेरा जो यह त्याग हुआ है, यह तुम्हारे लिए कदापि उचित नहीं है- क्योंकि संसार में कुपुत्र का होना संभव है किन्तु माता कही कुमाता नहीं हो सकती ॥३ ॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।

तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४ ॥

अर्थात् :- जगदम्बा! माता ! मैंने तुम्हारे चरणों की सेवा कभी नहीं की। देवी ! तुम्हे अधिक धन भी समर्पित नहीं किया, तथापि मुझ जैसे अधम पर जो तुम अनुपम स्नेह करती हो इसका कारण यह है कि संसार में कुपुत्र तो पैदा हो सकता है पर कहीं भी कुमाता नहीं हो सकती ॥४ ॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।

इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता,निरालम्बो लम्बोदरजननि कंयामि शरणम् ॥५ ॥

अर्थात् :- हे श्री गणेश को जन्म देनेवाली माता ! मुझे नानाप्रकार की सेवाओं में मुझे व्यग्र रहना पड़ता था।इस लिए ८५ वर्ष से अधिक अवस्था बीत जाने पर मैंने देवता ओं को छोड़ दिया है। अब उनकी सेवा पूजा मुझसे नहीं हो पाती , अतएव उनसे कुछ भी

सहायता मिलने की आशा नहीं है। इस समय यदि तुम्हारी कृपा नहीं होगी तो मैं अवलंब होकर किसकी शरण में जाऊंगा ? ॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥

अर्थात् :- हे माता अपर्णा ! तुम्हारे मन्त्र का एक भी अक्षर मेरे कान में पड़ जाए तो उसका फल यह होगा कि मूर्ख चंडाल भी मधुपाक के सामान मधुर वाणी उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है; दीन मनुष्य करोड़ो मुद्राओं से संपन्न होकर चिरकाल तक निर्भर विहार करता रहता है। जब मंत्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे रहते हैं उनके जप से प्राप्त उत्तम फल कैसा होगा ? इसको कौन मनुष्य जान सकता है ? ॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

अर्थात् :- भवानी ! जो अपने अंगो में चिता की राख लपेटे रहते हैं, जिनका विष ही भोजन है, जो दिगंबरधारी {नग्न रहनेवाले}हैं, मस्तक पर जटा और कंठ में नागराज वासुकी को हार के रूप में धारण करते हैं तथा जिनके हाथ में कपाल शोभा पाता है, ऐसे भूतनाथ पशुपति भी जो एक मात्र `जगदीश' की पदवी धारण करते हैं, इसका क्या कारण है ? यह महत्व उन्हें कैसे मिला ? यह केवल तुम्हारे पाणिग्रहण की परिपाटी का फल है। अर्थात् – तुम्हारे साथ विवाह होने से उनका महत्व बढ़ गया है ॥७॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे,न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै, मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥

अर्थात् :- मुख पर चंद्रमा की शोभा धारण करने वाली माँ ! मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है; न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की

अकांक्षा; अतः तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म मृडानी, रुद्राणी, शिव-शिव भवानी इन नामों का जपते हुए बीते ॥८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः, किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे, धत्से कृपामुचितमम्ब! परं तवैव ॥९॥

अर्थात् :-माँ श्यामा ! नानाप्रकार के पूजन सामग्रियों से सभी विधिपूर्वक तुम्हारी आराधना मुझसे न हो सकी। सदा कठोर भाव का चिंतन करने वाली मेरे वाणी ने कौन सा अपराध नहीं किया है ? फिर भी तू स्वयं ही प्रयत्न करके मुझ अनाथ पर जो किंचित कृपा दृष्टि जो रखती हो , माँ! यह तुम्हारे ही योग्य है। तुम्हारे जैसी दयामयी माता ही मेरे जैसे कुपुत्र को भी आश्रय दे सकती है ॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

अर्थात् : – माता दुर्गे ! करुणासिंधु महेश्वरी ! कई विपत्तियों में फंस कर आज जो तुम्हारा स्मरण करता हूँ { और इससे पहले कभी नहीं किया } इसे मेरी शठता न मान लेना- क्योंकि भूख,प्यास से पीड़ित बालक माता का ही स्मरण करते है ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।

अपराधपरम्परापरं, न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

अर्थात् :-हे जगदम्बे ! मुझ पर तुम्हारी कृपा बनी हुई है इसमें आश्चर्य की बात है, पुत्र अपराध पर अपराध करता जाता हो फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती ॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।

एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

अर्थात् : – हे महादेवी ! मेरे सामान कोई पातकी नहीं और तुम्हारे सामान कोई पाप हरिणी नहीं। ऐसा जानकार आप जो उचित समझें वही करो ॥१२ ॥

अर्पण :—सम्पूर्ण पूजा के अन्त में भगवती को अर्पण करें।

गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाण मत्कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवतु मे देवि! तत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥

अनया पूजया महामाया बगलामुखी प्रियतां न मम।

तदुपरान्त महामाया से प्रार्थना करें-

माँ बगले! मेरे द्वारा की गयी पूजा को स्वीकार करते हुए, मुझ पर प्रसन्न हों।

मन्त्रमहोदधि दशम तरङ्ग में कथित बगलामुखी साधना

श्लो ॥अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां स्तम्भिनी बगलामुखी। प्रणवं गगनं पृथ्वी शान्तिबिन्दुयुतं बग॥

लामुखाक्षो गदीसर्वं दुष्टानांवाहलीन्दुयुक्। मुखं पदं स्तम्भयान्ते जिह्वां कीलय वर्णकाः॥

बुद्धिं विनाशयान्ते तु बीजं तारोऽग्निसुन्दरी। षट् त्रिंशदक्षरो मन्त्रो नारदो मुनिरस्य तु॥

छन्दोऽपि बृहती ज्ञेयं देवता बगलामुखी। नेत्राक्षसायकनव पञ्चकाष्ठाभिरङ्गकम्॥

अब शत्रुओं के मुख पीठ जिह्वा आदि का स्तम्भन करने वाले बगलामुखीका मन्त्र बतलाता हूँ ।

प्रणव (ॐ),पृथ्वी(ल),शान्ति (ई) एवं बिन्दु (अनुस्वार)के सहित गगन (ह्),अर्थात् (ह्लीं), फिर 'बगलामु', फिर साक्ष इकार युक्त गदी (ख) अर्थात् (खि),फिर 'सर्वदुष्टानां वा', फिर इन्दु (अनुस्वार) युक् हली (च)अर्थात् (चं), फिर 'मुखं पदं स्तम्भय' के बाद 'जिस्वां कीलय बुद्धिं विनाशय', फिर बीज(ह्लीं),तार(ॐ),फिर अग्निसुन्दरी(स्वाहा)लगाने से छत्तीस अक्षरों का मन्त्र निष्पन्न होता है।

इस मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है।

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐस्वाहेति षट्त्रिंशदर्णः।

इस मन्त्र के नारद ऋषि हैं, बृहती छन्द है, बगलामुखी देवता हैं,मन्त्र के २, ५, ५, ६, ५, एवं १० अक्षरों से षडङ्गन्यास करना चाहिए।

विनियोग-'ॐ अस्य श्रीबगलामुखीमन्त्रस्य नारदऋषिः बृहतीछन्दः,बगलामुखीदेवता शत्रूणां स्तम्भनार्थे जपे विनियोगः'।

प्रकारान्तर से बीज (ह्लीं)के स्थान में ह्रीं तथा छन्द (बृहती) की स्थान में त्रिष्टुप् कर देने से मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार बनता है।

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहेति षट्त्रिंशदर्णः।

	षडङ्गन्यास	करन्यास
ॐ (ह्लीं)ह्रीं	हृदयाय नमः	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
ॐ बगलामुखि	शिरसे स्वाहा	तर्जनीभ्यां नमः
ॐ सर्वदुष्टानां	शिखायै वषट्	मध्यमाभ्यां नमः
ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय	कवचाय हुम्	अनामिकाभ्यां नमः
ॐ जिह्वां कीलय	नेत्रत्रयाय वौषट्,	कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ बुद्धिं विनाशय ह्रीं(ह्लीं) ॐ स्वाहा	अस्त्राय फट्	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः

॥अथ ध्यानम्॥सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् ,

हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्त्रग्युताम्॥

हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसना संबिभ्रतीं भूषणैः,

व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत् ॥

सुवर्ण निर्मित सिंहासन पर विराजमान, तीन नेत्रों वाली पीत वस्त्र से उद्दीप्त सुवर्ण के समान आभा वाली, चन्द्रकला युक्त मुकुट धारण की हुई, चम्पककी माला पहने हुये, अपने हाथों में मुद्गर, पाश, वज्र एवं शत्रु की जीभ लिए हुये, अपने समस्त अङ्गों में भूषण धारण किये हुये, तीनों लोकों को स्तम्भित करने वाली बगलामुखी का ध्यान करना चाहिए।

इस प्रकार ध्यान कर उक्त मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिए। चम्पा के फूलों से दश हजार आहुतियाँ देनी चाहिए,तथा पूर्वोक्त पीठ पर इनका पूजन करना चाहिए।

अब बगलामुखी का पूजन यन्त्र कहते हैं।त्रिकोण, षड्दल, अष्टदल,षोडशदल एवं

भूपुर से संयुक्त पूजायन्त्र को चन्दन, अगरु, कपूर आदि अष्टगन्ध के द्रव्यों से निर्माण करना चाहिए।

अब यन्त्र पूजा की विधि कहते हैं।

मध्य में देवी की पूजा तथा त्रिकोण में सत्त्व, रज, तम आदि तीनों गुणों की, षट्कोण में षडङ्गपूजा तथा अष्टदल में भैरवों के साथ मातृकाओं का पूजन करना चाहिए।

सोलह दल में १.मङ्गला, २.स्तम्भिनी, ३.जृम्भिणी, ४.मोहिनी,५.वश्या, ६.चला, ७. बलाका, ८.भूधरा, ६.कल्मषा, १०.धात्री, ११.कलना, १२.कालकर्षिणी, १३.भ्रामिका,१४. मन्दगमना, १५.भोगस्था एवं १६.भाविका–इन सोलह शक्तियों की पूजा करनी चाहिए।
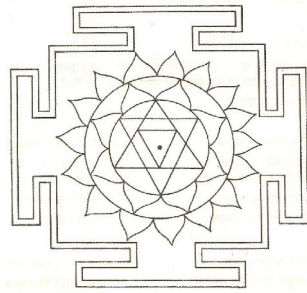
बगलामुखीपूजनयन्त्रम्

भूपुर के पूर्वादि चारों दिशाओं में गणेश,बटुक,योगिनी एवं क्षेत्रपाल का पूजन करे। फिर उसके बाहर अपने अपने आयुधों के सहित इन्द्रादि दशदिक्पालों का पूजन करना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक,देवता, भूत, प्रेत, पिशाचादि सभी को स्तम्भित कर देता है।

आवरण पूजा–

ध्यान श्लोक–सौवर्णासनसंस्थितां–में वर्णित स्वरूप का साधक ध्यान कर मानसोप- चार से विधिवत् पूजन कर शंख का अर्घ्यपात्र स्थापित करे। फिर पीठ पूजा कर मूल मन्त्र से देवी की मूर्त्ति की कल्पना कर पुष्प,धूपादि उपचार समर्पित कर पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

तदनन्तर उनकी अनुज्ञा लेकर यन्त्र पर आवरण पूजा करे।

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि बगले परिवारार्चनाय मे॥

"श्री पीताम्बरे आवरण देवता पूजनार्थं अनुज्ञां देहि ।"

सर्वप्रथम त्रिकोण में मूलमन्त्र द्वारा देवी बगलामुखी की पूजा करे। फिर त्रिकोण में सत्त्व रज और तम इन तीनों गुणों की यथा–

ॐ सं सत्त्वाय नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ तं तमसे नमः।

इसके पश्चात् षट्कोण में षडङ्गपूजा–ॐह्लीं(ह्रीं) हृदयाय नमः,ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा,ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्,ॐ वाचंमुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं,ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्,ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

इसके बाद अष्टदल में अष्टभैरवों सहित ब्राह्मी आदि अष्टमातृकाओं की पूजा करनी चाहिए।

१- ॐ असिताङ्गब्राह्मीभ्यां नमः

२-ॐ रुरुमाहेश्वरीभ्यां नमः

३-ॐ चण्डकौमारीभ्यां नमः

४-ॐ क्रोधवैष्णवीभ्यां नमः

५-ॐ उन्मत्तवाराहीभ्यां नमः

६-ॐ कपालीन्द्राणीभ्यां नमः

७- ॐ भीषणचामुण्डाभ्यां नमः

८-ॐ संहारमहालक्ष्मीभ्यां नमः

इसके बाद षोडशदल में मङ्गला आदि शक्तियों की पूजा करनी चाहिए।

१. ॐ मङ्गलायै नमः, ७.ॐ बलाकायै नमः, १३. ॐ भ्रामिकायै नमः

२. ॐ स्तम्भिन्यै नमः, ८.ॐ भूधरायै नमः, १४. ॐ मन्दगमनायै नमः

३. ॐ जृम्भिण्यै नमः ९.ॐ कल्मषायै नमः १५. ॐ भोगस्थायै नमः

४.ॐ मोहिन्यै नमः, १०. ॐ धात्र्यै नमः, १६.ॐ भाविकायै नमः

५. ॐ वश्यायै नमः, ११. ॐ कलनायै नमः,

६. ॐ चलायै नमः, १२. ॐ कालकर्षिण्यै नमः,

फिर भूपुर के पूर्वादि चारों दिशाओं में क्रमशः गणेश,बटुक,योगिनी एवं क्षेत्रपाल की पूजा करनी चाहिए।यथा–ॐगं गणपतये नमः,पूर्वे,ॐबं बटुकाय नमः,दक्षिणे,ॐ यं योगिनी भ्यो नमः,पश्चिमे,ॐक्षं क्षेत्रपालाय नमः, उत्तरे।

इसके पश्चात भूपुर के बाहर अपनी अपनी दिशाओं में इन्द्रादि दश दिक्पालों की पूजा करनी चाहिए।

ॐ इन्द्राय नमः पूर्वे, ॐ अग्नये नमः आग्नेये,ॐ यमाय नमः दक्षिणे,ॐ निर्ऋतये नमः नैर्ऋत्ये, ॐ वरुणाय नमः पश्चिमे, ॐ वायवे नमः वायव्ये,ॐ सोमाय(कुबेराय)नमः उत्तरे, ॐ ईशानाय नमः ऐशान्यां,ॐ ब्रह्मणे नमः पूर्वेशानयोर्मध्ये, ॐ अनन्ताय नमः पश्चिम नैऋत्ययोर्मध्ये।

फिर दिक्पालकों के पास उनके अपने अपने वज्रादि आयुधों की–

इन्द्रसमीपे वज्राय नमः, अग्निसमीपे शक्तये नमः, यमसमीपे दण्डाय नमः,निर्ऋति समीपे खड्गाय नमः,वरुणसमीपे पाशाय नमः, वायुसमीपे अंकुशाय नमः, सोम(कुबेर)समीपे गदाय नमः,ईशानसमीपे शूलाय नमः,ब्रह्मणःसमीपे पद्माय नमः,अनन्तसमीपे चक्राय नमः।

इस प्रकार आवरण पूजा कर धूपदीपादि उपचारों से विधिवत् देवी की पूजा कर यथासंख्य नियमित जप करना चाहिए।

अब **बगलामुखी के जप के लिए विशेष प्रकार और प्रयोजन** कहते हैं।

साधक पीला वस्त्र पहन कर, पीले आसन पर बैठकर, पीली माला धारणकर, पीला चन्दन लगाकर, पीले पुष्पों से देवी की पूजा करे, तथा पीतवर्णा देवीका ध्यान भी करे, काम्य प्रयोगों में हल्दी की माला का प्रयोग करे तथा १०हजार की संख्या में जप करे।

१.त्रिमधु (शहद्, शर्करा, दूध)मिश्रित तिलों के होम से मनुष्यों को वश में किया जाता है। २.त्रिमधु मिश्रित लवण के होम से निश्चित रूपसे आकर्षण होता है। ३.तेलाभ्यक्त नीम के पत्तों के होम से विद्वेषण होता है। ४.लाल लोण एवं हरिद्रा के होम से शत्रु वर्ग का स्तम्भन होता है।५.श्मशान की अग्नि में रात्रिके समय अङ्गार,धूप, राजी(राई) मैंसा, गुग्गुल

की आहुतियाँ देने से शत्रुओंका नाश होता है। ६.चिता की अग्नि में गिद्ध एवं कौवे के पंख का,सरसों का तेल तथा बहेड़ा एवं गृहधूम का होम करने से शत्रुका उच्चाटन होता है। ७. मधुर त्रय मिश्रित दूर्वा, गुडूची एवं लाजा का जो व्यक्ति होम करता है उसके दर्शन मात्र से रोग ठीक हो जाते हैं।८.पर्वत के शिखर पर,घोर जङ्गल में,नदी के सङ्गम पर तथा शिवालय में ब्रह्मचर्य व्रत पूर्वक एक लाख बगलामुखी मन्त्र का जप करने से सारी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। ९.एक वर्णा गाय के दूध में शर्करा एवं मधु मिलाकर ३०० की संख्या में मूल मन्त्रा-भिमन्त्रित कर उसे पीने से शत्रु के द्वारा पराभव नही होता है। १०.सफेद पलाश की लकड़ी से बनी मनोहर पादुकाओं को आलता से रंग देवे।फिर इस मन्त्र से एक लाख बार अभिम-न्त्रित करे। इस प्रकार की पादुका पहिन कर चलने से मनुष्य क्षण मात्र में सौ योजन की दूरी पार कर लेता है। ११.मधुयुक्त पारा, मैनसिल एवं ताल को पीस कर इस मन्त्र से एक लाख बार अभिमन्त्रित कर उसे अपने सर्वाङ्ग में लेप करे तो वह व्यक्ति मनुष्यों के बीच में रहकर भी उन्हें दिखाई नहीं देता, जिसे इच्छा हो वह ऐसा करके देख सकता है। १२.हरि-ताल एवं हल्दी के चूरे में धतूरे का रस मिलाकर उससे निर्मित षट्कोण में उसी से ह्लीं बीज लिखकर जिस शत्रुका स्तम्भन करना हो उसका द्वितीयान्त(अमुकं)नाम लिखकर पुनः'स्त-

म्भय' लिखे।शेष मन्त्राक्षरों को भूपुर में लिखकर चारों ओर उसे भूपुरसे घेर देवें।उसमें प्राण प्रतिष्ठा कर पीले धागे से उसे घेर देवें।पुनः धूमती हुई कुम्हार की चाक से मिट्टी लेकर सुन्दर बैल बनावे तथा उसके पेट में उस यन्त्र को रखकर, उस पर हरताल का लेप कर, प्रतिदिन उस बैल की पूजा करता रहे, तो ऐसा करने से शत्रुओं की वाणी, गति और समस्त कार्य की परम्परा स्तम्भित हो जाती है। १३.श्मशान स्थान स्थित किसी खपड़े को बायें हाथ में लेकर उस पर चिता के अंगार से बगलामुखी यन्त्र बनावे। पुनः बगलामुखी मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसे शत्रुकी जमीनमें गाड़ देवे,तो उसकी गति स्तम्भित हो जाती है।१४.कफन पर चिता के अङ्गार से यन्त्र निर्माण करे। फिर उस यन्त्र को मेढक के मुख में रखकर उसे पीले कपड़े से बाँध देवे। तदनन्तर पीले पुष्पों से पूजित करे, तो शत्रुवर्ग की वाणी स्तम्भित हो जाती है। १५.जो भूमि दिव्य(उत्तम देवसम्बन्धी)हो, वहाँ इस यन्त्र को लिखें, फिर वृषापत्र (अडूसे)के पत्तों से उसे मार्जित करे तो वह देवता लोगों को भी स्तम्भित कर देता है।१६. इन्द्रवारुणी नामक लता के मूल को सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और उसे किसी

देवस्थान के जल में अथवा दिव्य नदी में डाल देवें तो उससे जल का स्तम्भन हो जाता है।

विशेष क्या कहें साधक के द्वारा सम्यगुपासित होने पर यह मन्त्र शत्रुओं की गतिविधि एवं उनकी बुद्धि को स्तम्भित कर देता है इसमें संदेह नहीं।

इति मन्त्रमहोदधि दशम तरङ्ग में कथित बगलामुखी साधना समाप्त

—&&&&&—

श्री बगलामुखी यन्त्रकी आवरण पूजा (अन्य प्रकार से)

माता महामाया के पूजन के उपरान्त उनके परिवार का पूजन भी एक आवश्यक पूजनांङ्ग है। इसके अभाव में साधक का प्रयास अपूर्ण ही रहेगा। परिवार पूजा के लिये साधक को बगलामुखी यन्त्र का निर्माण करना होगा।

सर्वप्रथम पूजा स्थान पर गाय के गोबर से लीप लें। फिर उस स्थान पर रेत की मोटी पर्त बिछा लें और उसपर हरिद्राचूर्ण से यन्त्रराज का निर्माण करें।यन्त्रका स्वरूप निम्नवत् है-

मंदिर या पूजा स्थान को गाय के गोबर से साफ करना चाहिए। यन्त्र पूजा से पूर्व पूजन सामग्री साधक अपने पास पहले से ही रख लें।पूजा के लिए पीले फूल, चंदन,अक्षत,अर्घ्य पात्र व जल का लोटा होना आवश्यक है,क्योंकि प्रत्येक मन्त्र के अन्त में पुष्प व जल से पूजन व तर्पण किया जाता है।
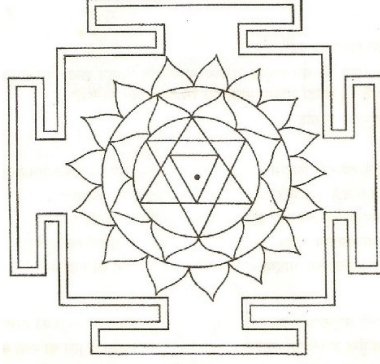
गुरुकी आज्ञा लेकर यन्त्र स्थापना के उपरान्त माँ पीताम्बरा से मानसिक रूप से परिवारार्चन की अनुमति लें, यथा-

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि बगले परिवारार्चनाय मे॥

"श्री पीताम्बरे आवरण देवता पूजनार्थं अनुज्ञां देहि ।"

मूल मंत्र न्यासः—सर्वप्रथम मूल मंत्र से न्यास करें। पहले तीन बार मंत्र से प्राणायाम करें, फिर विनियोग कर ऋष्यादिन्यास करें।

जपमंत्र - **"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।"** (मूलमंत्रकोष) अथवा–

"ॐ ह्ल्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा ।"(सांख्यायन तन्त्र)

मन्त्रोद्धार —प्रणवं स्थिरमायां च ततश्च बगलामुखीम्।

तदन्ते सर्व दुष्टानां ततो वाचं मुखं पदं॥

स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति पद द्वयम्।

बुद्धिं नाशय पश्चात्तु स्थिरमायां समालिखेत्॥

लिखेच्च पुनरोङ्कार स्वाहेति पदमन्ततः।

षटत्रिंशदक्षरी विद्या सर्वसम्पत्करी मता।

यन्त्रोद्धार—बिन्दुस्त्रिकोण - षट्कोण-वृत्ताष्टदलमेव च।

वृत्तं च षोड़शदलं यन्त्रं च भूपुरात्मकम्॥

विनियोग—सीधे हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ें-

"ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारदऋषि, त्रिष्टुप छन्दः, बगलामुखी देवता,ह्लीं बीजम् स्वाहा शक्तिः ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।"(जल पृथ्वी पर छोड़ दें)

ऋष्यादिन्यास—नारद ऋषये नमः शिरसि।(सिर पर दाहिने हाथ से छुएं)

त्रिष्टुप छन्दसे नमः मुखे।(मुँह को छुएं)

बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।(हृदय को छुएं)

ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये।(गुह्यंग में स्पर्श करें)

स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।(पैरो को स्पर्श करें)

करन्यास —ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।(हाथ को अंगूठे का स्पर्श करें)

बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा।(प्रथम अंगुली का स्पर्श करें)

सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्।(मध्यमा का स्पर्श करें)

वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्याम् हुम्।(अनामिका का स्पर्श करें)

जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट।(अंतिम छोटी अंगुली का स्पर्श करें)

बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।(दोनों हथेलियों के आगे व पीछे के भागों का स्पर्श करें)

हृदयादिन्यास —ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।(हृदय को दाहिने हाथ से स्पर्श करें)

बगलामुखि शिरसे स्वाहा।(सिर का स्पर्श करें)

सर्व दुष्टानां शिखायै वषट्।(शिखा का स्पर्श करें)

वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।(कवच बनायें)

जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्।(नेत्रों का स्पर्श करें)

बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा,अस्त्राय फट्।(सिर के पीछे से दायें हाथ से चुटकी बजाते हुये दाहिने हाथ पर बायें हाथ की तर्जनी व मध्यमा से तीन ताली बजायें)

ध्यान — मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप - रत्नवेद्यां,

सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।

पीताम्बराभरण- माल्य-विभूषिताङ्गीं,

देवीं स्मरामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम्॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीड़यन्तीम्।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥

इस प्रकार माता का ध्यान करके उनका मानसोपचार(पञ्चोपचार) पूजन करें, फिर बाह्य पूजन (आवरण पूजा) आरम्भ करें।

सर्व प्रथम यन्त्र का शुद्ध जल से प्रक्षालन करके चन्दन आदि चढ़ायें और मूल मंत्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।अर्घ्य स्थापना करें। अपने बायीं ओर चतुरस्रवृत्तत्रिकोणात्मक मण्डल बनाकर उसके मध्य में **"ॐ पृथिव्यै नमः। ॐकमठाय नमः। ॐ शेषाय नमः। "** कहते हुये गन्धाक्षत,पुष्पादि से पूजन करें और **"ॐ अग्निमण्डलाय दशकलात्मने बगलार्घ्य पात्रासनाय नमः"** कहकर उस त्रिकोण के ऊपर अर्घ्यपात्र रखकर **"ॐ दशकलात्मनेअग्निमण्डलाय नमः।"** इससे गन्धाक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें।

चतुरस्रवृतत्रिकोणात्मक मण्डल का स्वरूप-

अग्नि की दस कलाएँ—
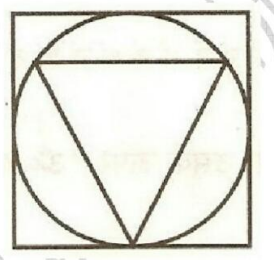
1.यं धूम्रर्चिषे नमः, 2.रं ऊष्मायै नमः,3.लं ज्वालिन्यै नमः, 4.वं ज्वालिन्यै नमः, 5.शं विस्फुल्लिङ्गायै नमः, 6.शं सुश्रियै नमः, 7.सं स्वरूपायै नमः, 8.हं कपिलायै नमः, 9.लं हव्यवाहायै नमः, 10.क्षं कव्यवाहायै नमः।

फिरसे,**ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्री पीताम्बरार्घ्यपात्राय नमः**।कहकर अर्घ्य पात्र का पूजन करें।

द्वादश कलाएँ—1.कं बं तपस्विन्यै नमः, 2.खं वं तापिन्यै नमः, 3.गं फं धूम्रायै नमः, 4.घं पं मरीच्यै नमः, 5.ङं नं ज्वालिन्यै नमः, 6.चं धं रुच्यै नमः, 7.छं दं सुषुम्नायै नमः, 8.जं थं बोगदायै नमः, 9.झं तं विश्वायै नमः, 10.ञं णं बोधिन्यै नमः, 11.टं ढं धारिण्यै नमः, 12.ठं जं क्षमायै नमः।

तदनन्तर यन्त्र का प्राणप्रतिष्ठा करें—

क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ॢं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं – अर्घ्यसे पात्रमें गङ्गाजल भरें।

बादमें, **ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने बगलार्घ्यामृताय नमः।**

षोडशकलाएँ—

1.अं अमृतायै नमः, 2.आं मानदायै नमः, 3.इं पूषायै नमः, 4.ईं तुष्टायै नमः, 5.उं पुष्टायै नमः, 6.ऊं रत्यै नमः, 7.ऋं धृत्यै नमः, 8.ॠं शशिन्यै नमः, 9.ॢं चन्द्रिकायै नमः, 10.ॡं कान्त्यै नमः, 11.एं ज्योत्स्नायै नमः, 12.ऐं श्रियै नमः, 13.ओं प्रीत्यै नमः, 14.औं अङ्गदायै नमः, 15.अं पूर्णायै नमः, 16.आं पूर्णामृतायै नमः।

तत्पश्चात् अङ्कुशमुद्रासे सूर्यमण्डलको आवाहन करें, षडङ्गन्यास करिके धेनुमुद्रासे आत्मीकरण करें। जलमें भगवति को आवाहन करिके शङ्खमुद्रा और योनिमुद्रा प्रदर्शन करें।मूलमन्त्रके साथ गन्धाक्षता से देवीका पूजन करें।मत्स्यमुद्रासे जलको आच्छादन कर,आठबार मूलमन्त्रसे अभिमन्त्रित करें।फिर उस पवित्र जलसे पूजासामग्रियों पर संप्रोक्षण करें।

तदुपरान्त यन्त्रकी आवरण पूजा प्रारम्भ करें—

यन्त्रके उत्तरभाग में **"गुं गुरुभ्यो नमः"**; दक्षिणभागमें **"गं गणपतये नमः"** कहकर पुष्पाक्षत अर्पण करें। यन्त्रके मध्यसे पूजा शुरू करें।

पीठपूजा—ॐ मं मण्डूकाय नमः, ॐ कां कालाग्नि रुद्राय नमः,ॐ मं मूलप्रकृत्यै नमः, ॐ आं आधारशक्त्यै नमः, ॐ कूं कूर्माय नमः, ॐ धं धराय नमः, ॐ सुं सुधासिन्धवे नमः, ॐ श्वें श्वेतदीपाय नमः, ॐ सुं सुराङ्घ्रिपेशवे नमः, ॐ हें हेमपीठाय नमः।

अग्न्यादि पीठपाद चतुष्टये–ॐ धं धर्माय नमः, ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः, ॐ वैं वैराग्याय नमः, ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः।

पूर्वादि पीठगात्र चतुष्टये– ॐ अं अधर्माय नमः, ॐ अं अज्ञानाय नमः, ॐ अं अवैराग्याय नमः, ॐ अं अनैश्वैर्याय नमः।

मध्ये– ॐ अं अनन्ताय नमः, ॐ तं तत्त्वपदमासनाय नमः, ॐ विं विकारात्मक केशरेभ्यो नमः, ॐ प्रं प्रकृत्यात्मक पत्रेभ्यो नमः, ॐ पं पंचाशत् वर्ण कर्णिकायै नमः, ॐ सुं सूर्यमण्डलाय नमः, ॐ इं इंन्द्रमण्डलाय नमः, ॐ पां पावकमण्डलाय नमः, ॐ सं सत्त्वाय नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ तं तमसे नमः, ॐ आं आत्मने नमः, ॐ अं अन्तरात्मने नमः, ॐ पं परमात्मने नमः, ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः, ॐ मां मायातत्त्वाय नमः, ॐ कं कलातत्त्वाय नमः, ॐ निं निद्यातत्त्वाय नमःॐ पं परमतत्त्वाय नमः।

पूर्वादि दिशामें अष्टदल शक्तिपूजा–ॐ जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ नित्यायै नमः, ॐ विलासिन्यै नमः, ॐ दोग्ध्रायै नमः, ॐ अघोरायै नमः।

मध्ये–ॐ मङ्गलाय नमः।

गायके दूधसे या गङ्गाजलसे यन्त्रके ऊपर प्रोक्षण करते हुए मन्त्र पढें–

ॐ ह्लीं बगलामुखी योगपीठाय नमः।

हाथमें पुष्प लिए अञ्जलिबद्ध होकर मन्त्रोच्छारण पूर्वक आह्वानी, स्थापिनी, सन्निधापिनी, सन्निरोधिनी मुद्राएँ प्रदर्शन करते हुए देवीको आवाहन करें। हुं के साथ अवगुण्ठित से–

श्री पीताम्बरे सकलीकृता भव, सकलीकृता भव। श्री पीताम्बरे इहामृतीकृतो भव, इहामृतीकृतो भव। तदनन्तर, धेनुमुद्रा, महामुद्राओंसे परम्बिकाके अङ्गोंमें षडङ्गन्यास कर, प्राणप्रतिष्ठा करना चाहिए।

प्राणप्रतिष्ठा—

विनियोगः–ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मा विष्णु रुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामाथर्वणश्छन्दांसि, पराख्या प्राणशक्तिः देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, देवी प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ ब्रह्म विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुः सामाथर्वण छन्दोभ्यो नमःमुखे।पराख्या प्राणशक्तिःदेवतायै नमः हृदि। आंबीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमःपादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे।

अंगों को स्पर्श करते हुये न्यास करें।

ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः।

ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्द स्पर्श रूप रस गंधात्मने ईं शिरसे स्वाहा।

ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्त्वक्चक्षुर्जिह्वा घ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट्।

ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणि पाद पायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुँ।

ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादान विहरणोत्सर्गानन्दात्मने ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ यं रं लं वं शं षं सं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कार चित्तात्मने अः अस्त्राय फट्।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः श्री बगलामुखी देवता प्राणा इह प्राणा।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः श्री बगलामुखी देवता जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्री बगलामुखी देवता सर्वेन्द्रियाणि इहस्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः श्री बगलामुखी देवता वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राणा पदादीनि इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा (इस मंत्र को तीन बार पढ़ें)

तत्पश्चात् पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचारसे यन्त्रका पूजन करें और भगवती माँ बगला देवी की अनुमति से—

सच्चिन्मयो परे देवी परामृतरस प्रिये। अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे॥

प्रथमावरण पूजा —
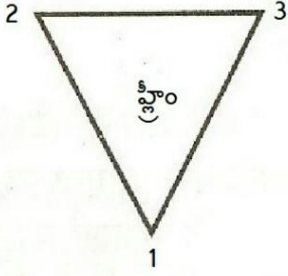
1.ॐ सं सत्त्वाय नमः ॐ सत्त्व श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

2.ॐ रं रजसे नमः ॐ रज श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

3.ॐ तं तमसे नमः ॐ तम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ अभीष्टं सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्। (गन्ध पुष्पाक्षताएँ चढायें)

द्वितीयावरण पूजा —
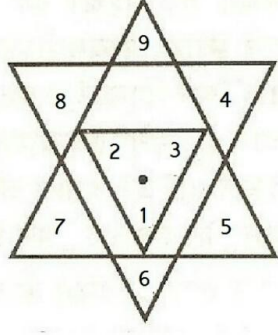
4.ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। 5.ॐ बगलामुख्यै शिरसे स्वाहा। 6.ॐसर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। 7. ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं। 8. ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। 9. ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।

(गन्ध पुष्पाक्षताएँ चढायें)

तृतीयावरण पूजा —
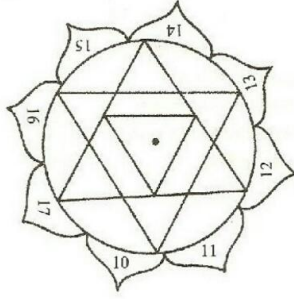
10.ॐ ब्रह्माम्यै नमः। 11.ॐ माहेश्वर्यै नमः। 12.ॐ कौमार्यै नमः। 13.ॐ वैष्णव्यै नमः। 14.ॐ वाराह्यै नमः। 15.ॐ इन्द्राण्यै नमः। 16.ॐ चामुण्डायै नमः। 17.ॐ महाल क्ष्म्यै नमः।

ॐ अभीष्टं सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्। (गन्ध पुष्पाक्षताएँ चढायें)

चतुर्थावरण पूजा —
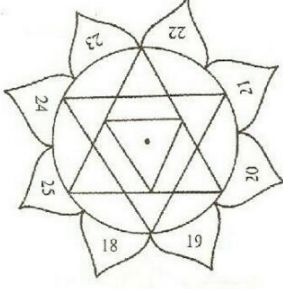
18.ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः। 19.ॐ रुरुभैरवाय नमः। 20.ॐ चण्डभैरवाय नमः21.ॐ क्रोधभैरवाय नमः। 22.ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः। 23.ॐ कपाल भैरवाय नमः। 24.ॐ भीषण भैरवाय नमः। 25.ॐ संहारभैरवाय नमः।

ॐअभीष्टं सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्। (गन्ध पुष्पाक्षताएँ चढायें)

पञ्चमावरण पूजा —
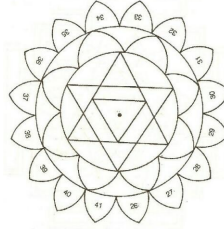
26.ॐ मङ्गलायै नमः। 27.ॐ स्तम्भिन्यै नमः। 28.ॐ जृम्भिन्यै नमः। 29.ॐ मोहिन्यै नमः। 30.ॐ वश्यायै नमः। 31.ॐ बलाकायै नमः। 32.ॐ चलायै नमः। ॐ 33.भूधरायै नमः। 34.ॐ कल्मषायै नमः। 35.ॐ धात्र्यै नमः। 36.ॐ कलनायै नमः। 37.ॐ कालकर्षिण्यै नमः। 38.ॐ भ्रामिकायै नमः। 39.ॐ मन्दगमनायै नमः। 40.ॐ भोगस्थायै नमः। 41.ॐ भाविकायै नमः।

ॐ अभीष्टं सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्। (गन्ध पुष्पाक्षताएँ चढायें)

षष्ठावरण पूजा —
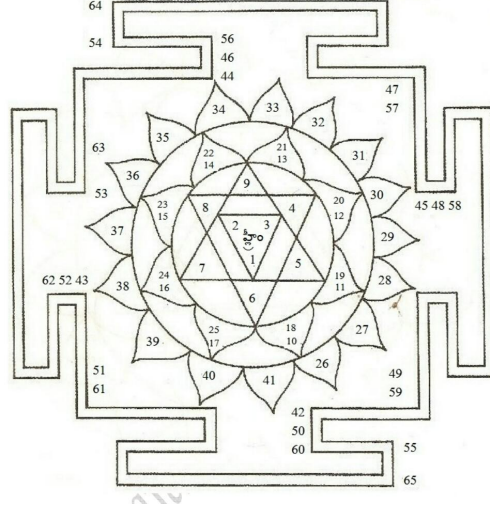
42.ॐ गं गणपतये नमः। 43.ॐ बं बटुकाय नमः। 44.ॐ यां योगिनीभ्यो नमः। 45.ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः।

ॐ अभीष्टं सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।

पूर्वदिशा से लेकर अग्निकोण क्रमसे–

46.ॐ लं इन्द्राय नमः। 47.ॐ रं अग्नये नमः। 48.ॐ मं यमाय नमः। 49.ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। 50.ॐ वं वरुणाय नमः। 51.ॐ यं वायवे नमः। 52.ॐ कुं कुबेराय नमः। 53.ॐ हं ईशानाय नमः। 54.ॐ आं ब्रह्मणे नमः। 55.ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।

दिक्पालकों की पूजानन्तर उनके समीप अपने अपने आयुधों(अस्त्रों)की पूजा करें।

56.ॐ वं वज्राय नमः। 57.ॐ शं शक्तये नमः। 58.ॐ दं दण्डाय नमः। 59.ॐ खं खड्गाय नमः। 60.ॐ पं पाशाय नमः। 61.ॐ अं अङ्कुशाय नमः। 62.ॐ गं गदाय नमः। 63.ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। 64.ॐ पं पद्माय नमः। 65.ॐ चं चक्राय नमः।

ॐ अभीष्टं सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् नमः। (गन्ध पुष्पाक्षताएँ चढायें)अन्त में धूप दीप नैवेद्यादियों से यन्त्र पूजा समाप्त कर,108 बार मन्त्र जाप करें।

इति श्री बगलामुखी यन्त्रपूजा विधिः समाप्तः

॥अथ बगलापञ्जर स्तोत्रम्॥

यह स्तोत्र स्वरक्षा कारक एवं श्रीवृद्धि कारक है। यह अति गोपनीय व रहस्यपूर्ण पञ्जर अति दुर्लभ तथा परीक्षित है। इस पञ्जर का जप अथवा पाठ करने वाला साधक प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का सोपान करता है। घोर दारिद्रय व विघ्नों के नाशक इस स्तोत्र का पाठ करनेवाले साधक की माँ बगला स्वयं रक्षा करती हैं। अरिदल साधक को मूक होकर देखते रह जाते हैं।

॥ सूत उवाच ॥

सहस्त्रादित्यसंकाशं शिवं साम्बं सनातनम्। प्रणम्य नारदः प्राह विनम्रो नतकन्धरः ॥१॥

॥ श्री नारद उवाच ॥

भगवन् साम्ब तत्त्वज्ञ सर्वदुःखापहारक। श्रीमत्पीताम्बरादेव्याः पञ्जरं पुण्यदं सताम्॥२॥

प्रकाशय विभो नाथ कृपां कृत्वा ममोपरि। यद्यहं तव पादाब्जधूलिधूसरितोऽभवम्॥३॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

विनियोग च ऋष्यादिन्यास:-ॐ अस्य श्रीमद्बगलामुखीपीताम्बरा पञ्जररूपस्तोत्र मन्त्रस्य भगवते नारदऋषये नमःशिरसि,अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे,जगद्वश्यकरीश्रीपीताम्बरा बगलामुखी देवतायै नमो हृदये,ह्लीं बीजाय नमो दक्षिणस्तने स्वाहा शक्तये नमो वामस्तने,क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, मम विपक्ष परसैन्यमन्त्रतन्त्रयन्त्रादिकृत क्षयार्थं श्रीमत्पीताम्बराबगलादेव्याः प्रीतये जपे विनियोगः।करसम्पुटेन मूलेन करशुद्धिः।ह्लामिति षट्दीर्घेण षडङ्गः।मूलेन व्यापकन्यासं कुर्यात्।

ह्लां, ह्लीं, ह्लूं, ह्लैं, ह्लौं, ह्लः से षडङ्गन्यास करें।

व्यापक न्यास :-

ॐह्लीं अगुष्ठाभ्यां नमः।ॐबगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा।ॐ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्।ॐवाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं।ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐबुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकर पृष्टाभ्यां फट्।

इसी प्रकार मूल मन्त्र से अङ्गन्यास करें-

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा।सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।ॐ वाचं मुखं

पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्।ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा, अस्त्राय फट्।

ध्यानम् :–

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप - रत्नवेद्यां, सिंहासनोंपरिगतां परिपीतवर्णाम्।

पीताम्बराभरण-माल्य - विभूषिताङ्गी, देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर - वैरि-जिह्वाम्॥

इसके उपरान्त मानस पूजा करें-

श्री पीताम्बरायै नमः लं पृथिव्यात्मकं गंधं परिकल्पयामि।

श्री पीताम्बरायै नमः हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

श्री पीताम्बरायै नमः यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।

श्री पीताम्बरायै नमः रं वह्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि।

श्री पीताम्बरायै नमः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि।

श्री पीताम्बरायै नमः सं सर्वतत्त्वात्मकं सर्वोपचारपूजां परिकल्पयामि।

इसके उपरान्त महामाया को योनिमुद्रा से प्रणाम करके स्तोत्र का पाठ शुरू करें-

॥ श्रीशिव उवाच ॥

पञ्जरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पापप्रणाशनम्।

यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नराः क्वचित् ॥१ ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरा देवी बगला बुद्धिवर्धिनी ।

पातु मामनिशं साक्षात् सहस्त्रार्कसमद्युतिः ॥२ ॥

शिखादिपाद पर्यन्तं वज्रपञ्जरधारिणी ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद्ब्रह्मास्त्रविद्या या पीताम्बर विभूषिता ॥३ ॥

बगला मामवत्वत्र मूर्धभागं महेश्वरी ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामाङ्कुशकला पातु बगला शास्त्रबोधिनी ॥४ ॥

पीताम्बरा सहस्त्राक्षा ललाटं कामितार्थदा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरसुधारिणी ॥५ ॥

कर्णयोश्चैव युगपद् अतिरत्नप्रपूजिता ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा ॥६ ॥

पीतपुष्पैः पीतवस्त्रैः पूजिता वेददायिनी ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला ब्रह्माविष्ण्वादिसेविता ॥७ ॥

पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद् भ्रुवौ ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला वलिदा पीतवस्त्रधृक् ॥८ ॥

अधरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वां च मुखगां मम ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरसुधारिणी ॥१ ॥

गले हस्ते तथा बाह्वोः युगपद् बुद्धिदा सताम् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला दिव्यस्रगनुलेपना॥ १० ॥

हृदये च स्तनौ नाभौ करावपि कृशोदरी।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीतवस्त्रघनावृता॥११॥

जङ्घायां च तथा चोर्वोर्गुल्फयोश्चातिवेगिनी।

अनुक्तमपि यत् स्थानं त्वक्केशनखलोमकम्॥ १२ ॥

असृङ्मांसं तथाऽस्थीनि सन्धयश्चापि मे परा॥

॥ फलश्रुति॥

इत्येतद् वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः॥१३॥

पञ्जरं बगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यनाशनम्। पञ्जरं यः पठेत् भक्त्या स विघ्नैर्नाभिभूयते॥१४॥

अव्याहतगतिश्चास्य ब्रह्मविष्ण्वादिसत्पुरे। स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नाऽरयस्तं कदाचन॥१५॥

प्रबाधन्ते नरव्याघ्रं पञ्जरस्थं कदाचन। अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि॥१६॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वाऽनर्थविनाशनम्। महादारिद्र्यशमनं सर्वमाङ्गल्यवर्धनम्॥ १७॥

विद्याविनयसत्सौख्यं महासिद्धिकरं परम् । इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पञ्जरं साधु गोपितम्॥१८॥

पठेत्स्मरेद्ध्यानसंस्थः स जीयान् मरणान् नरः।यः पञ्जरं प्रविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि॥१९॥

कौलिकोऽकौलिको वापि व्यासवद्विचरेद्भुवि।चन्द्रसूर्यप्रभुर्भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि॥२०॥

॥ श्री सूत उवाच॥

इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजं। भवशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारम्॥

स्मरणमतिशयेन प्राप्तिरेवात्र मर्त्यः। यदि विशति सदा वै पञ्जरं पण्डितः स्यात्॥ २१॥

॥ इति श्रीपरमरहस्यातिरहस्ये पीताम्बरापञ्जर स्तोत्रं समाप्तम्॥

॥ अथ पञ्जरन्यास स्तोत्रम् ॥

(दिग्रक्षण प्रयोगः)

बगला पूर्वतो रक्षेद् आग्नेय्यां च गदाधरी। पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैर्ऋते ॥१ ॥

जिह्वाकीलिन्यतो रक्षेत्पश्चिमे सर्वदा हि माम् ।वायव्ये च मदोन्मत्ता कौबेर्यां च त्रिशूलिनी ॥२ ॥

ब्रह्मास्त्रदेवता पातु ऐशान्यां सततं मम। संरक्षेन् मां तु सततं पाताले स्तब्धमातृका ॥३ ॥

ऊर्ध्वं रक्षेन् महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी। एवं दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥४ ॥

एवं न्यासविधिं कृत्वा यत् किञ्चिज्जपमाचरेत् ।तस्याः संस्मरणादेव शत्रूणां स्तम्भनं भवेत् ॥५ ॥

इस पञ्जर न्यास स्त्रोत का पाठ जपादि से पूर्व करना चाहिये ।इस स्तोत्र का पाठ करने से साधक पर साक्षात् भगवती पीताम्बरा का कवच बन जाता है, और उसके स्मरण मात्र से ही शत्रुओं की गति, बुद्धि और मुख स्तम्भित हो जाते हैं।

॥ इति पञ्जरन्यासस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ षट् त्रिंशदक्षर मंत्र - विधान ॥

जपमंत्र - **"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।"** (मूलमंत्रकोष)

"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।" ऐसा भी पाठभेद है।

॥ ध्यान ॥मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डप रत्नवेद्यां, सिंहासनो परिगतां परिपीत-वर्णाम्।

पीताम्बराभरण माल्यविभूषिताङ्गी देवीं स्मरामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम् ॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥

विनियोगः—ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्री बगलामुखी प्रीत्यर्थे मम सर्व शत्रूणां स्तम्भनार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—नारद ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदये। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयो। श्री बगलामुखी प्रीत्यर्थे मम सर्व शत्रूणां स्तम्भनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

	करन्यासः	हृदयादिन्यासः
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगलामुखी	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्वदुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
वाचं मुखं स्तम्भय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
जिह्वां कीलय	कनिष्टिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

बगलामुखी उपासना शत्रुनाशक है तो लक्ष्मी प्राप्ती कारक भी, रोग स्तंभन में मृत्युञ्जय के साथ इसका प्रयोग भी करना चाहिये परन्तु भावना यह रहे की इससे रोग व शत्रु का स्तंभन हो रहा है। शत्रु द्वारा किये गये अभिचार को भी शमन करती है।

ऐसी स्थिति में भगवति बगलामुखि का अभिषेक पहिले सरसों के तेल से करके स्तोत्र पढ़कर फिर दुग्धादि से अभिषेक करे। अलग-अलग कामनाओं के लिए अलग-अलग मंत्र व स्तोत्र तथा हवन अभिषेक द्रव्य है।

जिस मंत्र में "र" कार का अभाव होता है वह मंत्र विलम्ब से फल देता है। अतः "ह्लीं" के अलावा "र" कार युक्त बगलाबीज मंत्र "ह्ल्रीं" का प्रयोग भी मिलता है।

उपर्युक्त 36 अक्षरी के अलावा सांख्यायन तंत्र में दूसरे मंत्र का उल्लेख है। इसमें रेफ हीन बीज को कीलित व स्तंभित कहा गया है तथा रेफयुक्त (ह्रीं) बीज मंत्र को श्रेष्ठ माना है।

अधिकांश साधक इसी मंत्र का प्रयोग करते हैं।

जपमंत्र - **"ॐ ह्ल्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा ।"**

विनियोग -ॐ अस्य श्री बगलामुखी मंत्रस्य नारद ऋषिः,त्रिष्टुप्छन्दः,श्री बगलामुखी देवता ह्ल्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, प्रणवः कीलकं, श्री महामाया बगलामुखी देवता वरप्रसाद सिद्धि द्वारा मम सन्निहितानाम् असन्निहितानाम् विरोधिनां सर्वदुष्टानां वाङ्मुखबुद्धिनां गतिं स्तभनार्थे जिह्वां कीलनार्थे सर्वोपद्रव शमनार्थे ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास-ॐअस्य श्रीबगलामुखी मंत्रस्य नारद ऋषिये नमःशिरसि।त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। बगलामुख्यै नमः हृदि।ह्ल्रीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। प्रणव कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

	करन्यास	हृदयादिन्यास
ॐ ह्ल्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगलामुखी	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्वदुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
वाचं मुखं पदं स्तंभय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ

जिह्वां कीलय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
बुद्धिं विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

अन्य मंत्र-(४८ अक्षरात्मक मंत्र) - निम्न मंत्र का दुर्गा सप्तशती के संपुट लगाकर प्रयोग करने से भूमि दोष,प्रेतादि दोष, राज्य शत्रु बाधा दमन होकर बंद होने के कागार पर पहुचने वाले उद्योगो में भी तरक्की हुई अनुभूत है।

विनियोग- ॐ अस्य श्री बगलामुखी ब्रह्मास्त्र मंत्रस्य भैरव ऋषिः, विराट् छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, क्लीं बीजं, ऐं शक्तीः, श्रीं कीलकं, श्री महामया बगलामुखी वरप्रसाद सिद्धि द्वारा मम सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास-भैरव ऋषये नमः शिरसि। विराट् छन्दसे नमः मुखे। बगलामुखी देवतायै नमः हृदि। क्लीं बीजाय नमःगुह्ये। ऐं शक्तये नमः पादयो। श्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

मंत्र–ॐ **ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने ममरिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छित कार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा।**

	करन्यास	हृदयादिन्यास
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्री बगलानने	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
मम रिपून् नाशय नाशय	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ममैश्वर्याणि देहि देहि	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुँ
शीघ्रं मनेवाञ्चितं कार्यं साधय साधय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्

ह्रीं स्वाहा	करतलपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ ध्यान ॥मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डप रत्नवेद्यां सिंहासनो परिगतां परिपीत-वर्णाम्।

पीताम्बराभरण माल्यविभूषिताङ्गी देवीं स्मरामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम्॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥

यद्यपि अधिकांश साधक यही ध्यान करते हैं, जिसमें भगवती एक हाथ से शत्रु की जिह्वा पकड़े हुए हैं और दूसरे हाथ से उस पर गदा प्रहार को उद्यत हैं। परंतु इसके अतिरिक्त दूसरा ध्यान भी है, जो उत्तराम्नाय व उर्ध्वामनाय मंत्रों के लिए अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है । यथा-

"सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्।

हेमाभाङ्गरूचिं शशाङ्क मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्।

हस्तैर्मुद्रर पाश वज्र रसनाः संबिभ्रती भूषणै-

र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥"

इसके अतिरिक्त सांख्यायन तंत्र में एक अलग ध्यान दिया गया है, जिसमें भगवती का चतुर्भुजी के रूप में ध्यान किया गया है-

"चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थितां,

त्रिशूलं पान पात्रं च गदा जिह्वां च विभ्रतीम्।

बिम्बोष्ठीं कंबुकण्ठीं च सम पीन पयोधरां,

पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्र-देवताम्॥"

ऊपर मैंने इस मंत्रराज के तीन ध्यानों का उल्लेख किया है, जिनमें से साधक जो चाहें वह ध्यान कर सकते हैं।परंतु अनुभव से मैंने यह पाया है कि “मध्ये सुधाब्धिमणि" वाला ध्यान करना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है,तथा उसके अनुसार मंत्रजप में भी अधिक ध्यान लगता है।

भगवती के मूल मंत्र (36 अक्षरी) को मंत्रराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है। इस मंत्र राज की उपासना-जपना से त्रैलोक्य में कोई ऐसा कार्य नहीं है, जिसकी सिद्धि ना हो सकती हो। आवश्यकता केवल कामनानुसार सङ्कल्प लेने तथा उसके सही क्रियान्वयन की है। इसलिए मैं आवश्यक समझता हूँ कि इसका पूर्ण विधान यहा प्रस्तुत करूं।

॥ मंत्रराज की सिद्धि हेतु पूर्ण विधान ॥

1 पञ्चक्रमासक्त- भगवती बगला के उपासक के लिए सर्वप्रथम जो अत्यावश्यक कार्य है वह है उसका पंचक्रम विधान। अर्थात् वह (1) पीताशी (2) पीतपानी (3) पीतशय्यासमन्वित (4) पीताम्बर युक्त और (5)पीतपूजापरायण का पालन करने वाला हो, क्योंकि- "सर्वपीतो पचारेण मंत्रः सिद्ध्यति मंत्रिणः।" उपासना समय में पञ्चाङ्ग – कवच, स्तोत्र, हृदय, नाम, स्तुति आदि का पाठ करें। फिर यंत्र पूजन कर मूल मंत्र का यथा संभव जप करें।साधना में सफलता के लिये यह अति आवश्यक है कि भगवती की पंचोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार,षड्त्रिंशोपचार, चतुषष्टि-उपचार पूजन करके स्तोत्र, कवच, हृदय, पटल, स्तव, कीलक, गीता, उपनिषद् का पाठ किया जाये।ये ही भगवती की उपासना के स्वाध्यायात्म क अङ्ग हैं।

मंत्र जप से पूर्व मंत्र-वर्णो का न्यास अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग में करना चाहिए, जिससे साधक स्वयं मंत्रवत् हो जाये।वास्तव में न्यास का उद्देश्य 'अहं' का भाव मिटाकर अपने अङ्गों में मंत्रवर्णो का आधिपत्य बना देना होता है।भगवती के मूल मंत्र के वर्णों का अपने अङ्ग-प्रत्यंग में न्यास करने के लिए यूं तो अलग-अलग मुद्राएं बनायी जाती हैं,लेकिन केवल अपनी अनामिका अंगुली को अंगूठें से मिलाकर (तत्व - मुद्रा) कहे गए अंगों पर रखते हुए ही मंत्रवर्ण का उच्चारण करने से भी न्यास संपन्न हो जाता है।

॥मन्त्रवर्ण-न्यास ॥

मंत्र- **"ॐ ह्ल्रीं बगलामुखी! सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा।"**

'ॐ नमः शिरसि। 'ह्ल्रीं नमो ललाटे।'बं' नमो भ्रूमध्ये।'गं' नमो दक्षिणनेत्रे।'लां' नमो वाम नेत्रे। 'मुं' नमो दक्षिणकर्णे।'खिं' नमो वामकर्णे। 'सं' नमो दक्षिणनासापुटे। 'वँ' नमो वाम-नासापुटे।'दुं'नमो दक्षिणगण्डे।'ष्टां' नमो वामगण्डे।'नां' नमो ऊर्ध्वोष्ठे। 'वां' नमो अधरोष्ठे। 'चं' नमो मुखे। 'मुं' नमो चिबुके। 'खं' नमो गले।'पं' नमो दक्षिणबाहुमूले।'दं' नमः कूर्परे। 'स्तं' नमो मणिबन्धे । 'भं' नमो अंगुलिमूले।'यं' नमो अंगुल्यग्रे।'जिं' नमो वामबाहुमूले। 'ह्वां'नमःकूर्परे।'कीं' नमो मणिबन्धे।लं नमःअंगुलिमूले।यं नमःअंगुल्यग्रे।'बुं'नमो दक्षिणोरौ। 'द्धिं' नमो जानुनि। 'विं' नमो गुल्फे। 'नां' नमः अंगुलिमूले।'शं' नमः अगुल्यग्रे।'यं' नमो वामोरौ। 'ह्ल्रीं' नमो वामजानुनि।'ॐ' नमो गुल्फे। 'स्वां' नमः अंगुलि मूले। 'हां' नमः वामपादांगुल्यग्रे।

॥ वृहत् उत्कीलन विधानम् ॥

इसकी नित्य आवश्यकता नहीं हैं।पर्वाद में या पुरश्चरण काल में अवश्य करना चाहिये।

विनियोग:- अस्य श्री उत्कीलन मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, वृहत् गायत्री छंदः, सूचीमुख्यै उत्कीलन देवता,ॐ ऐं क्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं अं बीजाय, ब्रह्मग्रंथिं उत्कीलय शक्तिः, ॐ ब्लूं ह्लौं ह्लं ह्लीं ह्लां ॐ कीलकं, श्रीं बगलामुखी मंत्र उत्कीलनार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :-उत्कीलन मंत्रस्य सदाशिव ऋषिये नमः शिरसि। वृहत् गायत्री छंदसे नमः मुखे। श्री ब्रह्मास्त्रोत्कीलनायै क्लीं ब्लूं ग्लौं ह्लीं ग्लौं ब्लूं क्लीं सं सं सं सूच्यग्रेणोत्कीलन सूचीमुख्यै देवतायै नमो हृदये।ॐ ऐं क्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं अं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्लीं अं आं इं ई....अं अः (तीन बार कहकर मूलमंत्र उच्चारणकरें) ॐ ऐं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्मग्रंथिं उत्कीलय ॐ अं ह्लीं आं इं ब ईं ग उं ला ऊं मु ॠं खि ॠं स लृं वं ॡ दु एं ष्टा ऐं नां ओं वा औं चं अं मु अं खं अः प अं दं औं स्त ओं म्भ ऐं य एं जि लृं ह्वां ॡ

की ॠं ल ॠं य ऊं बु उं ह्रिं ईं वि इं ना आं श अं य ह्लीं ॐ क्षं ॐ स्वाहा। ॐ ऐं क्लीं क्लीं ह्लीं क्लीं ऐं ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्मग्रथिं उत्कीलय उत्कीलय, ॐ ब्लूं ह्लौं ह्लं ह्लीं ह्लां ॐ कीलकाय नमो नाभौ। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रसौं ॐ बगलामुखीमहामन्त्रे उत्कीलनार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

पश्चात् ॐ ऐं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ऐं ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्मग्रंथिं उत्कीलय उत्कीलय से व्यापक न्यास करें।

करादिन्यासः- ॐ इं लं हंसः ह्लां सोहं लं ईं ॐ उत्कीलिन्यै नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ इं लं हंसः ह्लीं सोहं लं ईं ॐ महोत्कीलिन्यै नमः तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ इं लं हंसः ह्लूं सोहं लं ईं ॐ रुद्रसूच्या उत्कीलिन्यै नमःमध्यभाभ्यां नमः।

ॐ इं लं हंसः ह्लैं सोहं लं ईं ॐ ब्रह्मग्रंथि उत्कीलिन्यै नमः अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ इं लं हंसःह्लौं सोहं लं ईं ॐ योगिन्यै उत्कीलिन्यै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ इं लं हंसः ह्लः सोहं लं ईं ॐ सर्वोत्कीलिन्यै नमः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। इसी तरह हृदयादि न्यास करें।

हृदयादिन्यासः —ॐ इं लं हंसः ह्लां सोहं लं ईं ॐ उत्कीलिन्यै नमः हृदयाय नमः।

ॐ इं लं हंसः ह्लीं सोहं लं ईं ॐ महोत्कीलिन्यै नमः शिरसे स्वाहा।

ॐ इं लं हंसः ह्लूं सोहं लं ईं ॐ रुद्रसूच्या उत्कीलिन्यै नमः मुखे।

ॐ इं लं हंसः ह्लैं सोहं लं ईं ॐ ब्रह्मग्रंथि उत्कीलिन्यै नमः कवचाय हुं।

ॐ इं लं हंसःह्लौं सोहं लं ईं ॐ योगिन्यै उत्कीलिन्यै नमः नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ इं लं हंसः ह्लः सोहं लं ईं ॐ सर्वोत्कीलिन्यै नमः अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

रुद्रसूचीमुखीं ध्याये सर्वाभरणभूषिताम्। वरदाऽभयसूच्यग्र नखदंष्ट्राभयानकाम्॥

चतुर्भुजां त्रिनयनां वरदाऽभयं कुण्डिकाम्। शूलाग्रान खरतीक्ष्णग्रान् कुर्वतीं ग्रथिताक्षरान्॥

वर्णमाला विभूषाङ्गी सर्ववर्णात्मिकां शिवाम्। प्रोद्यश्वतां मनून् सर्वान् नानावर्ण विजृंभितान्॥

विविच्य वरदे मंत्रान् मालायां कुसुमानिव। प्रवेशय मनुं देहि प्रकटीकुरु सर्वदा॥

अभयं टङ्क वरदं पाशं पुस्तकमङ्कुशम्। शूलं सूच्यग्रमादाय देहि मे प्रणमामि त्वाम्॥

इति ध्यात्वा जगद्धात्रीं जगदानन्दरूपिणीम्। ग्रंथित्रय विशेषज्ञं शिवं ध्यात्वा जपेन्मनुम्॥

ॐ इं लं हंसः ह्लीं उत्कीलिन्यै नमः। ॐ ईं लं हंसः ॐ वः ॐ ह्लीं बगलामुखि.... (पूरा मंत्र) ह्लीं लं ई वःउत्कीलिन्यै स्वाहा। ॐ ईं हंसः रं सं रं ह्लः(मूल मंत्र)ॐ ईं लं हंसः हं ॐ वः उत्कीलिन्यै स्वाहा। (यह तीन बार जपे)। पुनः अं आं..... सं हं लं क्षं ईं हंसः ॐ वः (मूलमंत्र) ॐ वः सः हं लं इं लं क्षं लं हं क्षकार से अकार तक विलोममातृका उच्चारण करे ॐ वः ह्लां इं लं हंसः (मूलमंत्र) सोहं लं ईं ॐ वः उत्कीलिन्यै स्वाहा ।

जागरण :- ॐ इं लं हंसः सोहं ॐ वः वः वः ॐ हंसः सोहं लं ईं ॐ मम हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।हृदय पर हाथ रख कर ३ बार जपे। पुनः ॐ ह्लीं हंसः (मूलमंत्र) ॐ अं आं....अं अः हंसः ह्लीं ॐ जप करे।

मंत्र शुद्धिः - अं आं....हं लं क्षं ॐ ह्लीं हंसः सोहं ह्लीं सः सोहं (मूलमंत्र) पश्चात् क्षं लं हं....आं अं विलोममातृका मम विद्याशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

शापविमोचन :- ॐ ह्रूं ह्रूं ह्रूं क्लीं क्लीं क्लीं ऐं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं रुद्रसूच्यग्रेण उत्कीलय उत्कीलय अं आं....अं अः बगलाशापोद्धारं कुरु कुरु अं आं.....अं अः क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ऐं ऐं क्लीं क्लीं क्लीं ह्रूं ह्रूं ह्रूं ॐ रुद्रसूच्यग्रेण बगलाशापविमोक्षं कुरु कुरु स्वाहा। मूल मंत्र का आठ बार जप करे। ब्राह्मीमुद्रा दिखावें। अन्य पंचमुद्राओं से नमस्कार करें।

अन्य उत्कीलन विधि:- १. ॐ ह्लीं क्लीं स्वाहा जपने से उत्कीलन होवें। २. ॐ ह्लीं स्वाहा अथवा ह्लीं ॐ स्वाहा जपने से संजीवन होवें। ३. ॐ ह्लीं बगले रुद्रशाप विमोचय ह्लीं ॐ से शापोद्धार होवें। ४. क्रीं ह्लीं क्लीं से मूल मंत्र को संपुटित करें तो विद्या का जागरण होवें ।

मंत्र जप से पूर्व प्रतिदिन न्यास करें। शापोद्धार आदि क्रियाएं पुरूश्चरण के प्रथम दिन ही संपन्न कर लें। एक लाख जप करने से साधक का मंत्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद कुल जप का दशांश हवन, तद्दांश तर्पण, तर्पणका दशांश मार्जन अथवा अभिषेक और अभिषेक की दशांश- संख्या में योग्य ब्राह्मणों, गुरु आदि को भोजन,वस्त्रादि तथा दक्षिणा से संतुष्ट कर उनका आर्शीवाद का दशांश जप कर लेने से भी पूर्णता मिल जाती है। यदि एक लाख की संख्या में जप किया है तो हवन उसका दश हजार की संख्या में होगा। लेकिन कलियुग में चारगुने का विधान है। इसलिए दश हजार के स्थान पर चालीस हजार की संख्या में जप करना चाहिए।यदि ब्राह्मणों को भोजन कराने में सक्षम न हों तो केवल गुरुदेव को ही भोजन कराकर उनसे आर्शीवाद प्राप्त करें।इससे भी अनुष्ठान पूर्ण माना जाता है।

जहां तक हवन का प्रश्न है तो इस संबंध में यह ज्यादा उचित है कि यदि दशांश होम न कर सकें तो दशांश अथवा उसका चार गुना जप करके छोटा सा होम कर देना चाहिए। क्योंकि आहुतियां 'वीर्यरूप' कहलाती हैं।जिस प्रकार संतांन-प्राप्ति में 'वीर्य' का स्थान है, उसी प्रकार सिद्धि प्राप्ति में होम का स्थान है।पुरचरण के उपरांत गुरु, ब्राह्मण, बड़े-बुजुर्गों का आर्शीवाद बहुत आवश्यक है, जो साधक को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने में पुल का कार्य करता है।

॥ पुरश्चरण (जप) के फल ॥

'मेरू - तंत्र' के अनुसार पूजन-यजन का विधान इस प्रकार है-

1 विनियोग व न्यास- सर्व प्रथम विनियोग करके मंत्र के न्यास आदि करें।

2 ध्यान- न्यास आदि के बाद भगवती का ध्यान करें।

3 यंत्र - पूजन- ध्यान के बाद सोने, चांदी अथवा भोजपत्र पर कपूर, अगरू, कस्तूरी, चंदन तथा रोली मिलाकर उसकी स्याही से अनार की कलम के द्वारा यंत्रराज का निर्माण कर उसका पूजन करें।

4 जप- यंत्र पूजन के उपरांत आरती आदि संपन्न करके यथा संख्यक जप करें।

5 होम- नियत संख्या में जप करने के उपरांत एक सुंदर कुण्ड का निर्माण करें। उसे तीन मेखलाओं से सजाकर,

॥ बगला-गायत्री-विधान ॥

प्रत्येक देवता की अपनी गायत्री होती है, जिसका जप किए बिना मंत्र में सिद्धि प्राप्त नहीं होती और न ही देवता की कृपा प्राप्त होती है। बगला गायत्री का स्वरूप निम्नवत् है-

बगला - गायत्री- **"ॐ ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनबाणाय धीमहि तन्नः बगला प्रचोदयात्।"** (साख्यायन तंत्र)भगवती बगला का यह गायत्री मंत्र विविध-फल-प्रदायक है। "वाञ्छाकल्प द्रुम" के समान यह ब्रह्मास्त्र - गायत्री साधक के सभी अभीष्टों को सिद्ध करने वाला है।

मन्त्रोद्धार -

"ब्रह्मास्त्राय पदं चोक्त्वा विद्महेति पदं तथा।

स्तम्भनेति पदं चोक्त्वा बाणाय तदनन्तरम्॥

धीमहिति पदं चोक्त्वा तन्नः शब्दं ततो वदेत्।

बगलापदमुच्चार्यमुद्धरेच्च प्रचोदयात्॥

गायत्री बगला नाम्नी सर्वसिद्धिप्रदा भुवि।"

इस मंत्र का परिचय इस प्रकार है-

बगला गायत्री-ॐ अस्य श्री बगला गयत्री मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः,गायत्री छन्दः, बगला देवता,

ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, विद्महे कीलकम्।

पुरश्चरण 4लाख, हवन 40 हजार, तर्पण 4 हजार, अभिषेक 400, ब्राह्मण भोजन 40।

हवनीय द्रव्य एवं सामग्री—घी अथवा कामनानुसार।

न्यास एवं ध्यान- बगला गायत्री के ध्यान एवं न्यासादि 36 अक्षरी मंत्र के अनुसार ही करें, यथा- "न्यास-ध्यानादिकं सर्वं कुर्यात्तन्मन्त्रराजवत्।"

॥ प्रयोग ॥

मोक्षार्थ- 'ॐ' सहित जप करें।कामार्थ-'ॐ ग्लौं' सहित जप करें।उच्चाटनार्थ-'ग्लौं' सहित जप करें।सम्मोहनार्थ-'क्लीं' सहित जप करें।स्तम्भनार्थ-'ह्लीं' सहित जप करें।विद्वेषणार्थ-'धूं-धूं' सहित जप करें।मारणार्थ-'हूं ग्लौ ह्रीं' सहित जप करें।विद्यार्थ-'ऐं' सहित जप करें। सुयोग्य कन्यार्थ- 'ऐं क्लीं सौः ' सहित जप करें।धनार्थ-'श्री' सहित जप करें।विष-नाशार्थ-'क्षी' सहित जप करें।प्रेतबाधा नाशार्थ-'हं' सहित जप करें।रोग नाशार्थ–'ॐ जूं सः' सहित जप करें।

उपरोक्त सभी बीजों को मंत्र के आदि (आरंभ) में लगाकर जप करने से निर्दिष्ट फल की प्राप्ति होती है।

बीज सम्पुटीकरण विधान- भूमि-प्राप्ति के लिए "स्तंभन बाणाय" के बाद "ग्लौं" बीज लगाकर जप करें। शत्रुको ताप व मृत्यु प्रदान करने के लिए मंत्र के आरंभ में 'रं' लगाकर जप करें।राज-वशीकरण के लिए मंत्र के आदि में 'ह्रीं' लगाकर जप करना चाहिए।

उपर्युक्त प्रयोगों को निम्नवत् कहा गया है-

मोक्षार्थी-तारादि (आदि में प्रणव) प्रजपेन्मंत्रं मोक्षार्थी च कुमारक।

कामार्थी-कामार्थी प्रजपेत्पुत्र तारावाराहपूर्वकम्।

सम्मोहनार्थी–सम्मोहनर्थं प्रजपेत्कामराजपुरस्सरम्।

स्तम्भनार्थी-स्तम्भनार्थी जपेत् पुत्र बगलाबीजपूर्वकम्।

विद्वेषणार्थी-विद्वेषणादौ प्रजपेद्धङ्कारद्वयपूर्वकम्।

उच्चाटनार्थी-उच्चाटनार्थं प्रजपेच्छक्तिवाराहपूर्वकम्।

मारणार्थी-वाराहशक्ति वाराहं तच्च माया पुरस्सरम्।

प्रजपेन्मंत्रमेतद्धि मारणं भवति ध्रुवम्।

इन सभी मंत्रों का जप कामनानुसार चयन करके करना चाहिए। जप संख्या कम से कम एक लाख होनी आवश्यकहै।स्मरण रखें! कलिकाल में गायत्री जप के बिना कोई भी मंत्र सिद्ध हो ही नहीं सकता, यथा- "गायत्री च बिना मंत्रों न सिद्ध्यति कलौ युगे।" यदि करोड़ों मंत्रों का जप कर लिया और गायत्री - जप (बगला - गायत्री) नहीं किया,तो साधक को कोई भी मंत्र सिद्ध नहीं हो सकता।

॥अन्य बगलागायत्री मंत्राः॥

१. ह्लीं बगलामुखी विद्महे दुष्टस्तंभनी धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

२. ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तंभनं तन्नः बगला प्रचोदयात्। (बगलामुखी रहस्ये तथा बगला कल्पतरु)

३. ॐ बगलामुख्यै विद्महे स्तंभिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

४. बगलाम्बायै विद्महे ब्रह्मास्त्र विद्यायै धीमहि तन्न स्तंभिनी प्रचोदयात्।

५. (बाला बीज पुटित) ॐ ऐं बगलामुखि विद्महे ॐ क्लीं कान्तेश्वरि धीमहि ॐ सौः तन्नः प्रह्लीं प्रचोदयात्।

॥ शाबर मंत्रः॥

शाबर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते हैं। **ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली राजमुखबंधनं ग्राम मुखबंधनं ग्राम पुरुबंधनं कालमुखबंधनं चौरमुखबंधनं व्याघ्रमुखबंधनं सर्वदुष्टग्रहबंधनं सर्वजनबंधनं वशीकुरु हुं फट् स्वाहा।**

पाण्डवी चेटिका विद्या-(मेरुतंत्रेऽष्टादश प्रकाशे) **ॐ पाण्डवी बगले बगलामुखि शत्रोः पदं स्तंभय स्तंभय क्लीं ह्लीं श्रीं ऐं ह्रीं स्फ्रीं स्वाहा।**

॥ध्यानम् ॥

पीताम्बरां पीतवर्णां पीतगन्धानुलेपनाम्। प्रेतासनां पीतवर्णां विचित्रां पाण्डवीं भजे॥

प्रतिप्रदा शुक्रवार को जपे। ३० हजार कुसुंभकुसुमों से होम करे। प्रसन्न होकर पाण्डवी साधक को वस्त्र प्रदान करती हैं तथा शत्रु का स्तंभन करती हैं।

अथ श्री बगलामुखी तन्त्रम्

पूर्वाभास तथा मन्त्र परिचय-आराधना का क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसमें प्रवेश पा लेने के पश्चात् एक के बाद एक मार्ग उद्घाटित होते रहते हैं। दस महाविद्याओं की आराधना में बगलामुखी देवी की साधना पर विद्वानों का अत्यधिक ध्यान गया है। इनकी साधना में ! लौकिक और अलौकिक फलों की प्राप्ति सहज होती है।साधक अपने अधिकार के अनुसार दक्षिणाम्नाय अथवा ऊर्ध्वाम्नाय से इनकी उपासना करते हैं।जब ये दक्षिणाम्नायात्मक होती हैं तो इनकी दो भुजाएं ही रहती हैं और जब ऊर्ध्वाम्नायात्मक होती हैं तो चतुर्भुजी बन जाती हैं।इन दोनों क्रमों में बीजमन्त्र और मन्त्राक्षरों की संख्या में सामान्य अन्तर रहता है।दक्षिणाम्नाय में ह्लीं बीज सहित ३४ अंक्षरात्मक मन्त्र माना गया है। यथा -

"ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।"

इसमें कीलय पद दो बार तथा केवल नाशय पद रखने में यह ३६ अक्षर का मन्त्र बनता है।

जबकि ऊर्ध्वाम्नाय में यह मन्त्र ब्रह्मास्त्रस्वरूपिणी बगला का होने से ३६ अक्षरों का हो जाता है। यथा -

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय वुद्धिं विनाशय, ह्लीं ॐ स्वाहा।(मेरुतन्त्र)

एक अन्य मंत्र इस प्रकार भी है-

"ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय ऐश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछितं कार्यं साधय साधय ह्लीं स्वाहा।"

सांख्यायन-तन्त्र में श्रीबगलामुखी के एकाक्षर से आरम्भ करके सहस्राक्षरी तक के मन्त्रों के अनेक रूप दिखलाए हैं,जिनके द्वारा विभिन्न काम्यकर्मों की साधना की विधियां भी सम्पन्न होती हैं।इनका यन्त्र 'मध्यत्रिकोण,षट्कोण,अष्टदल और भूपुर' से बनता है।रुद्रयामल के अतिरिक्त 'विष्णुयामल, सिद्धेश्वरतंत्र, विश्वसारोद्धार-तंत्र, मेरुतंत्र और उत्कटशम्बर,नागेन्द्र प्रयाणतन्त्र'में भी बगलामुखी की आराधना पर विस्तारसे लिखा गया है,जिनमें कवच, शत नाम,सहस्रनाम,स्तोत्र आदि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।इस विषयपर हमारी'श्री बगलामुखी सिद्धि और साधना' नामक पुस्तक भी शीघ्र प्रकाशित होने वाली है। यहां आगे दो मंत्रों का जप-

विधान दे रहे हैं। वह द्रष्टव्य है।

श्रीबगलामुखी के मंत्र का विधान इस प्रकार है-

दो मन्त्रों के विधान

१. **विनियोग –** अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः श्री बगलामुखीदेवता ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रीबगलामुखीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास - नारदर्षये नमः (शिरसि), त्रिष्टुप् छन्दसे नमः(मुखे), श्रीबगलामुखीदेवतायै नमः (हृदये), ह्लीं बीजाय नमः (गुह्ये),स्वाहा शक्तये नमः (पादयोः), विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

कराङ्ग न्यास—ह्लीं(अंगु०हृदयाय०),बगलामुखि(तर्जनी०-शिरसे०)सर्वदुष्टानां (मध्यमा०शिखा

यै०),वाचं मुखं स्तम्भय(अनामिका०कवचाय०),जिह्वां कीलय कीलय(कनिष्ठा०नेत्रत्रयाय०), बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा (करतल ० अस्त्राय ०) |

ध्यानम्– मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्न वेद्यां,

सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।

पीताम्बराभरणमाल्य विभूषिताङ्गीं,

देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्॥ १॥

जिह्वाप्रमादाय करेण देवी, वामेन शत्रून् परिपोडयन्तीम्।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पोताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥ २॥

मुद्रा — धेनुः/योनि/पंचोपचारपूजा/पीतपुष्पांजलि एवं हरिद्रा की माला द्वारा जप—

मूलमन्त्र — ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

ऐश्वर्य प्राप्ति और कार्य सिद्धि के लिए अन्य मन्त्र का विधान इस प्रकार है-

विनियोग-ॐ अस्य श्रीबगलामुखी ब्रह्मास्त्रस्वरूपिणी मन्त्रस्य भैरवऋषिः,विराट् छन्दः,श्रीबग लामुखी देवता, क्लीं बीजं, ऐं शक्तिः,श्रीं कीलकं मम मनोभिलषितेष्टकार्यसिद्धये विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास –भैरवर्षये नमः (शिरसि), विराड्छन्दसे नमः(मुखे), श्रीबगलामुखीदेवतायै नमः

(हृदये), क्लीं बीजाय नमः (गुह्ये),ऐं शक्तये नमः (पादयोः), श्रीं कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वांगे)।

कर-षडङ्गन्यास – 'ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः' इन छह बीजों से करें।

ध्यान—सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,

हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां स्त्रक् चम्पकस्त्रग्युताम् ।

हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां संबिभ्रतीं भूषण-

व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥

मूलमन्त्र — ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछितकार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा।

समयानुसार कवच, हृदय स्तोत्र, शतनाम और सहस्त्रनाम का भी पाठ करें। एक महत्त्वपूर्ण सिद्धस्तोत्र यहां सुविधा के लिए प्रस्तुत है।

॥श्री बगलामुखी स्तोत्रम्॥

॥श्री गणेशाय नमः॥

प्रस्तुत स्तोत्र प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ "रुद्रयामल तन्त्र" से उद्धरित है। इस स्तोत्र का पाठ करने से माँ बगला अत्यन्त प्रसन्न होती हैं और प्राणी के शत्रुओं का स्तम्भन, आपदाओं का नाश और सौभाग्य का ऐसा उदय करती हैं कि शत्रु स्तम्भित होकर उस प्राणी को देखते ही रह जाते हैं।

सर्वप्रथम विनियोग करें और हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। तदोपरान्त मन्त्र का अङ्गन्यास आदि करें।

विनियोग —ॐअस्य श्री बगलामुखी स्तोत्रस्य नारद ऋषिः,त्रिष्टुप्छन्दः,श्री बगलामुखी देवता, मम सन्निहितानां असन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्मुख-पद-बुद्धिनां स्तम्भनार्थे श्री महामाया बगलामुखी वर प्रसाद सिद्ध्यर्थं जपे (पाठे) विनियोगः।

करन्यास —ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।(अंगूठे का स्पर्श करें)

ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा।(तर्जनी का स्पर्श करें)

ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्।(मध्यमा का स्पर्श करें)

ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्।(अनामिका का स्पर्श करें)

ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।(कनिष्ठिका का स्पर्श करें)

ॐ बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्टाभ्यां फट्।(हथेली के अगले व पृष्ठ भागों का स्पर्श, यानि मिलायें)

हृदयादि न्यास —ॐ ह्लीं हृदयाय नमः।(हृदय का स्पर्श करें)

ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा।(सिर का स्पर्श करें)

ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।(शिखा का स्पर्श करें)

ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।(दोनों हाथों से कवच बनायें)

ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट् ।(दोनों नेत्रों का स्पर्श करें)

ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा, अस्त्राय फट् ।(तीन चुटकी व ताली बजायें)

ध्यान —सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पितांशुकोल्लासिनीं,

हेमाभाङ्गरूचिं शशांङ्कमुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्।

हस्तैर्मुद्गर- पाश-वज्र-रसनां संब्रिभ्रतीं भूषणैः,

व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिन्तयेत् ॥

जप मन्त्र —**ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥**

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्न वेद्यां,

सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।

पीताम्बराभरणमाल्य विभूषिताङ्गीं,

देवीं भजामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम्॥ १॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी, वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥२॥

भावार्थ-अमृत सागर के मध्य, मणिमण्डप की रत्नवेदी पर एक सिंहासन पर पीतवर्णा देवी विराजमान हैं। उनके वस्त्राभूषण, माला आदि सब कुछ पीत रंग के हैं। बायें हाथ में शत्रु की जिह्वा पकड़कर दाहिने हाथ में मुद्गर लेकर शत्रु पर प्रहार कर रही हैं। ऐसी माँ पीताम्बरा को मैं प्रणाम करता हूँ।

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलां,

लसत्कनक चम्पकद्युतिमदिन्दु-बिम्बाननाम्।

गदाहत - विपक्षिकां कलितलोलजिह्वाञ्चलां,

स्मरामि बगलामुखीं विमुख वाङ्मखस्तम्भिनीम् ॥३॥

भावार्थ- चंचल स्वर्ण कुण्डलों से सुसज्जित कपोलों वाली, कनक व चम्पा के पुष्प जैसे शरीर की कान्तिपूर्ण चन्द्रमुखी, गदा -प्रहार से शत्रुओं की हन्ता, सुन्दर चंचल जिह्वा

वाली, विमुखों की वाणी व मन का स्तम्भन करने वाली माँ बगलामुखी का मैं स्मरण करता हूँ।

पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद् रक्तोत्पले मण्डपे,

सत्सिंहासन मौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्।

स्वार्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रमा-

मित्थं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥४॥

भावार्थ- जो साधक अमृत समुद्र के मध्य में रत्नोज्ज्वलित मण्डप, रत्नजड़ित सिंहासन पर आसीन स्वर्ण आभावाली एक हाथ से शत्रु जिह्वा और दूसरे में घूमती हुई गदा (मुद्गर) धारण किये हुए, प्रेतासन पर आसीन,रिपुओं के शीश झुकाने वाली, आपका ध्यान करता है, उसकी सभी आपदाओं का तुरन्त विलय हो जाता है, अर्थात् नाश हो जाता है।

देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलिं,

भक्त्या वामकरे निधाय च मनुं मन्त्री मनोरक्षरम् ।

पीठ-ध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं,

तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ॥५॥

भावार्थ - हे देवी! जो साधक आपके चरण कमलों का पीत पुष्पों की अञ्जलि से अर्चन करता है, मुद्रा बनाकर आपके ध्यान में तत्पर होकर कुम्भक मनोहर अक्षर वाले भूमि बीज 'लं' का स्मरण करता है, उसके अमित्रों अर्थात् शत्रुओं की वाणी और हृदय में तत्क्षण जड़ता आ जाती है, अर्थात् स्तम्भन हो जाता है।

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति,

क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।

गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायन्त्रितः,

श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥६॥

भावार्थ- हे कल्याणि आपके मन्त्र के द्वारा यन्त्रित किया गया वादी गूंगा, छत्रपति रंक, अग्नि शीतल, क्रोधी शान्त,दुर्जन सुजन, धावक लंगड़ा, गर्वयुक्त छोटा और सर्वज्ञ जड़ हो जाता है। अतएव, हे लक्ष्मी स्वरुपा नित्ये!माँ बगला! कल्याणी! मैं आपको प्रतिदिन नमन करता हूँ।

मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलनं स्तोत्रं पवित्रं च ते,

यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां चित्रं च जैत्रं च ते।

मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे,

त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद् वादिनाम् ॥७॥

भावार्थ- शत्रुओं के दल के दमन के लिए आपका मन्त्र ही पर्याप्त है और वैसा ही पवित्र

स्तोत्र भी। वक्ताओं के नियन्त्रण हेतु आपका त्रिलोक प्रसिद्ध विजयशाली यन्त्र भी विलक्षण है। माँ! "श्री बगला" - आपका यहललित नाम जिस भी साधक के मुख की शोभा बढ़ाता है, वह धन्य है,क्योंकि आपके नाम के स्मरण मात्र से ही वक्ताओं के मुख स्तम्भित हो जाते हैं।

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्य-विद्रावणं,

भूभृद्धीशमनं चला-मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।

सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशः कारुण्यपूर्णामृतं,

मृत्योर्म्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥८॥

भावार्थ- दुष्टों का स्तम्भन करने वाला, उग्र विघ्नों का शमन कारक, दरिद्रता का नाश करने वाला,भूपतियों का दमनकारक,मृग जैसी चंचल चितवनों वाली के चित्त का भी आकर्षण करने वाला, सौभाग्य का एक मात्र निवास, करुणा पूर्ण नेत्रों वाला, मृत्यु का भी मारण करने वाला आपका सुन्दर शरीर है। माँ! मुझे दर्शन दो।

मातर्भञ्जय मद्विपक्षिवदनं जिह्वाञ्चलं कीलय,

ब्राह्मीं मुद्रय नाशयाशु धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।

शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौराङ्गि पीताम्बरे,

विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥९ ॥

भावार्थ- हे गौराङ्गी! पीताम्बरे! हे देवी! मेरे शत्रुओं की वाणी को बन्द कर दो। उनकी जिह्वा को कील दो। ब्राह्मी मुद्रा धारण कर दैत्य और देवों की उग्र गति को स्तम्भित कर दो। माँ! अपनी तीक्ष्ण गदा से मेरे शत्रुओं को चूर्ण कर दो। अपनी करुणापूर्ण दृष्टि से साधकों के विघ्न समूह को दूर कर दो।

मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये,

श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि रामे रमे ।

मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे,

दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम् ॥१० ॥

भावार्थ- हे माँ! भैरवी! भद्रकाली ! विजया! वाराही! भुवनेश्वरि ! श्री विद्या! षोडशी! महेशी! बगला! रमा अर्थात् कमला! मातङ्गी! सब आप ही हैं। माँ-स्वर्ग और मोक्ष प्रदायिनी भी आप ही हैं। हे माँ! हे विश्वेश्वरी!करुणा करके मेरी रक्षा करो। मैं आपका दास हूँ और आपकी शरण में हूँ।

संरम्भे चौरसङ्घे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये,

विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम् ।

वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा,

गच्छँस्तिष्ठस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥ ११ ॥

नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद्,

धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले।

राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणः सर्पा मृगेन्द्रादिका -

स्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिराः सिद्धयः॥ १२ ॥

त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसञ्छेदिनी,

योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्धिनी।

दुष्टोच्चाटनकारिणी जनमनः सम्मोहसन्दायिनी,

जिह्वाकीलन भैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा॥ १३ ॥

भावार्थ- आप! परम विद्या हैं, त्रिलोक जननि हैं, विघ्नों का नाश करने वाली हैं, स्त्रियों को आकर्षित करने वाली हैं, तीनों जगतों का आनन्द संवर्धन करने वाली हैं, दुष्टों का उच्चाटन करने वाली हैं, पशुमन को सम्मोहन देने वाली हैं, दुष्टों की जिह्वा कीलन में भैरवी हैं और विजय प्रदान करने में परा ब्रह्मास्त्र विद्या हैं।

विद्यालक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्वसाम्राज्यसिद्धिः।

मानं भोगो वश्यमारोग्य सौख्यं प्राप्तं तत् तद् भूतलेऽस्मिन्नरेण॥१४॥

यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि।

दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोऽस्तु ते॥१५॥

भावार्थ- हे पराम्बा! हे परमेश्वरी! माँ बगले! दुष्टों के स्तम्भनार्थ, आपके विषय में मैंने जपादि पूर्वक जो कहा है,उसे आप स्वीकार करें। माँ पीताम्बरा! आपको मेरा बारम्बार नमस्कार है।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं! त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।

गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित्॥ १६॥

पीताम्बरां द्विभुजां च त्रिनेत्रां गात्रकोज्ज्वलाम्।

शिलामुद्गरहस्ताञ्च स्मरेत् तां बगलामुखीम्॥ १७॥

रुद्रयामलोक्त यह सिद्धस्तोत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसका त्रिकाल अथवा रात्रिकाल में पाठ करने से शत्रुस्तम्भन और मुकदमा,अन्य वाद विवाद आदि में विजय अवश्य प्राप्त होती है। १७ दिन तक प्रतिदिन १७ पाठ करने से इसका पुरश्चरण होता है। बगलामुखी के भैरव महामृत्युंजय हैं। अतः उस मन्त्र का दशांश जप करने से शीघ्र लाभ होता है।

॥ स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्रः ॥

जप मन्त्र- ''ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्य विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।"

विनियोग-ॐअस्यश्रीस्वर्णाकर्षण भैरवमंत्रस्य ब्रह्माऋषि:,पंक्तिश्छन्दः,हरिहरब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजम्, सः शक्ति,ॐ कीलकमं ममदारिद्यनाशार्थे, स्वर्ण राशि प्राप्त्यर्थे स्वर्णाकर्षण भैरव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः -ॐअस्यश्रीस्वर्णाकर्षण भैरवमंत्रस्य ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे,स्वर्णाकर्षण भैरवदैवतायै नमः हृदि,ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये,सः शक्तिः

नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः नाभौ, ममदारिद्र्यनाशार्थे, स्वर्ण राशि प्राप्त्यर्थे स्वर्णाकर्षण भैरव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

	कराङ्गन्यास	हृदयादिन्यास
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदायाय नमः
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ लोकेश्वराय	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायैवषट्
ॐ स्वर्णाकर्षण भैरवाय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ ममदारिद्र्य विद्वेषणाय	कनिष्ठकाभ्यां नमः	नेत्रत्र याय वौषट्
ॐ महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

॥ध्यानम्॥

पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम्। अक्ष्यं स्वर्णमाणिक्यं-तडितपूरित पात्रकम्॥,

अभिलषितं महाशूलं चामरं तोमरोद्वहम् । सर्वाभरणसम्पन्नं मुक्ताहारोपशोभितम्॥१॥

मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानां च वर प्रदम्। सततं चिन्तये देवं भैरवं सर्वसिद्धिदम्॥

पारिजात द्रुमकान्तारस्थिते मणिमण्डपे। सिंहासनगतं ध्यायेद् भैरवं स्वर्णदायकम्॥२॥

गाङ्गेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरंकरैः संदधतंत्रिनेत्रम्।

देव्यायुतं तप्तसुवर्णवर्णं स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि॥३॥

॥बगलामुखी कवच॥

साधकगण! यह कवच “विश्वसारोद्धार” तन्त्र, जोकिं एक दुर्लभ ग्रन्थ है, से उद्धृत किया गया है। पार्वती जी के द्वारा भगवान नागेश्वर से पूछे जाने पर भगवती बगला के

कवच के विषय में प्रभु वर्णन करते हैं कि देवी बगला शत्रुओं के कुल के लिये जंगल में लगी अग्नि के समान हैं। वे साम्राज्य देने वाली और मुक्ति प्रदान करने वाली हैं।भगवती बगलामुखी के इस कवच के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। इस कवच के पाठ से अपुत्र को धीर, वीर और शतायुष पुत्र की प्राप्ति होती है और निर्धन को धन प्राप्त होता है। महानिशा में इस कवच का पाठ करने से सात दिन में ही असाध्य कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। तीन रातों को पाठ करने से ही वशीकरण सिद्ध हो जाता है।

मक्खन को इस कवच से अभिमन्त्रित करके यदि बन्ध्या स्त्री को खिलाया जाये, तो

वह पुत्रवती हो जाती है। इसके पाठ व नित्यपूजन से मनुष्य बृहस्पति के समान हो जाता है, नारी समूह में साधक कामदेव के समान व शत्रुओं के लिये यम के समान हो जाता है। माँ बगला के प्रसाद से उसकी वाणी गद्य-पद्यमयी हो जाती है। उसके गले से कवितालहरी का प्रवाह होने लगता है। इस कवच का पुरश्चरण एक सौ ग्यारह पाठ करने से होता है, बिना पुरश्चरण के इसका उतना फल प्राप्त नहीं होता। इस कवच को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर पुरुष को दाहिने हाथ में व स्त्री को बायें हाथ में धारण करना चाहिये।

ध्यान—सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,

हेमाभाङ्गरुचिं शशांङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युतां।

हस्तैर्मुद्गरपाश वज्ररसनां संबिभ्रतीं भूषणै,

र्व्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

विनियोग —ॐअस्य श्रीबगलामुखी ब्रह्मास्त्र मन्त्र कवचस्य भैरव ऋषिः,विराट् छन्दः, श्री बगलामुखी देवता,क्लीं बीजं, ऐं शक्ति,श्रीं कीलकं, मम परस्य च मनोऽभिलाषितेष्ट कार्य सिद्धये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास —ॐ भैरव ऋषये नमःशिरसि।विराट छन्दसे नमःमुखे। बगलामुखी देवतायै नमःहृदिं।क्लीं बीजाय नमःगुह्ये।ऐं शक्तये नमःपादयोः।श्रीं कीलकाय नमःसर्वाङ्गे।

करन्यास —ॐ ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास —ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय् हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय् फट्।

॥मन्त्रोद्धार॥

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्री बगलानने! मम रिपुन् नाशय-नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि, शीघ्रं मनोवांछित कार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा।

(इस मन्त्र की एक माला जपकर फिर कवच पाठ करें।)

॥कवच॥

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्।सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्री बगलानने!॥१॥

श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम्।पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्यं तु मस्तकम्॥ २॥

देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम।कण्ठदेशं मनः पातु वान्छितं बाहुमूलकम्॥३॥

कार्यं साधय द्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम।माया युक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा॥४॥

अष्टाधिक चत्वारिंशद् दण्डाढ्या बगलामुखी।रक्षा करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम॥५॥

ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्व सन्धिषु।मन्त्रराज सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा॥६॥

ॐ ह्रीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु।मुखी वर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम्॥७॥

जानुनी सर्वदुष्टानां पातु में वर्ण पञ्चकम्।वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णा परमेश्वरी॥८॥

जङ्घा-युग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी।स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम॥९॥

जिह्वां वर्ण द्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च।पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम॥१०॥

विनाशय पदं पातु पादाङ्गुल्योर्नखानि मे।ह्लीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धि-इन्द्रिय वचांसि मे॥११॥

सर्वाङ्गं प्रणवःपातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु।ब्राह्मीं पूर्वदले पातु चाऽग्नेय्यां विष्णुवल्लभा॥१२॥

माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु।कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चाऽपराजिता॥१३॥

वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु।उर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु॥१४॥

इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च स वाहनाः।राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः॥१५॥

श्मशाने जल मध्ये च भैरवाश्च सदाऽवतु।द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरण भूषिताः॥१६॥

योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम।इति ते कथितंदेवि कवचं परमाद्भुतम्॥

श्री विश्वविजयं नाम कीर्ति श्रीविजयप्रदम्॥

अथ श्री बगलामुखी मन्त्रभेदाः

बगलामुखी के विभिन्न प्रयोग इस प्रकार है- (देवीरहस्ये)

(१) **मंत्र :- ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय-स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय ह्लीं ॐस्वाहा।**

उत्कीलनं :- ॐ ह्लीं क्लीं स्वाहा।

संजीवन :- ॐ ह्लीं स्वाहा।

शापविमोचन :- ॐ ह्लीं बगले रुद्रशाप विमोचय ह्लीं ॐ स्वाहा।

(२) **अन्य मंत्र :-ॐ ह्लीं भगवति बगलामुखि देवि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

॥ ध्यानम्॥

नानारत्ननिबद्धरम्यमुकुटां पीताम्बरां भाग्यदां,

धर्मांश्वग्नि शशाङ्करश्मि नयनां सिंहासनस्थां शिवाम्।

सच्चण्डांशु निभां महार्घमणिभिरुद्भासिताङ्गीं सदा,

देवीं श्रीबगलामुखीं हृदि भजे भक्तेष्टदां मुक्तिदाम्॥

(१) ३४ अक्षर मन्त्र - (मेरु तन्त्रे) **ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

विनियोग :- यहां नारायण ऋषि, त्रिष्टुप्छन्द, बगलामुखि देवता, ह्लीं बीजं तथा स्वाहा शक्ति हेतु विनियोग है।

यहां मन्त्र में वाचं मुखं के बाद पदं जोड़ने से ३६ अक्षर का मन्त्र हो जाता है।

(२) सांख्यायन तन्त्रे मन्त्र :-**ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

सांख्यायन तन्त्र में सप्तम पटल में इसके ऋषि नारद, अनुष्टुप्छन्द, बगला देवता, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, रं कीलकं बताया है।

ऋषिभेद - जबकि उपरोक्त मन्त्र के प्रचलित ग्रन्थों में **नारद ऋषि, त्रिष्टप्छन्द, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्ति व प्रणव कीलक** कहा है।

(३) ३७ अक्षर मन्त्र - सांख्यायन तन्त्र में ५ वें पटल में अन्य मन्त्र है।

ॐ ह्लीं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाकं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

कामना भेद से कहीं **"वाचं मुखं पदं गतिं स्तम्भय"** है कहीं **स्तम्भय स्तम्भय** दो बार या कहीं **कीलय कीलय** दो बार है। कहीं **बुद्धि विनाशय विनाशय** अथवा **बुद्धिं नाशय नाशय** प्रयुक्त किया जाता है। ऐसा तन्त्र ग्रन्थों में प्राप्त है।

(४)ब्रह्मास्त्र माला –**ॐ आं ह्लीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं बगलामुखि आवेशयावेश आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररूपिणि एह्येहि ह्लीं क्रों मम हृदये आवहावह संनिधिं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों मम हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा।**

(५)**आम्नाय भेद-** मन्त्र के आदि में **"ह्लीं"** की जगह **"ह्रीं"** लगाने से उत्तर आम्नाय मन्त्र बनता है।

(६)**सुन्दरी भेद-** प्रथम बीज के साथ बाला बीज**"ऐं क्लीं सौः"** लगाने से बगलासुन्दरी मन्त्र उत्तरआम्नाय का हो जाता है। इसे उर्ध्वआम्नाय मन्त्र भी कहा है।

(७)बालाभिन्नपाद बगला मन्त्र- **ॐ ह्लीं ऐं क्लीं सौः बगलामुखी ऐं क्लीं सौः सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय ऐं क्लीं सौः जिह्वां कीलय ऐं क्लीं सौः बुद्धिं विनाशय ऐं क्लीं सौः ह्लीं ॐ स्वाहा।**

१. उभयाम्नाय मन्त्र- **श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवांछितं कार्यं साधय साधय ह्रीं श्रीं स्वाहा।**

२.पश्चिमाम्नाय मन्त्र-**ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा।**

३.पूर्वाम्नाय - **ॐ ह्रीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै स्वाहा।**

एकाक्षरी मन्त्र भी पूर्वाम्नाय व दक्षिणाम्नाय में गिना जाता है। ३६ अक्षर का मन्त्र दक्षिणआम्नाय फल देने वाला है।

४.उत्तर पूर्व आम्नाय मन्त्र - **श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले मे श्रियं देहि देहि स्वाहा।**

कामना भेद से संहार क्रम कालरात्रि व बगला समिष्टि मन्त्र है तथा वशीकरण हेतु सुमुखी बगला मातंगी मन्त्र शास्त्रों इसी तरह अन्य विद्याओं के संयोग से भी मन्त्र ग्रन्थों में उपलब्ध है।

॥ अथ वश्यकरी बगलासुमुखी मन्त्रः ॥

सुमुखीबगला मंत्र :- **ॐ नमो भगवत्यै पीताम्बरायै ह्लीं ह्लीं सुमुखी बगले विश्वं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा।** (महाकालसंहितायां कामकला खण्डे अष्टम पटले)

॥ ध्यानम् ॥

गौरी पीताम्बरधरा पीतस्रगनुलेपना। रत्नसिंहासनगता रत्नालङ्कारभूषिता॥

त्रिनेत्रा चन्द्रशकल विराजित-ललाटिका। सौन्दर्यसारविजित जगल्लावण्यपुञ्जिका॥

चतुर्भुजाङ्कुशवरे दक्षिणे विभ्रती करे। तथैव धारयन्ती च वामे दीपाभये करे॥

(ध्यातव्या भक्तिभावेन वश्यकर्म चिकीर्षता)

॥ अथ बगलाकालरात्रि मन्त्रः ॥ (शत्रुविध्वंसक प्रयोगः)

मंत्रः- **ॐ ह्लीं ह्लीं पीताम्बरे अस्मत् शत्रूणां जिह्वां कीलय कीलय वाणीं स्तंभय स्तंभय मर्दय मर्दय ध्वंसय ध्वंसय स्वाहा।**

विनियोगः- अस्य श्री बगलामुखि शत्रुनिवारिणी स्तोत्र मंत्रस्य आदि सृष्टिकर्ता दारुण ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः,पीताम्बरा देवता, ह्लीं शक्तिः, क्लीं कीलकं मम शत्रुविध्वंसनार्थे जपे विनियोगः।

ऋषि न्यासः- आदिसृष्टि कर्त्रे दारुण ऋषये नमः पादयोः, अनुष्टुप् छन्दसे नमो नाभौ, पीताम्बरा देवतायै नमो मुखे, ह्लीं शक्तये नमः शिरसि, क्लीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

ह्लां, ह्लीं इत्यादि से षडङ्गन्यास करें।

ध्यायेत् प्रेतासनां देवीं द्विभुजां च चतुर्भुजाम्। पीतवासां मणिग्रीवां सहस्रार्क समद्युतिम्॥

ॐ ह्रीं हंकारिणी प्रोक्ता श्रीं श्रीं त्र्यम्बकतोषिणी। विम्बाकराल वदना ह्यस्मद् वैरिनिवारिणी॥

स्त्रं स्त्रं दुकूल लंबोष्ठी फं फं स्वराग्रनासिका। खं खं खड्गप्रहारेण दुष्टवाणनिकृन्तिनी॥

ठं ठं विध्वंसिनी देवी बं बं बुद्धिस्तंभनमुत्तमा। रं रं राज्यादिकं देवी ....बुद्धिव्यतिक्रमा॥

लं लं लंबोदरी ध्यानात् सं सं सिद्धिप्रदा सदा। ह्लीं ह्लीं जय 'शत्रुलक्ष्मीं रुं रुं रुद्धयते सदा॥

अश्वचर्मासन पर दक्षिणाभिमुख वीरासन बैठकर हरिद्रा या वज्रमाला पर जप करे। अष्टगंध व हरिताल से पूजन करे। बलिकर्मादि पूर्ण क्रम करे।

॥मारण प्रयोगः॥

प्रतिमाग्रे वा श्मशाने, नदीतटे, वा एकान्ते वा स्वगृहे दृढचित्तो भक्तिसहितो निर्भयं जपेत्। श्मशान मृत्तिका लाये उस पर कुश का आसन लगाकर जप करे। ऐसे क्रूर कर्मों में स्वरक्षा विधान अवश्य करना चाहिये।

मंत्र :- **ॐ नमो भगवति भक्षकरणे चतुर्भुजे पीताम्बरे उर्ध्वकेशे विकृतानने कालरात्रि मानुषाणां वसारुधिरभोजने अमुकस्य मृत्युपदे लं फट् हन हन दह दह मांसं रुधिरं पिब पिब पच पच हुं फट् स्वाहा।** (यह मारण प्रयोग है इसका वर्णन देवीखण्ड पूर्वार्ध में दिया गया है)

इस मंत्र को कृष्णा चतुर्दशी वा उग्रदिन, वार नक्षत्रों में प्रारम्भ करे। रात्री को रोष चित्त से रिपुवध का स्मरण करते हुये जपे। अर्धरात्रि को हाथों से लिङ्गमस्तक पर मार्जन करे।

अथ बलिदानम् :- ॐ नमो ह्रीं अष्टभैरवाधिपतये सर्वकार्य प्रवृत्यर्थं सर्वशत्रु निवृत्यर्थं बलिं गृहाण गृहाण, दीपं गृहाण गृहाण मे कार्यं कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं फट् स्वाहा ।

॥ इति अथर्ववेदोक्त बगलारहस्ये सावर तंत्रे उल्लिखित विधानम्॥

॥ अथ बगलाचामुण्डा मन्त्रः॥

मंत्र :- **ॐ बगलाचामुण्डायै विच्चे घ घ घ स्वाहा॥** (महाकाल संहिता)

॥ बगलाप्रत्यंगिरा मन्त्रः ॥

मंत्र :- **ॐ ह्लीं ज्वलज्जिह्वे बगलाप्रत्यंगिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् भञ्जय-भञ्जय फें हुं फट् स्वाहा।**

॥ अथ बगलामुखी कवचम् ॥(रुद्रयामले)

॥ श्रीभैरवी उवाच ॥

श्रुत्वा च बगलापूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर। इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो ॥१॥

वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभविनाशनम्। शुभदं स्मरणात् पुण्यं त्राहि मां दुःखनाशन ॥२॥

॥ श्रीभैरव उवाच ॥

कवचं श्रृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे। पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत्॥ ३ ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीबगलामुखी कवचस्य नारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीबगलामुखी देवता। लं बीजं। ईं शक्तिं। ऐं कीलकम् । पुरुषार्थचतुष्टये जपे विनियोगः।

शिरो मे बगला पातु हृदयमेकाक्षरी परा। ॐ ह्रीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी ॥४॥

गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी। वैरिजिह्वा धरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी ॥५॥

उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात् परा। परात् परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी॥ ६॥

हस्तौ चैव तथा पातु पार्वती परिपातु मे। विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे ॥७॥

पीताम्बरधरा पातु सर्वाङ्गं शिवनर्तकी। श्रीविद्या समयं पातु मातङ्गी पूरिता शिवा ॥८॥

पातु पुत्रं सुतां चैव कलत्रं कालिका मम। पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा ॥९॥

रन्ध्रे हि बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम्। न वै देयममुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥१०॥

पठनाद् धारणादस्य पूजनाद् वाञ्छितंलभेत् ।इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम् ॥११ ॥

पिवन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः । वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा ॥१२ ॥

महाभयेविपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत् तु यः ।तस्य सर्वार्थसिद्धिःस्याद्भक्तियुक्तस्य पार्वति ॥१३ ॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले श्रीबगलामुखी कवचम् सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री बगला प्रत्यंगिरा कवचम् ॥

॥ श्री शिव उवाच ॥

अधुनाऽहं प्रवक्ष्यामि बगलायाः सुदुर्लभम् । यस्य पठन मात्रेण पवनोपि स्थिरायते ॥

प्रत्यंगिरां तां देवेशि श्रृणुष्व कमलानने । यस्य स्मरण मात्रेण शत्रवो विलयं गताः ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

स्नेहोऽस्ति यदि मे नाथ संसारार्णव तारक । तथा कथय मां शम्भो बगलाप्रत्यंगिरा मम ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

यं यं प्रार्थयते मन्त्री हठात्तंतमवाप्नुयात् । विद्वेषणाकर्षणे च स्तम्भनं वैरिणां विभो ॥

उच्चाटनं मारणं च येन कर्तुं क्षमो भवेत् । तत्सर्वं ब्रूहि मे देव यदि मां दयसे हर ॥

॥ श्री सदाशिव उवाच ॥

अधुना हि महादेवि परानिष्ठा मतिर्भवेत् । अतएव महेशानि किंचिन्न वक्तुमर्हसि ॥

॥ श्री पार्वत्युवाच ॥

जिघान्सन्तं जिघान्सीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत् । श्रुतिरेषाहि गिरिश कथं मां त्वं निनिन्दसि ॥

॥ श्री शिवउवाच ॥

साधु साधु प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्वावहितानघे । प्रत्यंगिरां बगलायाः सर्वशत्रुनिवारिणीम् ॥

नाशिनी सर्व दुष्टानां सर्व- पापौघ- हारिणीम्। सर्वप्राणिहितां देवीं सर्व दुःख विनाशिनीम्॥

भोगदां मोक्षदां चैव राज्य सौभाग्य दायिनीम्।मन्त्र - दोष - प्रमोचनीं ग्रहदोष निवारिणीम्॥

विनियोगः :- अस्य श्री बगला प्रत्यंगिरा मन्त्रस्य नारद ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः, प्रत्यंगिरा देवता, ह्लीं बीजं, हुं शक्तिः ह्रीं कीलकं, ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यंगिरा मम शत्रु विनाशे विनियोगः।

ॐ प्रत्यंगिरायै नमः प्रत्यंगिरे सकल कामान् साधय मम रक्षां कुरु कुरु सर्वान् शत्रून् खादय खादय मारय मारय घातय घातय ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

ॐ भ्रामरी स्तम्भिनी देवी क्षोभिणीमोहिनी तथा।संहारिणी द्राविणी च जृम्भिणी रौद्ररूपिणी॥

इत्यष्टौ शक्तयो देवि शत्रु पक्षे नियोजिताः। धारयेत् कण्ठदेशे च सर्वशत्रु विनाशिनी॥

ॐ ह्रीं भ्रामरि सर्वशत्रून् भ्रामाय भ्रामय ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्षोभिणि मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं मोहिनि मम शत्रून्मोहय मोहय ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं संहारिणि मम शत्रून् संहारय संहारय ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं द्राविणि मम शत्रून् द्रावय द्रावय ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं जृम्भिणि मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं रौद्रि मम शत्रून् सन्तापय सन्तापय ॐ ह्रीं स्वाहा।

इयं विद्या महाविद्या सर्व शत्रु निवारिणी। धारिता साधकेन्द्रेण सर्वान् दुष्टान् विनाशयेत्॥

त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेत्स्थिरमानसः। न तस्य दुर्लभं लोके कल्पवृक्ष इव स्थितः॥

यं यं स्पृशति हस्तेन यं यं पश्यति चक्षुषा। स एव दासतां याति सारात्सारामिमं मनुम्॥

इस कवच पाठ से वायु भी स्थिर होजाती है।शत्रु का विलय होजाता है।विद्वेषण, आकर्षण,उच्चाटन,मारण तथा शत्रु का स्तम्भन भी इस कवच के पढ़ने से होता है। बगला प्रत्यंगिरा सर्व दुष्टों का नाश करने वाली सभी दुःखों को हरने वाली, पापों का नाश करने वाली सभी शरणागतों का हित करने वाली, भोग,मोक्ष, राज्य और सौभाग्य प्रदायिनी तथा नवग्रहों के दोषों का दूर करनेवाली हैं।जो साधक इस कवचका पाठ तीनोंसमय अथवा एक समय भी स्थिर मन से करता है,उसके लिए यह कल्पवृक्ष के समान है,और तीनों लोकों में उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।साधक जिसकी ओर भरपूर दृष्टि से देख ले,अथवा हाथ से किसी को छू भर दे, वही मनुष्य दासतुल्य हो जाता है।

॥ इति श्री रुद्रयामले शिवपार्वति सम्वादे बगला प्रत्यंगिरा कवचम् ॥

॥ बगलामुखी कीलक स्तोत्रम् ॥

स्थान व देह रक्षा, शत्रुनिग्रह एवं विजय प्राप्ति हेतु

ह्लीं ह्लीं ह्लींकारवाणे रिपुदलदलने घोरगम्भीरनादे।

ह्रीं ह्रींकाररूपे मुनिगणनमिते सिद्धिदे शुभ्रदेहे॥

भ्रों भ्रों भ्रोंकारनादे निखिलरिपुघटात्रोटने लग्नचित्ते।

मातर्मातर्नमस्ते सकलभयहरे नौमि पीताम्बरे त्वाम्॥१॥

क्रौं क्रौं क्रौंमीशरूपे अरिकुलहनने देहकीले कपाले।

हस्रौं हस्रौं स्वरूपे समरसनिरते दिव्यरूपे स्वरूपे॥

ज्रौं ज्रौं ज्रौं जातरूपे जहिजहि दुरितं जम्भरूपे प्रभावे।

कालिकङ्कालरूपे अरिजनदलने देहि सिद्धिंपरां मे॥२॥

हस्रां हस्रीं च हस्रें त्रिभुवनविदिते चण्डमार्त्तण्डचण्डे।

ऐं क्लीं सौं कौलविद्ये सततशमपरे नौमि पीतस्वरूपे॥

द्रौं द्रौं द्रौं दुष्टचित्ताऽऽदलनपरिणतबाहुयुग्मत्वदीये।

ब्रह्मास्त्रे ब्रह्मरूपे रिपुदलहनने ख्यातदिव्यप्रभावे॥३॥

ठं ठं ठंकारवेशे ज्वलनप्रतिकृतिज्वालमालास्वरूपे।

धां धां धां धारयन्तीं रिपुकुलरसनां मुद्गरं वज्रपाशम्।

मातर्मातर्नमस्ते प्रबलखलजनं पीडयन्तीं भजामि।

डांडांडां डाकिन्याद्यैर्डिमकडिमडिमं डमरुकं वादयन्तीम्॥४॥

वाणीं व्याख्यानदात्रीं रिपुमुखखनने वेदशास्त्रार्थपूताम्।

मातः श्री बगले परात्परतरे वादे विवादे जयम्॥

देहि त्वं शरणागतोऽस्मि विमले देवि प्रचण्डो द्धृते।

माङ्गल्यं वसुधासु देहि सततं सर्वस्वरूपे शिवे ॥५॥

निखिलमुनिनिषेव्यं स्तम्भनं सर्वशत्रोः। शमपरमिह नित्यं ज्ञानिनां हार्दरूपम्॥

अहरहरनिशायां यः पठेद्देवि कीलम्। भवति परमेशो वादिनामग्रगण्यः॥६॥

॥ कृत्यानाशक श्रीबगला सूक्तम्॥

(अथर्ववेद पंचमकाण्डे षष्ठोऽनुवाक)

इस स्तोत्र का प्रयोग कृत्यानाश के लिये श्रेष्ठ है। किसी भी शत्रु ने अस्थि, मज्जा, वसा, माँस, पशुबलि या धान्यादि के द्वारा यज्ञशाला या श्मशान में कोई प्रयोग किया होतो उसका शमन होता है।मंत्र में शपथ है कि हे कृत्या तू हमारी अँगुलि की भी हानि नहीं कर सकती, तु कृत्या करने वाले पर ही वापस लौट जा।अन्यथा इन्द्र वज्र से मारेगा और अग्नि तुझे जला देगी।

यांते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्यके ।आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनःप्रतिहरामि ताम् ॥१ ॥

यांते चक्रुःकृकवाका वजेवा यां कुरीरिणि ।अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनःप्रतिहरामि ताम् ॥२ ॥

यां ते चक्रुरेकशफे पशूनामुभयादति। गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥३ ॥

यां ते चक्रुरमूलायां वलगं वा नराच्याम्। क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥४ ॥

यां ते चक्रुगार्हिपत्ये पूर्वाग्नावुत दुश्चितः ।शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥५ ॥

यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधिदेवते। अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥६ ॥

ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे। दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥७ ॥

यां ते कृत्यां कूपे वदधुःश्मशानेवा निचनुः ।सद्मनि कृत्यां यांचक्रुः पुनः प्रतिहरामि ताम् ॥ ८ ॥

यांते चक्रुःपुरुषस्यास्थे अग्नौ संकसुके च याम् ।म्रोकं निर्दाहं क्रव्यादं पुनःप्रतिहरामि ताम् ॥९ ॥

अपथैनाज भारैणां तां पथेतः प्रहिण्मसि। अधीरो मर्या धीरेभ्यः संजभाराचित्या ॥१० ॥

यश्चकार न शशाक कर्तुं शभ्रे पादमङ्गुरिम्। चकार भद्रस्मभ्यमभगो भगवद्भ्यः ॥११ ॥

कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेऽप्ययम्। इन्द्रस्तं हन्तुमहता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया ॥१२ ॥

॥अथ श्री पीताम्बराबगलामुखी खड्गमाला मन्त्रः ॥

यह स्तोत्र शत्रुनाश एवं कृत्यानाश, परविद्या छेदन करने वाला एवं रक्षाकार्य हेतु प्रभावी है। साधारण साधकों को कुछ समय आवेश व आर्थिक दबाव रहता है, अतः पूजा उपरांत नमस्तस्यादि शांति स्तोत्र पढ़ने चाहिये।

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीपीताम्बरा बगलामुखी खड्गमाला मन्त्रस्य नारायण ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे सर्वशत्रुक्षयार्थे जपे विनियोगः।

हृदयादिन्यास :- नारायण ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टप्छन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहा शक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः-ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः,सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः,वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि न्यासं कृत्वा।

॥ ध्यानम् ॥

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डित रत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवस्त्राम्।

भ्राम्यद्गदां करनिपीडित वैरिजिह्वां पीताम्बरां कनकमाल्यवतीं नमामि॥

मानसोपचारैः सम्पूज्य जपं कुर्यात्।

ॐ ह्लीं सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय बुद्धिं विनाशय विनाशय अपर बुद्धिं कुरु कुरु अपस्मारं कुरु कुरु आत्मविरोधिनां शिरो ललाट मुख नेत्र कर्ण नासिका दन्तोष्ठ जिह्वा तालु कण्ठ बाहूदर कुक्षि नाभि पार्श्वद्वय गुह्य गुदाण्ड त्रिक जानुपाद सर्वाङ्गेषु पादादिकेशपर्यन्तं केशादिपाद पर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय मारय मारय परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्राणि छेदयछेदय आत्ममन्त्र यन्त्रतन्त्राणि रक्ष रक्ष, सर्वग्रहान् निवारय निवारय सर्वम् अविधिं विनाशय विनाशय दुःखं हनहन दारिद्यं निवारय निवारय सर्व मन्त्रस्वरूपिणि सर्वशल्ययोग स्वरूपिणि दुष्टग्रह चण्डग्रह भूतग्रहाऽऽकाशग्रह चौरग्रह पाषाणग्रह चाण्डाल ग्रह यक्षगन्धर्वकिंनरग्रह ब्रह्मराक्षसग्रह भूत-प्रेत-पिशाचादीनां शाकिनी डाकिनी ग्रहाणां पूर्वदिशं बन्धय बन्धय, वाराहि बगलामुखी मां रक्ष रक्ष दक्षिणदिशं बन्धय बन्धय, किरातवाराहि मां रक्ष रक्ष पश्चिमदिशं बन्धय बन्धय,स्वप्नवाराहि मां रक्षरक्ष उत्तरदिशं बन्धयबन्धय धूम्रवाराहि मां रक्षरक्ष सर्वदिशो बन्धयबन्धय, कुक्कुटवाराहि मां रक्ष रक्ष अधरदिशं बन्धय बन्धय परमेश्वरि मां रक्ष रक्ष सर्वरोगान् विनाशय विनाशय, सर्वशत्रुपलायनाय सर्वशत्रुकुलं मूलतो नाशय नाशय,शत्रूणां राज्यवश्यं स्त्रीवश्यं जनवश्यं दह दह पच पच सकललोकस्तम्भिनि शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्तम्भनमोहनाऽऽकर्षणाय सर्वरिपूणाम् उच्चाटनं कुरु कुरु ॐ ह्लीं क्लीं ऐं वाक्प्रदानाय क्लीं जगत्त्रयवशीकरणाय सौः सर्वमनः क्षोभणाय श्री महासम्पत्प्रदानाय ग्लौं सकलभूमण्डलाधिपत्य प्रदानाय दां चिरंजीवने। ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लां क्लीं क्लूं सौःॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व

दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय राजस्तम्भिनि क्रों क्रों छ्रीं छ्रीं सर्वजन संमोहिनि सभास्तंभिनि स्त्रां स्त्रीं सर्वमुखरञ्जिनि मुखं बन्धय बन्धय ज्वल ज्वल हंस हंस राजहंस प्रतिलोम इहलोक परलोक परद्वार राजद्वार क्लीं क्लूं घ्रीं रूं क्रों क्लीं खाणि खाणि जिह्वां बन्धयामि सकलजन सर्वेन्द्रियाणि बन्धयामि नागाश्व मृग सर्प विहङ्गम वृश्चिकादि विषं निर्विषं कुरु कुरु शैलकानन महीं मर्दय मर्दय शत्रूनोत्पाटयोत्पाटय पात्रं पूरय पूरय महोग्रभूतजातं बन्धयामि बन्धयामि अतीतानागतं सत्यं कथयकथय लक्ष्मीं प्रददामि प्रददामि त्वम् इह आगच्छ आगच्छ अत्रैव निवासं कुरुकुरु ॐ ह्लीं बगले परमेश्वरि हुं फट् स्वाहा।

पुनः विशेष-

मूलमन्त्रवता कुर्याद् विद्यां न दर्शयेत् क्वचित्। विपत्तौ स्वप्नकाले च विद्यां स्तम्भिनीं दर्शयेत्।

गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः। प्रकाशनात् सिद्धिहानिः स्याद् वश्यं मरणं भवेत्।

दद्यात् शान्ताय सत्याय कौलाचारपरायणः। दुर्गाभक्ताय शैवाय मृत्युञ्जयरताय च।

तस्मै दद्याद् इमं खड्गं स शिवो नात्र संशयः। अशाक्ताय च नो दद्याद् दीक्षाहीनाय वै तथा।

न दर्शयेद् इमं खड्गम् इत्याज्ञा शङ्करस्य च।

॥ इति श्रीविष्णुयामले बगलाखड्गमालामन्त्रः समाप्तः ॥

॥ अथ श्री बगला ब्रह्मास्त्र मालामन्त्रः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवति चामुण्डे नरकंकगृध्रोलूक परिवार सहिते श्मशानप्रिये नररुधिर मांसचरु भोजन प्रिये सिद्धविद्याधर वृन्द वन्दित चरणे ब्रह्मेश विष्णुवरुण कुबेर भैरवी भैरवप्रिये इन्द्रक्रोध विनिर्गत शरीरे द्वादशादित्य चण्डप्रभे अस्थिमुण्डकपालमालाभरणे शीघ्रं दक्षिणदिशि आगच्छागच्छमानय २ नुद २ अमुकं मारय २ चूर्णय २ आवेशयावेशय त्रुट २ त्रोटय २ स्फुट २ स्फोटय २ महाभूतान् जृम्भय २ ब्रह्मराक्षसानुच्चाटयोच्चाटय भूत-प्रेत पिशाचान् मूर्च्छय २ मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शत्रून् चूर्णय २ सत्यं कथय २ वृक्षेभ्यः संन्नाशय २ अर्क स्तम्भय २ गरुड पक्षपातेन विषं निर्विषं कुरु २ लीलांगालय वृक्षेभ्यः

परिपातय २ शैलकाननमहीं मर्दय २ मुखं उत्पाटयोत्पाटय पात्रं पूरय २ भूत भविष्यं यत्सर्वं कथय २ कृन्त २ दह २ पच २ मथ २ प्रमथ २ घर्घर २ ग्रासय २ विद्रावय २ उच्चाटयोच्चाटय विष्णुचक्रेण वरुणपाशेन इन्द्रवज्रेण ज्वरं नाशय नाशय प्रविदं स्फोटय २सर्वशत्रून् मम वशं कुरु कुरु पातालं प्रत्यंतरिक्षं आकाशग्रहं आनयानय करालि विकरालि महाकालि रुद्रशक्ते पूर्वदिशं निरोधय २ पश्चिमदिशं स्तम्भय २ दक्षिणदिशं निधय २ उत्तरदिशं बंधय २ ह्रां ह्रीं ॐ बंधय २ ज्वालामालिनि स्तम्भिनि मोहिनि मुकुट विचित्र कुण्डल नागादि वासुकी कृतहार भूषणेमेखला चन्द्रार्कहास प्रभंजने विद्युत्स्फुरित सकाश साट्टहासे निलय २ हुं फट् २ विजृंभितशरीरे सप्तदीपकृते ब्रह्माण्ड विस्तारितस्तनयुगले असिमुसल परशुतोमरक्षुरिपाशहलेषु वीरान् शमय शमय २ सहस्त्रबाहु परापरादि शक्ति विष्णु शरीरे शंकरहृदयेश्वरि बगलामुखि सर्वदुष्टान् विनाशय २ हुंफट् स्वाहा। ॐ ह्लीं बगलामुखि ये केचनापकारिणः सन्ति तेषां वाचं मुखं पदं स्तम्भय २ जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय २ ह्रीं ॐ स्वाहा ॐ ह्लींह्लीं हिली हिली अमुकस्य वाचं मुखं पदं स्तम्भय शत्रुजिह्वां कीलय शत्रूणां दृष्टिमुष्टि गतिमति दंत तालु जिह्वां बंधय २ मारय २ शोषय २ हुंफट् स्वाहा ।

॥ इति बगलातन्त्रे ब्रह्मास्त्रमालामन्त्रः सम्पूर्णः ॥

॥ अथ बगलामुखी हृदय स्त्रोतम् ॥

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीबगलामुखी हृदयमालामन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकं श्रीबगलामुखीवरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे (पाठे)विनियोगः ।

अथ न्यासः- ॐ अस्य श्रीबगलामुखी हृदयमालामन्त्रस्य नारद ऋषये नमः-शिरसि, ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः - मुखे,ॐ श्रीबगलामुख्यै देवतायै नमः - हृदये,ॐ ह्लीं बीजाय नमः - गुह्ये, ॐ क्लीं शक्तये नमः - पादयोः, ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ कराङ्गन्यासौ -ॐह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,ॐक्लीं तर्जनीभ्यां नमः,ॐऐं मध्यमाभ्यां नमः, ॐह्लीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐक्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ॐ

ह्लीं हृदयाय नमः,ॐक्लीं शिरसे स्वाहा,ॐऐं शिखायै वषट्,ॐह्लीं कवचाय हुम्,ॐक्लीं नेत्र त्रयाय वौषट्,ॐऐं अस्त्राय फट् ॥ॐ ह्लीं क्लीं ऐं इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्:-पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरणभूषिताम् ।पीतकञ्जपदद्वन्द्वां बगलां चिन्तयेऽनिशम् ॥

इति ध्यात्वा सम्पूज्य,

प्रार्थना:- पीतशङ्खगदाहस्ते पीतचन्दनचर्चिते। बगले मे वरं देहि शत्रुसङ्घविदारिणी ॥

इति सम्प्रार्थ्य, **ॐह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा।**इति मन्त्रं जपित्वा स्तोत्रं च पठेत् ।

॥ अथ स्त्रोतम् ॥

वन्देऽहं बगलां देवीं पीतभूषणभूषिताम्। तेजोरूपमयीं देवीं पीततेजः स्वरूपिणीम् ॥ १ ॥

गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भ्रुकुटीभीषणाननाम्। भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भव्यस्य भक्तिदाम् ॥ २ ॥

पूर्णचन्द्रसमानास्यां पीतगन्धानुलेपनाम्। पीताम्बरपरीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम् ॥ ३ ॥

पालयन्तीमनुपलं प्रसमीक्ष्याऽवनीतले। पीताचाररतां भक्तां स्ताम्भवानीं भजाम्यहम् ॥ ४ ॥

पीतपद्मपदद्वन्द्वां चम्पकारण्य रूपिणीम्। पीतावतंसां परमां वन्दे पद्मजवन्दिताम् ॥ ५ ॥

लसञ्चारुसिञ्जत्सुमञ्जीरपादां चलत्स्वर्णकर्णावतंसाञ्चितास्याम्।

वलत्पीतचन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां भजे पद्मजादीड्यसत्पादपद्माम् ॥६ ॥

सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं परं ते जपन्तो जयं संलभन्ते।

रणे रागरोषाप्लुतानां रिपूणां विवादे बलाद्वैरकृद्धातमातः ॥७ ॥

भरत्पीतभास्वत्प्रभाहस्कराभां गदागञ्जितामित्रगर्वां गरिष्ठाम्।

गरीयोगुणागारगात्रां गुणाढ्यां गणेशादिगम्यां श्रये निर्गुणाड्याम् ॥ ८ ॥

जना ये जपन्त्युग्रबीजं जगत्सु परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम्।

भवेद् वादिनां वाङ्मुखस्तम्भ आद्ये जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम्॥ ९॥

तव ध्याननिष्ठाप्रतिष्ठात्मप्रज्ञावतां पादपद्मार्चने प्रेमयुक्ताः।

प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा पुराणादिगा दासतुल्या भवन्ति॥१०॥

नमामस्ते मातः कनककमनीयाङ्घ्रिजलजम्। बलद्विद्युद्वर्णं घनतिमिरविध्वंसकरणम्॥

भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरणकरणं सर्वशरणम्। प्रपन्नानां मातर्जगति बगले दुःखदमनम्॥११॥

ज्वलज्ज्योत्स्ना रत्नाकरमणिविभुषिक्ताङ्क भवनम्। स्मरामस्ते धाम स्मरहरहरीन्द्रेन्दुप्रमुखैः॥

अहोरात्रं प्रातः प्रणयनवनीयं सुविशदम्। परं पीताकारं परिचितमणिद्वीपवसनम्॥ १२॥

वदामस्ते मातः श्रुतिसुखकरं नाम ललितम्। लसन्मात्रावर्णं जगति बगलेति प्रचरितम्॥

चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने।भजामोयच्छ्रेयो दिवि दुरवलभ्यं दिविषदाम्॥१३॥

पदार्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु। यथा ते प्रासन्यं प्रतिपलमपेक्ष्यं प्रणमताम्॥

अनल्पं तन्मातर्भवति भृतभक्त्या भवतु नो।दिशातः सद्भक्तिं भुविभगवतां भूरिभवदाम्॥१४॥

मम सकलरिपूणां वाडमुखे स्तम्भयाशु। भगवति रिपुजिह्वां कीलय प्रस्थतुल्याम् ॥

व्यवसितखलबुद्धिं नाशयाऽऽशु प्रगल्भाम्।मम कुरु बहुकार्य सत्कृपेऽम्ब प्रसीद॥१५॥

व्रजतु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था। करधृतगदया तान् घातयित्वाऽऽशु रोषात्॥

सघनवसनधान्यं सद्म तेषां प्रदह्य। पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम्॥१६॥

करधृतरिपुजिह्वा पीडनव्यग्रहस्तां। पुनरपि गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम्॥

प्रणतसुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रां। बहुबलबगलान्तां पीतवस्त्रां नमामः॥१७॥

हृदयवचनकाय: कुर्वतां भक्तिपुञ्जं। प्रकटति करुणार्द्रा प्रीणती जल्पतीति॥

धनमथ बहुधान्यं पुत्रपौत्रादिवृद्धिः। सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्ववश्यम्॥१८॥

तव चरणसरोजं सर्वदा सेव्यमानं। द्रुहिणहरिहराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम्॥

मृदुलमपि शरं ते शर्म्मदं सूरिसेव्यं। वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम्॥१९॥

बगलाहृदयस्तोत्रमिदं भक्तिसमन्वितः।पठेद्यो बगला तस्य प्रसन्नापाठतो भवेत्॥२०॥

पीताध्यानपरोभक्तो यःश्रृणोत्यविकल्पत।निष्कल्मषो भवेन् मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात्॥२१॥

आश्विनस्य सिते पक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम्।यस्त्विदं पठते प्रेम्णा बगलाप्रीतिमेति सः॥२२॥

देव्यालये पठन् मर्त्यो बगलां ध्यायतीश्वरीम्।पीतवस्त्रावृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः॥२३॥

पीताचाररतो नित्यं पीतभूषां विचिन्तयन्। बगलां यः पठेन् नित्यं हृदयस्तोत्रमुत्तमम्॥२४॥

न किंचिद्दुर्लभं तस्यदृश्यते जगतीतले।शत्रवो ग्लानिमायान्ति तस्य दर्शनमात्रतः॥२५॥

॥ इति श्रीसिद्धेश्वरतन्त्रे उत्तरखण्डे बगलापटले श्रीबगलाहृदयं समाप्तम्॥

॥ अथ श्री त्रैलोक्यविजय कवचम्॥

॥ श्री भैरव उवाचः॥

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्वरहस्यं च कामदम्। श्रुत्वा गोप्यं गुप्ततमं कुरु गुप्तं सुरेश्वरि॥१॥

कवचं बगलामुख्याः सकलेष्टप्रदं कलौ। तत्सर्वस्वं परं गुह्यं गुप्तं च शरजन्मना॥ २ ॥

त्रैलोक्यविजयं नाम कवचेशं मनोरमम्। मन्त्रगर्भं ब्रह्ममयं सर्वविद्या विनायकम्॥३॥

रहस्यं परमं ज्ञेयं साक्षादमृतरूपकम्। ब्रह्मविद्यामयं वर्म दुर्लभं प्राणिनां कलौ॥ ४ ॥

पूर्णमेकोनपञ्चाशद् वर्णैरुक्तं महेश्वरि। त्वद्भक्त्या वच्मि देवेशि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥५॥

॥ श्री देव्युवाचः॥

भगवन् करुणासार विश्वनाथ सुरेश्वर। कर्मणा मनसा वाचा न वदामि कदाचन ॥१ ॥

॥ श्री भैरव उवाचः ॥

त्रैलोक्य विजयाख्यस्य कवचस्यास्य पार्वति। मनुगर्भस्य गुप्तस्य ऋषिर्देवोऽस्य भैरवः ॥१ ॥

उष्णिक्छन्दःसमाख्यातंदेवीश्रीबगलामुखी ।बीजं ह्लींॐशक्तिःस्यात् स्वाहा कीलकमुच्यते ॥२ ॥

विनियोगः समाख्यातः त्रिवर्गफलप्राप्तये। देवि त्वं पठ वर्मैतन्मन्त्रगर्भं सुरेश्वरि ॥३ ॥

बिनाध्यानं कुतः सिद्धि सत्यमेतच्च पार्वति।

चन्द्रोद्भासितमूर्धजां रिपुरसां मुण्डाक्षमालाकराम् ॥४ ॥

बालांसत्स्त्रकचञ्चलां मधुमदां रक्तां जटाजूटिनीम्।

शत्रुस्तम्भनकारिणीं शशिमुखीं पीताम्बरोद्भासिनीम् ॥५ ॥

प्रेतस्थां बगलामुखीं भगवतीं कारुण्यरूपां भजे।

ॐ ह्रीं मम शिरः पातु देवी श्रीबगलामुखी ॥६ ॥

ॐ ऐं क्लीं पातु मे भालं देवी स्तम्भनकारिणी।

ॐ अं इं हं भ्रुवौ पातु क्लेशहारिणी ॥७ ॥

ॐ हं पातु मे नेत्रे नारसिंही शुभङ्करी

ॐ ह्लीं श्रीं पातु मे गण्डौ अं आं इं भुवनेश्वरी ॥८ ॥

ॐ ऐं क्लीं सौः श्रुतौ पातु इं ईं ऊं च परेश्वरी।

ॐ ह्लीं ह्लूं ह्लीं सदाव्यान्मे नासां ह्लीं सरस्वती ॥९ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं मे मुखं पातु लीं एं ऐं छिन्नमस्तिका।

ॐ श्रीं वं मेऽधरौ पातु ओं औं दक्षिणकालिका ॥१० ॥

ॐ क्लीं श्रीं शिरसः पातु कं खं गं घं च सारिका।

ॐ ह्रीं ह्रूं भैरवी पातु ङं अं अः त्रिपुरेश्वरी॥११॥

ॐ ऐं सौः मे हनुं पातु चं छं जं च मनोन्मनी।

ॐ श्रीं श्रीं मे गलं पातु झं जं टं ठं गणेश्वरी॥१२॥

ॐ स्कन्धौ मेऽव्याद् डं ढं णं हूं हूं चैव तु तोतला।

ॐ ह्रीं श्रीं मे भुजौ पातु तं थं दं वरवर्णिनी॥१३॥

ऐं क्लीं सौः स्तनौ पातु धं नं पं परमेश्वरी।

क्रों क्रों मे रक्षयेद् वक्षः फं बं भं भगवासिनी॥१४॥

ॐ ह्रीं रां पातु कुक्षि मे मं यं रं वह्निवल्लभा।

ॐ श्रीं ह्रूं पातू मे पार्श्वो लं बं लम्बोदर प्रसूः॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं हूं पातु मे नाभि शं षं षण्मुखपालिनी।

ॐ ऐं सौः पातु मे पृष्ठं सं हं हाटकरूपिणी॥१६॥

ॐ क्लीं ऐं कटिं पातु पञ्चाशद्वर्णमालिका।

ॐ ऐं क्लीं पातु मे गुह्यं अं आं कं गुह्यकेश्वरी॥१७॥

ॐ श्रीं ऊं ॠं सदाव्यान्मे इं ईं खं खां स्वरूपिणी।

ॐ जूं सः पातु मे जंघे रुं रूं धं अघहारिणी॥१८॥

श्रीं ह्रीं पातु मे जानू उं ऊं णं गणवल्लभा।

ॐ श्रीं सः पातु मे गुल्फौ लिं लीं ऊं चं च चण्डिका॥१९॥

ॐ ऐं ह्रीं पातु मे वाणी एं ऐं छं जं जगत्प्रिया।

ॐ श्रीं क्लीं पातु पादौ मे झं जं टं ठं भगोदरी ॥२० ॥

ॐ ह्रीं सर्वं वपुः पातु अं अः त्रिपुरमालिनी।

ॐ ह्रीं पूर्वे सदाव्यान्मे झं झां डं ढं शिखामुखी ॥२१ ॥

ॐ सौः याम्यं सदाव्यान्मे इं ईं णं तं च तारिणी।

ॐ वारुण्यां च वाराही ऊं थं दं धं च कम्पिला॥ २२ ॥

ॐ श्रीं मां पातु चैशान्यां पातु ॐ नं जनेश्वरी।

ॐ श्रीं मां चाग्नेयां ॠ भं मं धं च यौगिनी॥ २३ ॥

ॐ ऐं मां नैऋत्यां लूं लां राजेश्वरी तथा।

ॐ श्रीं पातु वायव्यां लूं लं वीतकेशिनी।

ॐ प्रभाते च मो पातु लीं लं वागीश्वरी सदा ॥२४ ॥

ॐ मध्याह्ने च मां पातु ऐं क्षं शङ्करवल्लभा।

श्रीं ह्रीं क्लीं पातु सायं ऐ आं शाकम्भरी सदा॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं निशादौ मां पातु ॐ सं सागरवासिनी।

क्लीं निशीथे च मां पातु ॐ हं हरिहरेश्वरी॥ २६ ॥

क्लीं ब्राह्मे मुहूर्तेऽव्याद लं लां त्रिपुरसुन्दरी।

विसर्गा तु यत्स्थानं वर्जित कवचेन तु ॥२७ ॥

क्लीं तन्मे सकलं पातु अं क्षं ह्रीं बगलामुखी।

इतीदं कवचं दिव्यं मन्त्राक्षरमय परम्॥२८॥

त्रैलाक्यविजयं नाम सर्ववर्णमयं स्मृतम्। अप्रकाश्यं सदा देवि श्रोतव्यं च वाचिकम्॥२९॥

दुर्जनायाकुलीनाय दीक्षाहीनाय पार्वति। न दातव्यं न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी॥३०॥

दीक्षाकार्य विहीनाय शक्तिभक्ति विरोधिने।कवचस्यास्य पठनात्साधको दीक्षितो भवेत्॥३१॥

कवचेशमिदं गोप्यं सिद्धविद्यामयं परम्। ब्रह्मविद्यामयं गोप्यं यथेष्टफलदं शिवे॥३२॥

न कस्य कथितं चैतद् त्रैलोक्य विजयेश्वरम्। अस्य स्मरणमात्रेण देवी सद्योवशी भवेत्॥३३॥

पठनाद् धारणादस्य कवचेशस्य साधकः। कलौ विचरते वीरो यथा श्रीबगलामुखी॥३४॥

इदं वर्म स्मरन् मन्त्री संग्रामे प्रविशेद् यदा।युयुत्सुः पठन् कवचं साधको विजयी भवेत्॥३५॥

शत्रुं कालसमानं तु जित्वा स्वगृहमेति सः। मूर्ध्नि धृत्वा यः कवचं मन्त्रगर्भं सुसाधकः॥३६॥

ब्रह्माद्यमरान् सर्वान् सहसा वशमानयेत्। धृत्वा गले तु कवचं साधकस्य महेश्वरि॥३७॥

वशमायान्ति सहसा रम्भाद्यप्सरसां गणाः। उत्पातेषु घोरेषु भयेषु विविधेषु च॥३८॥

रोगेषु च कवचेशं मन्त्रगर्भं पठेन्नरः। कर्मणा मनसा वाचा तद्भयं शांतिमेष्यति॥३९॥

श्रीदेव्या बगलामुख्याः कवचेशं मयोदितम्। त्रैलोक्यविजयं नाम पुत्रपौत्र धनप्रदम्॥४०॥

ऋणं च हरते सम्यक् लक्ष्मीर्भोगविवर्धिनी। बन्ध्या जनयते कुक्षौ पुत्ररत्नं न चान्यथा॥४१॥

मृतवत्सा च विभृयात् कवचं च गले सदा। दीर्घायुर्व्याधिहीनश्च तत्पुत्रो वर्धतेऽनिशम्॥४२॥

इतीदं बगलामुख्याः कवचेशं सुदुर्लभम्। त्रैलोक्यविजयं नाम न देयं यस्यकस्यचित्॥४३॥

अकुलीनाय मूढाय भक्तिहीनाय दम्भिने। लोभयुक्ताय देवेशि न दातव्यं कदाचन॥४४॥

लोभदम्भविहीनाय कवचेशं प्रदीयताम्। अभक्तेभ्यो अपुत्रेभ्यो दत्वा कुष्ठी भवेन्नरः॥ ४५ ॥

रवौ रात्रौ च सुस्नातः पूजागृहगतः सुधीः। दीपमुज्वाल्य मूलेन पठेद्वर्मेदमुत्तमम् ॥४६ ॥

प्राप्तौ सत्यां त्रिरात्रौ हि राजा तद्गृहमेष्यति। मण्डलेशो महेशानि देवि सत्यं न संशय ॥४७ ॥

इदं तु कवचेशं तु मया प्रोक्तं नगात्मजे। गोप्यं गुह्यतरं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥४८ ॥

॥ इति विश्वयामले बगलामुख्यास्त्रैलोक्यविजयं कवचम् ॥

॥अथ बगलाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

शतनाम स्तोत्र से देव कृपा होती है तथा अंगरक्षक के समान कार्य करता है।

ब्रह्मास्त्ररूपिणी देवी माताश्रीबगलामुखी। चिच्छक्तिर्ज्ञानरूपा च ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥१ ॥

महाविद्या महालक्ष्मी श्रीमत्रिपुरसुन्दरी। भुवनेशी जगन्माता पार्वती सर्वमङ्गला ॥२ ॥

ललिता भैरवी शान्ता अन्नपूर्णा कुलेश्वरी। वाराही छिन्नमस्ता च तारा काली सरस्वती ॥ ॥

जगत्पूज्या महामाया कामेशी भगमालिनी। दक्षपुत्री शिवांकस्था शिवरूपा शिवप्रिया ॥४ ॥

सर्वसम्पत्करी देवी सर्वलोक वशङ्करी। वेदविद्या महापूज्या भक्ताद्वेषी भयङ्करी ॥५ ॥

स्तम्भरूपा स्तम्भिनी च दुष्टस्तम्भनकारिणी।भक्तप्रिया महाभोगा श्रीविद्या ललिताम्बिका ॥६ ॥

मैनापुत्री शिवानन्दा मातङ्गी भुवनेश्वरी। नारसिंही नरेन्द्रा च नृपाराध्या नरोत्तमा ॥७ ॥

नागिनी नागपुत्री च नगराजसुता उमा। पीताम्बा पीतपुष्पा च पीतवस्त्रप्रिया शुभा ॥८ ॥

पीतगन्धप्रिया रामा पीतरत्नार्चिता शिवा। अर्द्धचन्द्रधरी देवी गदामुद्गरधारिणी ॥९ ॥

सावित्री त्रिपदा शुद्धा सद्योराग विवर्धिनी। विष्णुरूपा जगन्मोहा ब्रह्मरूपा हरिप्रिया ॥१० ॥

रुद्ररूपा रुद्रशक्तिश्चिन्मयी भक्तवत्सला। लोकमाता शिवा सन्ध्या शिवपूजनतत्परा ॥११ ॥

धनाध्यक्षा धनेशी च नर्मदा धनदा धना। चण्डदर्पहरी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१२ ॥

राजराजेश्वरी देवी महिषासुरमर्दिनी। मधुकैटभहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी ॥१३ ॥

धूम्राक्षदैत्यहन्त्री च भण्डासुर विनाशिनी। रेणुपुत्री महामाया भ्रामरी भ्रमराम्बिका ॥१४ ॥

ज्वालामुखी भद्रकाली बगला शत्रुनाशिनी। इन्द्राणी इन्द्रपूज्या च गुहमाता गुणेश्वरी ॥१५ ॥

वज्रपाशधरा देवी जिह्वामुद्गरधारिणी। भक्तानन्दकरी देवी बगला परमेश्वरी ॥१६ ॥

अष्टोत्तरशतं नाम्नां बगलायास्तु यः पठेत्। रिपुबाधाविनिर्मुक्तः लक्ष्मीस्थैर्यमवाप्नुयात् ॥१७ ॥

भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रहपीड़ानिवारणम्। राजानो वशमायांति सर्वैश्वर्यं च विन्दति ॥१८ ॥

नानाविद्यां च लभते राज्यंप्राप्नोतिनिश्चितम् ।भुक्तिमुक्तिमवाप्नोति साक्षाच्छिवसमो भवेत् ॥१९ ॥

॥ इति रुद्रयामले सर्वसिद्धिप्रद बगलाऽष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ अथ बगला सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

सहस्रनाम से देव की प्रीति प्राप्त होती है तथा सेना के समान कार्य करता है।

सुरालयप्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम्। शैलाधिराजतनया संग्रहे तमुवाच ह ॥१ ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

परमेष्ठिन् परंधाम प्रधान परमेश्वर ।नाम्नां सहस्त्रं बगलामुख्याद्या ब्रूहि वल्लभ ॥२ ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

श्रृणु देवि! प्रवक्ष्यामि नामधेयसहस्रकम् ।परब्रह्मास्त्र विद्यायाश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥३ ॥

गुह्याद् गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैकवन्दितम् ।अतिगुप्ततरं विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥४ ॥

विशेषतः कलियुगे महासिद्ध्योघदायिनी ।गोपनीयंगोपनीयंगोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ५ ॥

अप्रकाश्यमिदंसत्यंस्वयोनिरिवसुव्रते ।रोधिनीविघ्नसंघानां मोहिनीसर्वयोषिताम् ॥६ ॥

स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनीपरवादिनाम् ।पुराचैकार्णवेघोरेकाले परमभैरवः ॥७ ॥

सुन्दरीसहितो देव केशवं क्लेशनाशनः ।उरगासनमासीनं योगनिद्रामुपागतम् ॥८ ॥

निद्राकालेचतेकालेमयाप्रोक्तःसनातनः ।महास्तम्भकरंदेवि!स्तोत्रंवा शतनामकम् ॥९

सहस्रनाम परमं वद देवस्य कस्यचित्।

14 ॥श्रीभगवानुवाच॥

श्रृणु शङ्कर देवेश परमातिरहस्यकम्॥१०॥

'अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः।गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात् सिद्धिहानिकृत् ॥11॥

विनियोगः ॐ अस्य श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः,अनुष्टुप् छन्दः,श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरी देवता, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ अथ ध्यानम्॥

पीताम्बरपरीधानां पीनोन्नतपयोधराम्।जटामुकुटशोभाढ्यां पीतभूमिसुखासनाम्॥12॥

शत्रोर्जिह्वां मुद्गरंचविभ्रतीं परमां कलाम्।सर्वागमपुराणेषुविख्यातां भुवनत्रये॥१३॥

सृष्टिस्थिति विनाशानामादिभूतां महेश्वरीम्।गोप्यां सर्वप्रयत्नेन श्रृणु तां कथयामि ते॥13॥

जगद्विध्वंसिनीं देवीमजरामरकारिणीम्।तां नमामि महामायां महदैश्वर्यदायिनीम्॥14॥

॥ स्तोत्रम्॥

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां ततोवदेत्।बगलामुखि सर्वेति दुष्टानां वाचमेव च॥16॥

मुखंपदंस्तम्भयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत्।विनाशयेति तारंच स्थिरमायां ततो वदेत्॥17॥

वह्निप्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्गफलप्रदः।ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाया सनातनी॥१८॥

ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्य बगला ब्रह्मचारिणी।नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया॥19॥

सन्धारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी।कमला विमला नीला रत्नकान्तिर्गुणाश्रिता ॥20॥

कामप्रिया कामरता कामकामस्वरूपिणी।मङ्गला विजया जाया सर्वमङ्गलकारिणी ॥21॥

कामिनीकामनीकाम्याकामुकाकामचारिणी।कामप्रियाकामरताकामा कामस्वरूपिणी ॥22॥

कामाख्याकामबीजस्थाकामपीठनिवासिनी।कामदाकामहाकालीकपालीच करालिका॥२३॥

कंसारि कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा।कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक् ॥२४॥

कीर्तिः कृत्तिका च काशिका मथुरा शिवा।कालाक्षी कालिका काली धवलाननसुन्दरी॥२५॥

खचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधा वरा । खड्गहस्ता खगरता खड्गिनी खर्परप्रिया॥ २६ ॥

गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविवर्धिनी । गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुरवासिनी ॥२७॥

गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपनी गरुड़ासना। गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी॥ २८॥

गौराङ्गी गोपिकामूर्तिर्गोपी गोष्ठनिवासिनी । गन्धा गजेन्द्रगा मान्या गदाधरप्रिया ग्रहा॥ २९ ॥

घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा । दैत्येन्द्रप्रवला घण्टावादिनी घोरनिस्वना ॥ ३० ॥

डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना । उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी ॥३१॥

चामुण्डा मुण्डिता चण्डी चण्डदर्पहरेति च।उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनी॥३२॥

चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी । चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचरनिवासिनी॥३३॥

क्षत्रप्रायश्शिरोवाहा छला छलतरा छली । क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रियक्षयकारिणी ॥ ३४ ॥

जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदा परा। जायिनी जयनी ज्योत्स्ना जटाधरप्रियाऽजिता॥३५॥

जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी। जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा॥३६॥

झङ्काराझञ्झरी झण्टा झङ्कारी झकशोभिनी।झखा झमेशा झङ्कारी योनिकल्याणदायिनी॥३७॥

झञ्झरा झमुरी झारा झरा झरतरा परा।झञ्झा झमेता झङ्कारी झणा कल्याणदायिनी॥ ३८ ॥

ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शङ्करप्रिया। टङ्कारी टिटिका टीका टङ्किनी चटवर्गगा॥३९॥

टापा टोपा टटपतिष्टमनी टमनप्रिया।ठकारधारिणी ठीका ठङ्करी ठिकरप्रिया॥ ४० ॥

ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया । डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया ॥४१ ॥

डाकिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा । ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्दप्रबोधिनी ॥ ४२ ॥

ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी । अनेकरूपिणी अम्बा अणिमा सिद्धिदायिनी ॥४३॥

अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता । तर तन्त्रवती तन्त्रतत्त्वरूपा तपस्विनी ॥४४ ॥

तरङ्गिणी तत्त्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा । तपोरूपा तत्त्वदात्री तपःप्रीति प्रघर्षिणी ॥४५॥

तन्त्रयन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी। तल्पदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितिः ॥४६॥

स्थाणुप्रिया स्थपरास्थिलता स्थानप्रदायिनी । दिगम्बरा दयारूपा दावाग्निदमनी दमा ॥४७॥

दुर्गा दुर्गपरा देवी दुष्टदैत्यविनाशिनी । दमनप्रमदा दैत्यदया दानपरायणा॥४८॥

दुर्गार्तिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता । दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्यदम्भविदारिणी ॥४९॥

दमना दशनसौन्दर्या दानवेन्द्रविनाशिनी । दयाधरा च दमनी दर्भपत्र विलासिनी ॥५०॥

धारणी धरणी धात्री धराधरधरप्रिया । धराधरसुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी ॥५१॥

धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी । धीराऽधीरा धीरतरा धीरसिद्धिप्रदायिनी ॥५२॥

धन्वन्तरिधरा धीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी । नारायणी नारसिंही नित्यानन्दा नरोत्तमा ॥५३॥

नक्ता नक्तवती नित्या नीलजीमूतसन्निभा । नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वतवासिनी ॥५४॥
सुनीलपुष्पखचिता नीलजम्बुसमप्रभा। नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्यसुखावहा॥५५॥
नर्मदा नन्दना नन्दा नन्दानन्दविवर्धिनी । यशोदानन्दतनया नन्दनोद्यानवासिनी ॥५६॥
नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी । नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः ॥५७ ॥
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बरविभूषिता । पीतमाल्याम्बरधरा पीताभा पिङ्गमूर्धजा ॥५८ ॥
पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता । परप्रभा पितृपतिःपरसैन्यविनाशिनी ॥५९ ॥
परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परापरा | पराविद्या परासिद्धिःपरास्थानप्रदायिनी ॥६० ॥
पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमालाविभूषिता । पुरातना पूर्वपरा परसिद्धिप्रदायिनी ॥ ६१ ॥
पीतानितम्बिनी पीता पीनोन्नतपयस्विनी । प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्रविलासिनी ॥६२ ॥
पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा । पद्मासना पद्मप्रिया पद्मरागस्वरूपिणी ॥६३ ॥
पावनी पालिका पात्री परदा वरदा शिवा । प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी ॥६४ ॥
जिनेश्वरप्रिया देवी पशुरक्तरतप्रिया । पशुमांसप्रियाऽपर्णा परामृतपरायणा ॥६५॥
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी।फुल्लारविन्दवदनी फुल्लोत्पलशरीरिणी॥६६॥
परानन्दप्रदा वीणा पशुपाशविनाशिनी । फुत्कारा फुत्करा फेणी फुल्लेन्दीवरलोचना ॥६७ ॥
फट्मन्त्रास्फटिकास्वाहास्फोटाचफट्स्वरूपिणी।स्फाटिकाघुटिकाघोरास्फाटिकाद्रिस्वरूपिणी॥६८॥
वराङ्गना वरधरा वाराही वासुकी वरा । विन्दुस्था विन्दुनी वाणी विन्दुचक्रनिवासिनी ॥६९ ॥
विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजनप्रिया । वेदविद्या विरूपाक्षी विश्वयुग् बहुरूपिणी ॥७०॥
ब्रह्मशक्तिर्विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्रा शिवप्रिया । वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी ॥७१॥
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी । भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा ॥७२॥
भवपारा भवाधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी । भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्यविनाशिनी ॥७३ ।।
भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका । भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा ॥७४॥
भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा । भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी ॥७५॥
भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा । भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी ॥७६ ॥
भगलिङ्गरता देवी भगलिङ्गनिवासिनी । भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा ॥७७॥
भगवेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी । भगलिङ्गासम्भोगा भगलिङ्गासवावहा ॥७८॥

भगलिङ्गसमाधुर्य्या भगलिङ्गनिवेशिता । भगलिङ्गसुपूजा भगलिङ्गसमन्विता ॥७९॥

भगलिङ्गविरक्ता च भगलिङ्गसमावृता । माधवी माधवी मान्या मधुरा मधुमानिनी ॥८० ॥

मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा । महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः ॥८१ ॥

मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना । मेनका मानिनी मान्या मणिरत्नविभूषिता ॥८२ ॥

मल्लिका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा । मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया ||८३ ॥

मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंहमहासनी । महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यञ्च मिथुनात्मजा ॥८४॥

महाकाल्या महाकाली मनोबुद्धिर्महोत्कटा । माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी ॥८५ ॥

मधुरा कीर्तिमत्ता च मत्तमातङ्गगामिनी । मदप्रिया मांसरता मत्तयुक् कामकारिणी ॥८६॥

मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा । मरीचिर्मा रतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी ॥८७ ॥

मोहा मोक्षा महालक्ष्मीर्महत्पदप्रदायिनी । यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा ॥८८ ॥

याम्या यमवती युद्धा यदोः कुलविवर्धिनी । रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया ॥८९ ॥

रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता । रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा ॥९० ॥

रतानन्दा रतवती रघूणां कुलवर्धिनी । रमणारिपरिभ्राज्या रैधा राधिकरत्नजा ॥९१ ॥

रावी रसस्वरूपा च रात्रिराजसुखावहा । ऋतुजदा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ॥९२॥

रक्तप्रिया रक्तवती रङ्गिणी रक्तदन्तिका।लक्ष्मीर्लज्जा च लतिका लीलालग्ना निताक्षिणी॥९३॥

लीला लीलावती लोभा हर्षाह्लादनपट्टिका । ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता ॥९४॥

ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी । वेदाङ्गना वेदरूपा वनिता विनता बसा ॥९५ ॥

बालाच युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा।विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च विन्दुयुग् विन्दुभूषणा॥९६॥

विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणी कला । वामाचारप्रिया वह्निर्वामाचारपरायणा ॥१७॥

वामाचाररता देवी वासुदेवप्रियोत्तमा । बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च वुद्धा चरणमालिनी ॥९८ ॥

बन्धमोचनकर्त्री च वारुणा वरुणालया। शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धाङ्गी शुक्लवर्णिका॥९९ ॥

शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा।शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशुप्रिया

शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुकरूपा च शुक्रिका।षण्मुखीच षडङ्गाच षट्चक्रविनिवासिनी॥१०१॥

षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका । षडङ्गयुवती देवी षडङ्गप्रकृतिर्वशी ॥१०२ ॥

षडानना षडस्त्रा च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया।षडङ्गवादा षोडशी च षोढा न्यासस्वरूपिणी॥१०३ ॥

षड्वक्रभेदनकरी षड्वक्रस्थस्वरूपिणी । षोडशस्वररूपा च षण्मुखी षड्गान्विता ॥१०४॥
सनकादिस्वरूपा च शिवधर्मपरायणा । सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा ॥१०५ ॥
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धासिद्धस्वरूपिणी । हरा हरप्रिया हारा हरिणी हारयुक्तथा ॥१०६ ॥
हरिरूपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया । हेतुप्रिया हेतुरता हिताहितस्वरूपिणी ॥१०७॥
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टाविभूषणा । क्षयङ्करी क्षितीशा च क्षीणमध्यसुशोभना ॥१०८॥
अजाऽनन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी।स्वान्तर्गता च साधूनामन्तरानन्तरूपिणी॥१०९॥
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी।स्वविद्या विद्यका विद्याविद्या चारविन्दलोचना॥११०
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती।अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽद्या अणिमासिद्धिदायिनी
अष्टसिद्धिप्रदा देवी रूपलक्षणसंयुता । अरविन्दमुखी देवी भोगसौख्यप्रदायिनी ॥११२॥
आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धिप्रदायिनी । सीत्काररूपिणी देवी सर्वासनविभूषिता ॥११३॥
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी । इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रवद्योक्षिणी तथा ॥११४॥
ईला कामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा । जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्मकृत् ॥११५॥
उमा कात्यायनी ऊर्द्धा मीना चोत्तरवासिनी। उमापतिप्रिया देवी शिवा चोङ्काररूपिणी॥११६॥
उरगेन्द्रशिरोरत्ना उरगोरगवल्लभा। उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा॥११७॥
ऊर्द्धदन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी । उमासिद्धिप्रदा या च उरगासनसंस्थिता ॥११८ ॥
ऋषिपुत्रीऋषिच्छन्दाऋद्धिसिद्धि प्रदायिनी।उत्सवोत्सवसीमान्ताकामिकाचगुणान्विता॥११९॥
एला एकारविद्या च एणी विद्याधरा तथा । ॐकार वलयोपेता ॐकारपरमा कला ॥१२० ॥
ॐवद वद वाणी च ॐकाराक्षरमण्डिता । ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ॐलोकपरवासिनी ॥१२१॥
ॐकारमध्यबीजा च ॐनमो रूपधारिणी । परब्रह्मस्वरूपा च अंशुकांशुकवल्लभा ॥१२२ ॥
ॐकारा अः फड्मंत्रा च अक्षाक्षरविभूषिता । अमन्त्रा मंत्ररूपा च पदशोभासमन्विता॥ १२३॥
प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः । ह्रींकाररूपा ह्रींकारी वाग्वीजाक्षरभूषणा ॥१२४॥
हल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासनसंस्थिता।बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रींबीजा भुवनेश्वरी॥१२५॥
क्लीं कामराजक्लिन्ना च चतुर्वर्गफलप्रदा।क्लींक्लींक्लीं रूपिका देवी क्रीं क्रीं क्रीं नामधारिणी
कमला शक्तिबीजाच पाशाङ्कुशविभूषिता।श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धाद्धाश्रवती तथा॥१२७॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमा कला।ह्रीं क्लीं श्रीङ्कारस्वरूपा सर्वकर्मफलप्रदा॥

सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा । सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी ॥१२९॥
सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोगप्रदायिनी। गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी॥१३० ॥
सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी । सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा ॥१३१ ॥
सर्वप्रियङ्करी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी । सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥१३२ ॥
मनोवाञ्छितदात्री च मनोबुद्धि समन्विता । अकारादिक्षकारान्ता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥१३३॥
पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषड्करी । स्ववर्गा देववर्गा च तवर्गा च समन्विता ॥१३४॥
अन्तस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा । तत्त्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी ॥१३५ ॥
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनी च । वशङ्करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च ॥१३६
मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा। सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ॥१३७
रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दनभूषिता । स्वल्पसिद्धिः सुकल्पा च दिव्याचरण शुक्रभा ॥१३८
संक्रांतिः सर्वविद्या च सस्यवासरभूषिता । प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका ॥१३९॥
पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा । अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ॥१४० ॥
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा । अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा ॥१४१ ।।
खङ्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा भुशुण्डी चापिनी वाणा सर्वायुधविभीषणा ॥१४२
कुलेश्वरी कुलवती कुलाचारपरायणा । कुलकर्म्मसुरक्ता कुलाचारप्रवर्धिनी ॥१४३ ॥
कीर्तिः श्रीःचरमा रामा धर्म्मायै सततं नमः। क्षमा धृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी॥१४४
उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्या विवर्धिनी । साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च ॥१४५
कालीकसलीकाल्याच कालदैत्यविनाशिनी।कौलिनी कालिकी चैव कचटतपवर्णिका ॥१४६॥
जयिनीजययुक्ता च जयदाजृम्भिणी तथा।स्राविणी द्राविणीदेवी भरुण्डा विन्ध्यवासिनी॥१४७
ज्योतिर्भूता च जयदाज्वालामालासमाकुला।भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्ना भिन्नरूपिणी॥१४८
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला । काश्यपी विनता ख्याता दितिजा दितिरेव च ॥१४९
कीर्तिःकामप्रियादेवी कीर्त्या कीर्तिविवर्धिनी। सद्योमांससमालब्धा सद्यश्छिन्नासिशङ्करा॥१५०
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक् तथैव च।अग्निनैर्ऋति वायव्या ईशान्य दिक् तथा स्मृता
ऊर्ध्वाङ्गाऽधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका।चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रामित्मकाक्षरा॥१५२
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा । चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥१५३ ॥

धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवासिनी। सुरा मुदा मुदवती मोदिनी मेनकात्मजा ॥१५४॥
ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणाकालिका शिवा।नील्यासरस्वतीसात्वंबगलाछिन्नमस्तका॥१५५
सर्वेश्वरी सिद्धिविद्या परा परमदेवता । हिङ्गुला हिङ्गुलाङ्गी च हिङ्गुलाधरवासिनी ॥१५६॥
हिङ्गुलोत्तमवर्णाभा हिङ्गुलाभरणा च सा । जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ॥१५७॥
जनार्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा । जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी ॥१५८ ॥
ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया । जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा ॥१५९ ॥
विद्याधरा च विम्बोष्ठी कैलासाचलवासिनी । विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा ॥१६० ॥
मन्त्ररूपा परा देवी तथैव गुरुरूपिणी । गया गङ्गा गोमती च प्रभासा पुष्करापि च ॥१६१॥
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी । बहुबहुसुन्दरी च कंसासुरविनासिनी ॥१६२।।
शूलिनी शूलहस्ताच वज्रा वज्रहरापि च।दुर्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया॥१६३॥
सर्वलोकप्रणेत्री च सर्वरोगहरापि च । मङ्गला शोभना शुद्धा निष्कला परमाकला ॥१६४॥
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता हसितानना । सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥१६५
सर्वदेवमयी देवी सर्वांगमभयापहा। ब्रह्मेशविष्णुनमिता सर्वकल्याणकारिणी॥१६६॥
योगिनी योगमाता च योगीन्द्रहृदयस्थिता। योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्ददायिनी॥१६७॥
इन्द्रादिनमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया । विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वेषिभयङ्करी ॥१६८ ॥
भववेषा कामिनी च भरुण्डा भयकारिणी । बलभद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी ॥१६९ ॥
पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी । सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी ॥१७० ॥
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुद्गरधारिणी । सावित्री च महादेवी परप्रियनिनायिका ॥१७१ ॥
यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा । चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्यवासिनी ॥१७२ ॥
चन्दनेन्द्रसमायुक्ता चण्डदैत्यविनाशिनी । सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ॥१७३॥
महाभोगवती देवी महामोक्षप्रदायिनी । विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी ॥१७४ ॥
धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी। कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी॥१७५॥
सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च । परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी ॥१७६ ॥
इतिते कथितं देवि पीतानामसहस्रकम्।पठेद् वा पाठयेद् वापि सर्वसिद्धिर्भवेत् प्रिये॥१७७॥
इतिमे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं परम्।प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्याकाले च पार्वती

एकचित्तः पठेदेतत् सर्वसिद्धिर्भविष्यति । एकवारं पठेद् यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत् ॥१७९॥
द्विवारं च पठेद् यस्तु विघ्नेश्वर समोभवेत् । त्रिवारं पठनाद् देवि सर्वं सिध्यति सर्वथा ॥१८०
स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुबते । मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम ॥ १८१
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणान्विताम् । महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रुहानिः प्रजायते ॥१८२
क्षोणीपतिर्वशस्तस्य स्मरणे सदृशो भवेत्।यः पठेत् सर्वदा भक्तया श्रेयस्तु भवति प्रिये॥ १८३
गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविकाव्यपरो वरः । गोपनीयं प्रयत्नेन जननीजारवत् सदा ॥१८४॥
हेतुयुक्तो भवेन्नित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत्। यः इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशौ भवेत् ॥१८५॥
जीवन् धर्मार्थभोगी स्यान् मृतो मोक्षपतिर्भवेत्।सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं न संशयः
स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदते । सुचित्ताश्च सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्तनात् ॥१८७॥
पीताम्बरपरीधानां पीतगन्धानुलेपनाम् । परमोदयकीर्तिः स्यात् स्मरतः सुरसुन्दरि ॥१८८ ॥
॥इतिश्रीउत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसहस्त्रे।विष्णुशङ्करसंवादे श्रीपीताम्बरीसहस्त्रनामस्तोत्रम्॥१८९॥

Go to Index